उड़ान

एकीकृत आजीविका के अन्तर्गत व्यवसायिक प्रशिक्षण की दिशा में हुई पहल का संकलन....

IFAD
Enabling poor rural people to overcome poverty

उत्तराखण्ड शासन

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना (ILSP)
आईफैड एवं ग्राम्य विकास विभाग, उत्तराखंड सरकार
की एक संयुक्त पहल

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के अन्तर्गत व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की दिशा में हुई पहल का संकलन।

यह दस्तावेज कापीराइट एक्ट के अन्तर्गत सर्वाधिकार सुरक्षित है, लेकिन इस सामग्री का प्रयोग शिक्षण कार्यक्रमों, प्रशिक्षण, जागरूकता अभियानों हेतु मूल स्त्रोत का उल्लेख करते हुए प्रयोग किया जा सकता है। दस्तावेज की सामग्री का किसी भी तरह के प्रयोग के बारे में परियोजना को जरूर सूचित किया जाये ताकि इसके प्रभाव का आंकलन करने में हमें मदद मिले। किसी भी अन्य परिस्थिति में इस सामग्री के प्रयोग के लिए अनुमति लेना अनिवार्य है।
ईमेल- info@ugvs.org, km@ugvs.org

प्रथम संस्करण- 1500 प्रतियां

समग्री संकलन: एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना, उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास समिति द्वारा जुलाई 2015 में संकलित एवं प्रकाशित।

प्रकाशक

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना, उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास समिति

216, फेज-2, पंडितवाडी, देहरादून- 248001

टैलीफैक्स : 0135-277480

ईमेल : info@ugvs.org   वेबसाईट: www.ugvs.org, www.ilsp.in

एन. रवि शंकर
N. Ravi Shanker

मुख्य सचिव
Chief Secretary

उत्तराखण्ड सचिवालय
Uttarakhand Secretariat
4, सुभाष मार्ग, देहरादून
4, Subhash Marg, Dehradun
Phone : (Off.) 0135-2712100
0135-2712200
(Fax) 0135-2712500

:: संदेश ::

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना उत्तराखंड राज्य के पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका संवर्धन व निर्धनता को कम करने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास है। परियोजना के माध्यम से इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों में एक अभिनव पहल राज्य के ग्रामीण अंचलों के 15000 युवाओं को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य भी शामिल है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि परियोजना द्वारा तय लक्ष्य में से 60 प्रतिशत महिलाओं को प्रशिक्षित करते हुए 80 प्रतिशत जॉब प्लेसमेंट का लक्ष्य रखा गया है।

'उड़ान' नामक इस दस्तावेज में परियोजना द्वारा कौशल विकास और कौशल वृद्धि की दिशा में जनवरी 2014 से मार्च 2015 तक किये गये जमीनी प्रयासों को संकलित करने की कोशिश की गई है। मुझे ज्ञात हुआ है कि परियोजना द्वारा इस अवधि में व्यवसायिक प्रशिक्षणों की दिशा में किया गया यह पहला पाईलेट व्यवसायिक प्रशिक्षण है। इस दौरान राज्य के 5 जनपदों के 17 ब्लॉकों के कुल 662 युवाओं को अलग अलग 11 ट्रेडों में प्रशिक्षित किया गया है, जिनमें से 256 युवा अलग अलग संस्थानों में रोजगार में लगे हैं। परियोजना द्वारा प्रकाशित 'उड़ान' नामक यह दस्तावेज उन्हीं कुछ खास युवाओं की छोटी छोटी खासियतों को समाज के सामने रखने का एक छोटा सा प्रयास है।

15000 युवाओं को प्रशिक्षित करने का यह लक्ष्य बहुत बड़ा है, इसलिए मेरी अपेक्षा है कि परियोजना को इस दस्तावेजीकरण के दौरान इस महत्वाकांक्षी प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु तय अपनी रणनीतियों को नजदीक से देखने का जो मौका मिला है, परियोजना उन अनुभवों के विश्लेषण के बाद राज्य व बाजार की जरूरतों के अनुसार अपनी रणनीतियों में बदलाव करके ही इस दिशा में भावी रूपरेखा तय करेगी।

उत्तराखंड राज्य के विकास से जुड़ी इस महत्वाकांक्षी कौशल विकास एवं कौशल वृद्धि योजना की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएं!

दिनांक: 21 जुलाई, 2015

N Ravi Shanker.

(एन. रवि शंकर)
मुख्य सचिव

विषय वस्तु

1. प्राक्कथन 3

2. उत्तराखंड में व्यवसायिक प्रशिक्षणों की पृष्ठभूमि 6

3. व्यावसायिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत प्रशिक्षित युवाओं के जीवनवृत्त

- उड़ने को बेताब पूजा — पूजा नेगी 10
- सुंदर की सुंदर बातें — सुंदर सिंह रावत 16
- थैंक्यू यू.जी.वी.एस. — फरजाना 23
- ऐसी भी क्या लुकाछिपी — चन्द्रा मनराल 28
- और भी हैं राहें! — जगदीश कड़ाकोटी 33
- इच्छाशक्ति ने खोली भविष्य की राहें — ललिता नेगी 38
- मैं बहुत खुश हूं — ममता राजौरिया 41
- एक भरोसेमंद प्रबन्धक — नीतू नेगी 45
- हालात ने समझदार बनाया — प्रियंका मेहता 50
- हां! मैंने मौके का फायदा उठाया — पुष्पा मनराल 56
- केदारनाथ आपदा से उभरा रोहित — रोहित कुमार 60
- तारा हूं मैं और तारा बनूंगी — तारा मनराल 63
- मुझे बहुत दूर जाना है — प्रदीप कुमार 69
- भरोसेमंद कम्प्यूटर लीडर — अरविंद कुमार 73
- मैं और अच्छा करूंगा — मनोज कुमार 77
- नौकरी मेरी माँ को श्रृद्धांजली — ऊषा रावत 81
- परिवार के निर्णयों में मेरी भूमिका बढ़ी — भावना नैलवाल 85
- आखिर मुझे ठहराव मिला — हिमांशु मसंत 90
- मैंने खूबसूरत दुनिया देखी — कविता नेगी 96
- मैं अपने पांवों पर खड़ी हूं — किरन बिष्ट 101
- मेरी तो दुनिया ही बदल गई — ममता मनराल 105
- हमारी एक ही कहानी लिखो — सरस्वती और गायत्री 110
- मेरी बेटी समझदार हो गई है — शीला बिष्ट 114
- मैं प्रबंधन सीखूंगा — सुंदर सिंह मनराल 118
- मेरे हिस्से की खुशी — तुलसी टम्टा 120
- बबली की कहानी उसी की जुबानी — बबली रावत 122
- मेरा पहला कदम — सुधीर बिष्ट 124

4. व्यवसायिक प्रशिक्षण में संलग्न कौशल प्रदाता एजेंसियां 126

5. व्यवसायिक प्रशिक्षण में ILSP की उपलब्धियां एक नजर में 129

प्राक्कथन

UGVS द्वारा संचालित ILSP (एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना) अन्तर्राष्ट्रीय कृषि विकास निधि और उत्तराखंड सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजना है। इसका क्रियान्वयन उत्तराखंड के 11 जनपदों में किया जा रहा है। ILSP ने कौशल विकास की राष्ट्रीय जरूरत और चुनौती में भागीदारी निभाते हुए अपने 'खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका वृद्धि' घटक के अन्तर्गत सन् 2019 तक राज्य के 15000 युवाओं को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य तय किया है। परियोजना द्वारा इनमें से 60 प्रतिशत महिलाओं को प्रशिक्षित करते हुए कुल प्रशिक्षित युवाओं में से 80 प्रतिशत हेतु जॉब प्लेसमेंट का लक्ष्य तय किया है। राज्य के किसी भी पर्वतीय समुदाय के छात्र इस व्यवसायिक प्रशिक्षण का लाभ उठा सकते हैं। ILSP का दृष्टिकोण है कि कौशल विकास और कौशल वृद्धि एक समयबद्ध प्रोजेक्ट ना होकर एक राष्ट्रीय मिशन है जिसके सुचारू क्रियान्वयन में ही इसकी सफलता निहित है।

इसी ध्येय वाक्य से प्रेरित होकर ILSP ने जनवरी 2014 से मार्च 2015 तक SUDA-State Urban Development Authority के अर्न्तगत सूचीबद्ध 16 एजेंसियों में से 5 कौशलप्रदाता प्रशिक्षण एजेंसियों व 28 ट्रेडों में से 11 ट्रेड चिन्हित कर 5 जिलों टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, अल्मोड़ा और उत्तरकाशी के 17 ब्लॉकों के 760 युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा। यह भी तय किया गया कि यह प्रशिक्षण भावी लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एक पायलट स्टडी के रूप में मार्गदर्शी भूमिका निभाएंगे। प्रशिक्षण के लिए चयनित ट्रेडों में हास्पिटेलिटी या आतिथ्य प्रशिक्षण, कम्प्यूटर आधारित लेखा प्रशिक्षण और ई.आर.पी.सॉल्यूशन, डाटा एन्ट्री आपरेटर, कम्प्यूटर हार्डवेयर मैकेनिक, ह्रास्पिटल एवं नर्सिंग होम अस्टिटेंट, मोबाइल रिपेयरिंग, सौंदर्य एवं स्वास्थ्य प्रबंधन और रिटेलिंग आदि शामिल हैं। इसके साथ ही देहरादून की ऐसेट् इन्फोटेक लिमिटेड देहरादून को स्वतंत्र रूप से चयनित कर उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी देहरादून के अन्तर्गत चलने वाले 3 पाठ्यक्रमों डिप्लोमा इन इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी, कार्यालय प्रबन्धन और कम्पयूटर एप्लीकेशन में 17 ब्लॉकों के 125 युवाओं को सार्टिफिकेट कोर्स कराने की जिम्मेदारी दी गई।

कौशल वृद्धि कार्यक्रम हेतु चयनित इन 6 एजेंसियों ग्रास एजूकेशन एंड ट्रेनिंग सर्विस प्राइवेट लिमिटेड, आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड, आई.एल.एफ.एस.इंस्टीट्यूट ऑफ स्किलस, एसेट् इन्फोटेक लिमिटेड, दिव्य प्रेम सेवा मिशन, जी.एंड जी. एजूकेशनल सोसाइटी के माध्यम से इन प्रशिक्षणों हेतु कुल 692 युवाओं का नामांकन हुआ जिसमें से 688 युवाओं ने सफलतापूर्वक अपने कोर्स पूरे किये हैं। इन युवाओं में 244 पुरूष और 448 महिलाएं हैं। कुल प्रशिक्षणार्थियों में से 504 सामान्य श्रेणी, अन्य पिछड़ी जाति के 88, अनुसूचित जाति के 95, अनुसूचित जनजाति के 5 प्रशिणार्थी हैं। इनमें से कुल 299 युवा गरीबी रेखा के नीचे और 393 गरीबी रेखा के ऊपर निवास करते हैं। इन युवाओं में 445 को जॉब प्रस्ताव मिला और उनमें से 256 युवाओं (जिनमें से 85 पुरूष

और 171 महिलाएं हैं) ने यह प्रस्ताव स्वीकार किए। यह युवा खाद्य एवं पेय उद्योग, हॉस्पिटलों, दवा कम्पनियों, मोबाइल रिपेयरिंग इकाईयों, प्रशिक्षण संस्थानों एवं बी.पी.ओ. में काम कर रहे हैं। यह प्रशिक्षित युवा ग्राहक सेवा अधिकारी, कम्प्यूटर ऑपरेटर, कम्प्यूटर शिक्षक, कार्यालय सहायक, संचालन विभाग, वरिष्ठ कार्यकारी, अस्पताल सहायक और फूड एंड बीवरेज संस्थानों में शैफ व ब्रू मास्टर के पदों पर कार्यरत हैं। कुछ युवा प्रशिक्षण के बाद अपनी पढ़ाई कर रहे हैं और कुछ ने अपना काम करना शुरू किया है। कुछ युवा सरकारी संस्थानों में संविदा पर और कुछ फौज में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह युवा देहरादून, हरिद्वार, टिहरी, बंगलुरू, पंचकुला चंडीगढ़, उत्तरकाशी, दिल्ली व ऋषिकेश में काम कर रहे हैं।

परियोजना के पहले चरण 'ULIPH' में आईफैड सलाहकार एडवर्ड मैलोरी की सलाह पर व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत जनवरी 2012 से हुई। इस चरण में मैसर्स ऐसेट्स इन्फोटेक लिमिटेड देहरादून द्वारा जनवरी 2012 में परियोजना क्षेत्र टिहरी, चमोली व उत्तरकाशी के 213 युवाओं को उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय से सार्टिफिकेट इन कम्पयूटर एप्लीकेशन कोर्स में 6 माह का कोर्स करवाया गया। इनमें से 86 अभ्यर्थी प्रशिक्षण के दौरान ULIPH परियोजना से जुड़े थे। इसके साथ ही Be Able-Basix Academy for building for Lifelong Employability Ltd. द्वारा जनवरी 2012 से सितम्बर 2012 के बीच रिटेल सेल्स एंड फूड एंड बीवरेज सर्विस में जनपद टिहरी के 142 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया, जिसमें से 132 युवाओं ने सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण पूरा किया और 55 को कार्यक्रम द्वारा जॉब प्लेसमेंट करवाया गया था।

वर्ष 2014–15 में हुए इस पायलट स्टडी का उद्देश्य इस सैक्टर के ट्रेड्, इस प्रक्रिया में संलग्न एजेंसियों व व्यवसायिक प्रशिक्षण के अन्य व्यवहारिक बिन्दुओं को समझते हुए परियोजना हेतु भविष्य की रणनीतियां तय करना था। इस अवधि में हुए प्रशिक्षणों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर परियोजना ने 'उड़ान' नामक दस्तावेज संकलित कर प्रकाशित करने की योजना बनाई। इस दस्तावेज में प्रशिक्षण सम्बधी सभी जानकारियों का सार, प्रक्रिया, आवश्यक संख्यात्मक व गुणात्मक पहलू और कुछ युवाओं से बातचीत कर प्रशिक्षण से उनके जीवन में आये बदलाव के खामोश पलों को संकलित करने की कोशिश की गई है।

इस दस्तावेज को तैयार करते समय हमारी कोशिश रही है कि हम व्यवसायिक प्रशिक्षण में शामिल हर एजेंसी व ट्रेड में प्रशिक्षित युवाओं से व्यक्तिगत बातचीत के आधार पर उनके जीवन की मंथर यात्रा को समेट सकें। इन युवाओं की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि के परिदृश्य में उनकी खामोश यात्रा को लिखने की कोशिश की गई है जिससे यह जाना जा सके कि क्या वास्तव में इन प्रशिक्षणों से उनके जीवन में कोई खास बदलाव आया है? और यदि वास्तव में कोई बदलाव आया है तो स्वयं उस युवा, उसके परिवार और समाज का उस बदलाव के प्रति क्या नजरिया है?

इसके साथ ही दस्तावेजीकरण के दौरान हमारी यह भी कोशिश रही है कि हम कुल लक्षित 760 युवाओं के माध्यम से प्राप्त अनुभवों के आधार पर ना केवल सिर्फ एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के दूरगामी लक्ष्य– 15000 युवाओं के प्रशिक्षण हेतु एक ठोस रणनीति तैयार करें। इसके साथ ही उत्तराखंड राज्य में व्यवसायिक प्रशिक्षणों में संलग्न समस्त सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के लिए भी एक फुल –प्रूफ योजना बना सकें जिससे यह महत्वाकांक्षी योजना अपने धरातली उद्देश्यों की प्राप्ति करते हुए राज्य व देश के विकास हेतु प्रशिक्षित व कुशल कामगारों की फौज तैयार करने में सफल हो सके। इस दस्तावेजीकरण का उद्देश्य यह देखना भी है कि इन प्रशिक्षित युवाओं की फौज को उनकी काम की जगहों पर सम्मान व गरिमा के साथ सही वेतन मिल सके और काम में दक्षता के साथ साथ किस तरह के अभिनव प्रयोग प्रशिक्षण अवधि में किए जा सकते हैं जिससे इनके व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सके।

इस दस्तावेजीकरण के द्वारा हमारा उद्देश्य यह जानना भी है कि हम एक बार फिर से कौशल विकास की अपनी इस यात्रा के हर पहलु का गहराई से विश्लेषण कर अपनी कमियों एवं सफलताओं को भली भांति जानें और भविष्य हेतु सही रणनीतियां तय कर उनका ईमानदारी से क्रियान्वयन कर सकें। इस पायलट स्टडी के अनुभवों के विभिन्न पहुलुओं को अलग से एक रिपोर्ट में संलग्न किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना अपनी समर्पित टीम एवं सहभागी एजेन्सियों के समन्वित प्रयासों से अपने इस लक्ष्य को पूरा करने में सफल होगी।

विजय कुमार
मुख्य परियोजना निदेशक ILSP-UGS

उत्तराखंड में व्यवसायिक प्रशिक्षणों की पृष्ठभूमि

भारत में तकनीकी शिक्षा का इतिहास 150 साल पुराना है। यह एक सुखद संयोग है कि देश में तकनीकी शिक्षा की शुरूआत उत्तराखंड में 1847 में रूड़की में इन्जीनियरिंग कालेज की स्थापना के साथ हुई थी। रूड़की इंजीनियरिंग कालेज आज देश के प्रमुख अग्रणी आई.आई.टी. संस्थानों में से एक है। आजादी के बाद देश में तकनीकी शिक्षा का व्यापक विस्तार हुआ। इंजीनियरिंग कालेजों के साथ पौलीटैक्निक, आई.टी.आई. का व्यापक विस्तार देश के कोने कोने में हुआ पर समय की मांग के साथ यह औद्योगिक जगत की कुशल श्रमिकों व कारीगरों हेतु गुणवत्तापरक ट्रेड की मांग को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। वर्तमान में उपलब्ध संस्थान या तो सरकारी हैं या सरकारी सहायता प्राप्त या फिर निजी संस्थान हैं। आज देश में आर्थिक जगत की मांग के अनुसार तकनीकी शिक्षा का विकास और विस्तार कुछ इस तरह से होना चाहिए कि उच्चतम गुणवत्ता के मानव संसाधन बड़ी संख्या में तैयार हों जो देश के विकास में अहम भूमिका निभा सकें।

भारत के पास आज अपनी जनसंख्या के 65 प्रतिशत युवाओं के रूप में सबसे बड़ा मानव संसाधन मौजूद है। यदि हम इस युवा शक्ति की शिक्षा और रोजगारपरक क्षमता विकास पर सुनियोजित ढ़ंग से निवेश करें तो इन युवाओं के अंदर वह ताकत छिपी है जो भारत को विश्व के मानचित्र पर एक बड़ी शक्ति के रूप में उभारने में सक्षम है। देश के विकास हेतु जरूरी क्षेत्रों की पहचान कर इस युवा शक्ति को नवीनतम जानकारियों से लैस करके क्षेत्रीय जरूरत के ट्रेडों में तकनीकी रूप से प्रशिक्षित करते हुए विश्व की सबसे बड़ी प्रशिक्षित फौज के रूप में तैयार करना आज केन्द्र और राज्य सरकारों की सबसे बड़ी नीतिगत पहल साबित होगी। आर्थिक विकास के इस दौर में कौशल विकास एवं कौशल वृद्धि प्रशिक्षण एक ओर युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएंगे तो दूसरी ओर युवा शक्ति को विकास की मुख्य धारा में भागीदार बनाते हुए देश के विकास में साझेदारी निभाने का मौका देंगे।

उत्तराखंड एक विकासशील प्रदेश है। उत्तराखंड राज्य में खेती बाड़ी बारिश पर निर्भर होने और छोटी जोतों की कृषि भूमि के कारण खेती बहुत उत्पादक नहीं रह गई है। ऐसे हालतों में पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन हेतु आजीविका की तलाश में युवाओं का फौज या अन्य रोजगारों में जाना एक सहज प्रक्रिया है। यहां एक व्यवहारिक समस्या है कि हमारे गांवों के ये युवा उद्योगों की मांग के अनुसार कुशल एवं प्रशिक्षित नहीं होते हैं जिस कारण उन्हें या तो काम नहीं मिलता है या फिर अपने काम का सही दाम नहीं मिलता है। उत्तराखंड एक नवोदित राज्य है जिस कारण इसके विकास के लिए सभी क्षेत्रों में प्रशिक्षित कुशल कार्मिकों की भारी मांग है। प्रदेश का युवा सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक कई तरह की समस्याओं के कारण अपने कौशल को आगे बढ़ाने में कठिनाई महसूस कर रहा है जो उसके स्थाई रोजगार प्राप्त करने या उद्यम स्थापित करने की दिशा में

एक बड़ी बाधा है। आज देश में काम की नहीं बल्कि कौशल की कमी है, युवाओं के पास योग्यता तो है पर वह दक्षता नहीं है जिससे वह अच्छा रोजगार पा सकें। गरीबी और बेरोजगारी से निपटने हेतु देश में रोजगार पैदा करने के लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में यह कौशल विकास एवं कौशल वृद्धि प्रशिक्षण एक मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

व्यवसायिक प्रशिक्षण की दिशा में ILSP की पहल

जनवरी 2014 में राज्य के ऐसे ही युवाओं की इन्हीं उम्मीदों को पूरा करने के लिए एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना द्वारा व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत की गई। परियोजना द्वारा व्यवसायिक प्रशिक्षण का यह कार्यक्रम एक स्पष्ट सोच के तहत निम्न उद्देश्यों को मध्यनजर रखकर शुरू किया गया–

- आर्थिक एवं सामाजिक रूप से कमजोर उन युवाओं की उम्मीदों को पूरा करने के लिए जो क्षमता विकास के इच्छुक हैं।
- गांव के युवाओं हेतु आय के अन्य स्त्रोत तैयार करने के दूरगामी उद्देश्य से।
- इन कौशल वृद्धि कार्यक्रमों के माध्यम से क्षेत्रीय युवाओं की क्षमताओं को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था में काम के उभरते क्षेत्रों में कुशल व दक्ष कार्मिकों की मांग को पूरा करने के दूरगामी उद्देश्य से।
- व्यवसायिक प्रशिक्षण के बाद अलग अलग ट्रेड की प्लेसमेंट योजनाओं का विभिन्न क्षेत्रों से तालमेल कर युवाओं को रोजगार दिलाने के उद्देश्य से।
- गांवों के युवाओं को रोजगार के साधन उपलब्ध कराते हुए काम की जगहों पर सही मानदेय एवं अन्य लाभ दिलाने के उद्देश्य से।
- प्रशिक्षित युवा अपनी काम की जगहों पर लम्बे समय तक टिक सकें।
- काम की जगहों पर सुरक्षा का माहौल उपलब्ध कराया जा सके।
- क्षेत्रीय विकास एवं बाजार की मांग के अनुरूप कौशल विकास के जरूरी ट्रेडों की पहचान एवं तद्नुसार प्रशिक्षण योजना बनाने हेतु।
- अन्य आवश्यकतानुसार

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना द्वारा अपने पायलट व्यवसायिक प्रशिक्षण के आयोजन के दौरान उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा इस दिशा में किए फरवरी 2010 के मानव संसाधन सर्वे के अनुसार तय मानकों को ध्यान में रखा गया है, जिसमें कहा गया कि आई.टी.आई. में चलने वाले प्रचलित कोर्स कम गुणवत्ता, पुराने ढ़ंग और लम्बी अवधि के होते हैं। इन संस्थानों का विश्वविद्यालयों एवं उद्योगों से कमजोर सम्बध होने के कारण यह बहुत उपयोगी साबित नहीं हो पा रहे हैं। सर्वे में स्पष्ट कहा गया है कि इन संस्थानों में आज बाजार की मांग के अनुसार पाठ्यक्रम

उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। इन संस्थानों में ढांचागत सुविधाओं का अभाव है। इस सर्वे में आई.टी. आई. में दूरदर्शिता का अभाव होने के कारण उद्योगों में मांग व सप्लाई के बीच गहरी खाई की बात भी स्वीकारी गई है। इस सर्वे में उत्तराखंड की विशेष परिस्थितियों में इन पाठ्यक्रमों में आयु सीमा में छूट की बात पर विचार करने की बात भी कही गई है। सर्वे कहता है कि इन प्रचलित संस्थानों में समाज के वंचित एवं कमजोर वर्गों और खास जरूरत के लोगों जैसे विकलांगों, देह व्यापार व यौन हिंसा के पीड़ितों, हाथ से मैला उठाने वाले सफाईकर्मियों, ट्रांसजेंडर, बंधुआ मजदूरों और बाल मजदूरों के कौशल विकास की बात नहीं होती है, इसलिए आजीविका कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के फरवरी 2010 के मानव संसाधन सर्वे के मानकों के अनुसार ऐसे कोर्स शुरू करके उन ग्रामीण युवाओं की मदद करना है जो औपचारिक शिक्षा के अभाव और गरीबी के कारण संसाधनों के अभाव में दोनों ओर से मरते हैं। अपने व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आजीविका कार्यक्रम ने इस प्रचलित खाली जगह (Existing Gap) को भरने की कोशिश करते हुए गांव के युवाओं में अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान एक खास तरह का ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण व क्षमता पैदा करके उनको पूर्णकालिक रोजगार दिलाने का प्रयास किया है। आजीविका कार्यक्रम ने अपने कौशल वृद्धि प्रशिक्षणों के द्वारा इन युवाओं को न्यूनतम मजदूरी देना भी सुनिश्चित करवाया है। कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण के एक साल बाद तक प्लेसमेंट रिकार्ड को भी लगातार देखा जा रहा है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रशिक्षणार्थी अपने रोजगार की जगहों पर निरंतरता के साथ काम कर रहे हैं।

ILSP व्यवसायिक प्रशिक्षण पायलट कार्यक्रम के मुख्य मानक बिंदु

- परियोजना के सभी 5 जनपदों एवं 17 ब्लॉकों से युवाओं को प्रशिक्षण हेतु चयनित किया गया।
- प्रशिक्षण हेतु युवाओं का चयन एंट्री लेवल टेस्ट के आधार पर किया गया।
- प्रशिक्षण हेतु 18 साल के युवाओं का ही चयन किया गया।
- प्रशिक्षण पर होने वाले व्यय का 100 % परियोजना द्वारा वहन किया गया।
- यह प्रशिक्षण आवासीय या केवल दिन या दोनों प्रकार के आयोजित किये गये।
- प्रशिक्षण के लिए चयनित ट्रेडों में हास्पिटेलिटी या आतिथ्य प्रशिक्षण, कम्प्यूटर आधारित लेखा प्रशिक्षण और ई.आर.पी.साल्यूशन, डाटा एन्ट्री आपरेटर, कम्प्यूटर हार्डवेयर मैकेनिक, हास्पिटल एवं नर्सिंग होम अस्टिटेंट, मोबाइल रिपेयरिंग, सौंदर्य एवं स्वास्थ्य प्रबंधन, रिटेलिंग और उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी देहरादून के अर्न्तगत चलने वाले 3 पाठ्यक्रम डिप्लोमा इन इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी, कार्यालय प्रबन्धन और कम्प्यूटर एप्लीकेशन शामिल हैं।
- युवाओं के चयन हेतु प्रत्येक जनपद में 3 सदस्यों की एक समिति तय की गई जिसमें सम्बंधित जिले के प्रबन्धक, सहायक प्रबन्धक और चयनित सेवा प्रदाता एजेंसी के सदस्य शामिल रहे हैं।

- किसी आकस्मिक दुर्घटना से बचने हेतु प्रत्येक युवाओं का प्रशिक्षण अवधि के दौरान रू. दो लाख की धनराशि का बीमा करवाया गया।
- प्रशिक्षण अवधि में युवाओं को सॉफ्ट स्किल डवलपमेंट व इनफौरमेशन टैक्नोलॉजी का ज्ञान कराया गया।
- प्रशिक्षण के दौरान युवाओं को यौन शोषण पर संवेदनशीलता बढ़ाने हेतु भी पर्याप्त जानकारियां दी गई।
- प्रशिक्षण में सामान्य, बी.पी.एल., अल्प संख्यक, ए.पी.एल., एस.सी., एस.टी. वर्गों को शामिल किया गया।
- प्रशिक्षण हेतु कुल चयनित युवाओं में से 60 प्रतिशत महिलाएं हैं।
- यह प्रशिक्षण ट्रेडवार तयशुदा घंटों के अनुसार आयोजित किये गये हैं जिसमें उस खास ट्रेड का ट्रेनिंग मॉड्यूल, सामान्य कम्प्यूटर ज्ञान एवं सॉफ्ट स्किल आदि का ज्ञान भी शामिल है।
- प्रशिक्षण के बाद 80 प्रतिशत तयशुदा प्लेसमेंट की गांरटी प्रशिक्षण देने वाली एजेंसियों से ली गई है जो कि न्यूनतम पारिश्रमिक की शर्त पर तय है।
- प्रशिक्षण के दौरान भोजन एवं आवास की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।
- अभ्यर्थियों एवं बाजार की मांग के अनुसार प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।
- प्लेसमेंट के बाद एक साल तक प्रशिक्षणार्थियों के सम्पर्क में रहकर उनको काम में बनाए रखने हेतु प्रयास करना प्रशिक्षण देने वाली एजेंसियों के लिए आवश्यक है।
- सभी एजेंसियों से अपेक्षा की गई है कि वह प्रशिक्षणार्थियों के हित में जितना भी संभव हो मानकों में लचीलापन रखने की गुंजायश रखें जिससे वास्तव में जरूरतमंद युवाओं को इसका फायदा मिल सके।
- व्यसायिक प्रशिक्षण की इस पायलट स्टडी के दौरान 5 सेवा प्रदाता एजेंसियों को सूडा में सूचीबद्ध एजेंसियों में से लिया गया जबकि एक एजेंसी को सीधे चयनित कर कुल 11 ट्रेडों में 688 युवाओं को 11 तयशुदा ट्रेडों में प्रशिक्षित किया गया।
- इन प्रशिक्षित युवाओं में से कुल 445 युवाओं को विभिन्न संस्थानों में जॉब प्लेसमेंट दिलाया गया जिनमें से 316 युवाओं ने जॉब आफर स्वीकार की और 129 युवाओं ने जॉब को स्वीकार नहीं किया। इनमें से 256 युवा नौकरी ज्वाइन करने के बाद विभिन्न संस्थानों में जॉब कर रहे हैं।

उड़ने को बेताब पूजा

पूजा नेगी 9690210544
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

अल्मोड़ा के प्रेमपुरी गांव, पोस्ट ऑफिस गनाई चौखुटिया की 22 साल की लम्बी, छरहरे बदन की पूजा नेगी के दूर से ही मोती जैसे चमकते दांत और उसकी निश्चल हंसी किसी को भी अपना बना लेने के लिए काफी है। पूजा को एक नजर में देखकर उसमें पहाडों जैसी मजबूती, सरलता, सहजता और खूबसूरती एक साथ देखी जा सकती है। वह किसी पहाड़ी झरने की तरह खिलखिलाती और मुस्कराती किशोरी है मगर उसके इरादे बड़े मजबूत और ख्वाब बहुत सुंदर व ऊंचे हैं। वह पहाड़ के एक गांव से अपने खुद के प्रयासों से निकलकर देहरादून के क्रॉस रोड़ मॉल के कैफे कॉफी डे में 'पी' कैप लगाकर एक कुशल प्रबन्धक की तरह नजर आती है, मगर उसकी मंजिल पुलिस में सब इंसपैक्टर बनना है....।

पुलिस में जाने के लिए वह जी तोड़ मेहनत कर रही है। पूजा की चपलता, सक्रियता, चौकन्नापन देखकर वह बिना उत्तराखंड पुलिस की वर्दी पहने किसी निर्भीक पुलिस इंसपैक्टर से कम नहीं लगती। पुलिस में जाने की बात पर वह कहती है कि इस बार मैंने तीन महीने कोचिंग ली थी पर मैरिट बहुत ज्यादा गई। यहां बहुत समय नहीं मिलता है अपनी पढ़ाई करने का लेकिन आप देखना एक दिन मैं जरूर पुलिस में आऊंगी। आत्मविश्वास से लबालब भरी पूजा कहती है कि यदि मैं अल्मोड़ा के एक दुर्गम गांव से UGVS की बदौलत देहरादून तक पहुंच सकती हूं तो पुलिस में इंसपैक्टर क्यों नहीं बन सकती ? मुझे जाना तो पुलिस में ही है। ऐसा कहकर मानो मई 2015 की एक अलमस्त दोपहरी को पूजा ने अपने पंख फड़फड़ाने की उद्घोषणा ही कर डाली हो कि हां मैं बहुत ऊंचा उड़ना चाहती हूं!

पूजा एक निर्धन परिवार से है। उसके पिता खेती बाड़ी कर परिवार की गुजर बसर करते हैं। गाँव में पानी वाले खेत हैं जिनमें जी तोड़ मेहनत कर घर का राशन निकल जाता है। बरसात में बेल वाली सब्जियां भी यह परिवार उगाता है। इसके अलावा सब कुछ दुकानों से ही खरीदना होता है। वह

परिवार की बड़ी लड़की है। घर में एक छोटा भाई और एक बहन है। पूजा को पिता ने किसी तरह राजकीय इंटर कालेज चौखुटिया से आर्ट विषयों में इंटर कराया। इंटर के बाद उसने किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी करके चौखुटिया डिग्री कॉलेज में बी.ए. में एडमीशन लिया। वह कॉलेज रोज नहीं जा पाती थी और सप्ताह में एक दिन जाकर उसका काम चलता था। स्कूल से उसे 1500 रू. प्रतिमाह मिलता था। उसमें से वह 500 रू. प्रतिमाह घर में देती और बाकी से अपना पढ़ाई का खर्चा और बाकी जरूरतें पूरा करती। इसके अलावा कभी कभी सब्जी भी घर में ले जाती। उसके 500 रू. परिवार में एक नई रोशनी की तरह आये जिससे पिता को भाई को पढ़ाने का सहारा मिला और आज वह बी.कॉम कर रहा है। पूजा को हाईस्कूल में 58%, इंटर में 56% और बी.ए. में 51% नम्बर मिले हैं। उसने समाजशास्त्र में द्वाराहाट कॉलेज से द्वितीय श्रेणी में एम.ए. पास किया है। एम.ए. करने के लिए उसे लगभग 40 किमी0 बस से जाना पड़ता था पर उसने हार नहीं मानी। इस दौरान वह पांचवी तक के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपना खर्चा उठाती रही।

पूजा बताती है कि जब वह इंटर में पढ़ती थी तब से घर के हालत देखकर उसे बहुत दुख होता था। वह हमेशा सोचती कि मुझे आगे बढ़ना है और अपने भाई बहनों को भी पढ़ाना है। वह बचपन से पुलिस या फौज में नौकरी करना चाहती है। फौज में जाना उसका सुंदर ख्वाब है। यह पूछने पर कि ऐसा क्यों ? तो बड़ी मासूमियत पर स्पष्टता के साथ कहती है कि यह लोग देश में शांति बनाने और अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं। मुझे अपने देश से बहुत प्यार है। मैं चाहती हूं समाज में सब कुछ ठीक ठाक चले। सब जगह अनुशासन हो, कहीं बेईमानी ना हो और ना ही किसी तरह की गड़बड़ी हो। यह सब पुलिस वाले ही ठीक कर सकते हैं इसलिए मैं खूब मेहनत करके जरूर पुलिस में जाऊंगी। यह ख्वाब तो मैंने तब से पाल रखा है जब मेरे पास कुछ नहीं था पर आज तो मैं नौकरी कर रही हूँ। भले ही मेरी नौकरी छोटी है पर मेरे लिए तो यही सब कुछ है और इसी के दम पर मैंने देहरादून में तीन महीने कोचिंग की और आगे भी करूंगी। यह सब बोलते हुए वह कहीं खो सी जाती है, मानो इस भीड़ भाड़ भरे शहर में उसे अपने अस्तित्व को पकड़ने की जल्दी हो। उसके चेहरे के भाव और शब्दों की गहराई यह बताने को काफी थी कि UGVS ने अपने कौशल निर्माण प्रशिक्षण द्वारा एक किशोरी को गांव से देहरादून पहुंचाकर उसकी मंजिल तक पहुंचने के लिए पगडंडी तो बना ही दी है जिस पर चलकर पूजा निश्चित तौर पर एक दिन अपना राजमार्ग खोज ही लेगी.... ।

पूजा से यह पूछने पर कि वह अल्मोड़ा से यहां तक कैसे पहुंची ? वह बताती है चौखुटिया बाजार में मैं अपनी सहेली नीतू के साथ गई थी। वहां हमें पता चला कि किसी ILFS संस्था के गिरीश सर 12 वीं पास बच्चों का एक टेस्ट लेने वाले हैं किसी ट्रेनिंग के लिए। यह तो हमें कोई बता नहीं पाया कि ILFS क्या है ? और किस चीज का प्रशिक्षण होना है पर यह जरूर पता चला कि टेस्ट में पास हो गये तो फ्री में ट्रेनिंग होगी और नौकरी भी मिलेगी। हमने टेस्ट दिया और पास हो गये। देहरादून से ट्रेनिंग

में आने के लिए फोन आया। अब हमें देहरादून ILFS में ट्रेनिंग के लिए जाना था पर माँ बाप अकेले इतनी दूर भेजने को तैयार नहीं थे। उन्होंने सीधे मना कर दिया। हमने देहरादून कभी देखा भी नहीं था। माँ बाप को समझाया कि हम एक बार देखकर आते हैं और यदि समझ नहीं आएगा तो वापस आ जाऐंगे। देहरादून में नीतू का भाई रहता था। पहले हम उनके पास जायेंगे और यदि वह संतुष्ट होंगे तो ही हम प्रशिक्षण करेंगे। माँ बाप राजी हो गये इसलिए पहले वहां गये और नीतू के भाई ने ही सारी पूछताछ कर हमें ILFS ट्रेनिंग के लिए भेजा। वह पुलिस में नौकरी करता है। अभी तक हम बहुत डर रहे थे पर वहाँ ट्रेनिंग के लिए आये बच्चों को देखकर हमारा डर धीरे धीरे खत्म हो गया। हम सुबह योगा करते जो हमने कभी नहीं किया था। यहां हमारा 10 से 5 बजे तक का टाईम टेबिल तय था। हमें कम्प्यूटर, अंग्रेजी बोलना, सामान्य ज्ञान और फूड व बीवरेज का पाठ एक महीने तक पढ़ाया गया। उसके बाद हम कभी यहाँ बोर नहीं हुए। घर की याद आती तो फोन से बात कर लेते। सच में मुझे पहली बार दोस्तों के साथ इतना अच्छा लगा। यहाँ आकर लगा कि हां! इस दुनिया में हमारा ख्याल रखने वाला भी कोई है। यह हमारे लिए जिंदगी के कभी ना भूलने वाले दिन हैं। हम घर बार की चिंताओं से इतना फ्री होकर कभी अपने बारे में और सिर्फ अपने बारे में सोच पायेंगे यह मेरे लिए बड़ी बात थी। प्रशिक्षण के दिन याद करके खुशमिजाज पूजा के चेहरे पर झलकने वाली विचित्र खुशी आज भी महसूस की जा सकती है। इस बैच में 4 लड़कियां व 18 लड़के थे। पूजा अपने जीवन की सबसे अच्छी घटना ILFS के साथ ट्रेनिंग के दिनों को बताती है। वह बिदांस होकर कहती है कि वहां शायद पहली बार जीवन में हंसने खेलने का मौका मिला। अब तो शायद ही जीवन में यह मौका फिर कभी मिले या नहीं मिले ?

ट्रेनिंग के बाद हमारा कैम्पस इंटरव्यू हुआ। वह कैफे कॉफी डे चेन हेतु चुनी गई। पूजा का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा है कि उससे मिल कर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। जनवरी 2014 में पूजा को राजपुर रोड़ के कैफे काफी डे में टीम सदस्य के तौर पर पहली नौकरी मिली। उसकी पहली तनख्वाह 4700 रू. थी। उसने तनख्वाह से 1000 रू.घर भेजे और बाकी अपनी जरूरतों पर खर्च किया। आज पूजा की 10 महीने की नौकरी हो चुकी है और उसकी कुल तनख्वाह रू. 7200 है। तीन महीने बाद से ही उसका 12 प्रतिशत पी.एफ. और इंश्योरेंस का पैसा कटता है। वह अब कम्पनी की नियमित कर्मचारी हो चुकी है। पूजा ने ब्रू मास्टर का टेस्ट पास कर लिया है और अब उसकी 500 रू. तनख्वाह और बढ़ जायेगी। वह सर्विसिंग, बिलिंग, कॉफी बनाना, आपरेशनल वर्क सब कुछ कुशलता एवं आत्मविश्वास से कर लेती है। एक कैफे अकेले कैसे चलाया जाता है इसका उसे ज्ञान हो चुका है। कभी कभी उसने पूरा कैफे अकेले भी चलाया है। पूजा को शुरू में यहां का काम बिलकुल अच्छा नहीं लगा। वह यहां काम नहीं करना चाहती थी। यहां लगातार खड़े रहना पड़ता है पर अब तो आदत हो चुकी है। अब यहां से छोडने का मन नहीं करता है। वह कहती है यही साथ काम करने वाले लोग हमारे मित्र और घर परिवार के लोग हैं। यही सुख दुख में काम आते हैं बाकी को तो हम जानते भी नहीं हैं। कभी कभी काम के दौरान गलती हो जाती है तो ग्राहक बहुत

नाराज हो जाते हैं। वह बताती है कि यदि ग्राहकों से प्रेम से सॉरी बोल दो तो वह शांत हो जाते हैं। बड़ी मासूमियत से पूजा बोली कि हमें ट्रेनिंग के दौरान सॉफ्ट स्किल इसी काम के लिए सिखाये जाते हैं कि कैसे विपरीत परिस्थितियों में धैर्य ना खोकर शांत रहा जाता है। पहले तो मैं हर बात पर उखड़ जाती थी पर अब शांति से चीजों को थामना मेरे स्वभाव में आ गया है।

कुछ बच्चे चंडीगढ़ और पंजाब के शहरों में गये पर मुझे तो देहरादून ही रहना था। दिल्ली जैसे शहर मुझे पसंद नहीं हैं। मैं तो पहाड़ों में ही रहना चाहती हूं। अपना घर कौन छोड़ना चाहता है? किसे खुशी होगी अपने लोगों से दूर रहने में? पर जीवन में सब कुछ करना पड़ता है। मेरा सपना तो पुलिस में जाने का है पर पता नहीं यह कब पूरा होगा? जब तक मैं पुलिस हेतु नियुक्त नहीं होती तब तक यहीं पर रहकर आगे बढ़ना चाहती हूं। मेरा यहां पर तीन महीने बाद ओ.टी का टेस्ट होगा उसे पास कर मेरी तनख्वाह 800 रू. बढ़ जायेगी और मैं अस्सिटेंट मैनेजर बनूंगी। उसके बाद मैं मैनेजर का टेस्ट देकर 3 कैफे की इंचार्ज हो जाऊंगी। एक मैनेजर को लगभग 15–16 हजार तनख्वाह मिलती है। ओ.टी. का टेस्ट कठिन होता है पर मैं उसे जरूर निकाल लूंगी। पूजा को यहां की कार्यप्रणाली और उसके अनुसार अपनी क्षमताओं का आंकलन करना बखूबी आता है। वह बताती है कि मुझे एक बात बहुत अच्छी लगती है कि यहां पर अपने लोगों को आगे बढ़ाने का रिवाज है पर जानबूझकर की गई छोटी छोटी गलती और बेईमानी पर नौकरी से भी निकाल दिया जाता है। यदि कभी गलती हो जाये तो हमें उसका जिक्र लॉग बुक में करना होता है तो यह माना जाता है कि हमने गलती के बारे में बता दिया है। ऐसा करके हम बच जाते हैं।

पूजा अपनी नौ महीने की नौकरी के बारे में पूछने पर बेबाक होकर कहती है कि मैं हर महीने 3000 रू. गांव भेजती हूँ और बाकी पैसे से अपनी जरूरतें पूरा करती हूं। मेरे थोड़े से पैसों से ही माँ बाप को बहुत सहारा मिलता है। पिताजी ने मकान बनाने के लिए कर्जा लिया था, मेरे भेजे पैसों से उन्होंने वह चुका दिया है। मेरे पिताजी बहुत संतुष्ट हैं और मुझ पर बड़ा सहारा मानते हैं कि यदि हमारा बेटा होता तो वह भी यह सब करता या नहीं? वह गाँव में सबको बताते हैं कि पूजा तो मेरा बड़ा बेटा है।

पूजा की नौकरी के घंटे बहुत थकाने वाले होते हैं। जब पहली बार 8–9 घंटे खड़ा रहना पड़ा तो तेज रोना आया। बहुत थकान लगी। मन करता है कि छोड़कर घर चले जाओ। वह बताती है कि कभी तो मन भी नहीं करता पर आना पड़ता है खास तौर पर जब तबियत खराब होती है। ऐसे में घर की बहुत याद आती है। अपनी दवाई लेने भी खुद ही जाना होता है। यहाँ पर कौन करेगा हमारा? जब कभी निराशा के पल आते हैं तो ऐसे में एक ही बात दिमाग में रहती है कि हमें अपने परिवार के लिए कुछ करना है क्योंकि हमारी जिंदगी बहुत कठिन है। इस नौकरी से पूरे परिवार को बड़ा सहारा है। यह नौकरी पाकर मेरी अपने परिवार और गाँव में बहुत इज्जत बड़ी है। जो लोग हमारे परिवार को बेचारगी की नजर से देखते थे अब वह लोग हमारे परिवार को सम्मान से देखने लगे हैं। पहले गांव वाले होटल की नौकरी को अच्छा नहीं समझते थे पर मेरे व्यवहार, आचार विचार, रहन सहन और आत्मविश्वास को देखकर उनकी लड़कियों की होटलों में काम करने के प्रति धारणा बदली है।

पूजा बताती है कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं होटल लाईन में काम करूंगी? कभी जब हाऊसकीपर नहीं आती है तो हमें बरतन भी साफ करने पड़ते हैं। उस समय बहुत शर्म लगती है पर फिर हम अपने को समझाते हैं कि जब हम हर छोटा बड़ा काम करेंगे तभी तो आगे जायेंगे और अपने भाई बहनों को आगे निकालने के लिए कुछ तो सहना ही पड़ेगा। अब मेरी सोच बहुत पक्की हो गई है। मैं किसी छोटी बड़ी बात का बुरा नहीं मानती हूं। इससे बड़ा फायदा हुआ कि मैं अब अपनी छोटी सी नौकरी का आनंद उठा रही हूं। यह मेरे जीवन में बड़ा बदलाव आया है। पूजा को देखकर और उसकी छोटी सी कहानी सुनकर एक बात तो समझ में आती है कि उसका समय का प्रबन्धन बहुत अच्छा है तभी वह शायद अपनी कठिन दिनचर्या के बीच में से ही कोचिंग व पढ़ाई के लिए समय व पैसा दोनों निकाल रही है।

पूजा को कैफे डे में एक कर्मचारी के तौर पर तो खूब देखा समझा पर एक इंसान के बारे में भी उसे थोड़ा जानना जरूरी है। उससे इस बारे में पूछने पर वह कहती है कि मैं अपने परिवार के लिए बहुत कुछ करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं हमारे पास खूब पैसे हों, हमारा घर भी अच्छा हो, मैं अपने परिवार का सहारा बनूं। मैं कभी कोई ऐसा काम ना करूं जिससे मेरे परिवार का सर शर्म से नीचा झुके। मैं अपने भाई बहनों को बहुत अच्छा पढ़ाना चाहती हूं। मैं अपनी जरूरतों पर कम से कम और परिवार पर ज्यादा से ज्यादा खर्च करना चाहती हूं। मुझे लगता है कि आज मैं अपने और परिवार के सपनों को पूरा कर सकती हूं। पूजा ने भावुक होकर अपनी आंखों में आये आंसू छिपाकर रूंधे गले से बताया। वह बोली यह कम्पनी अच्छी है। फिलहाल मैं यहां टिककर ही काम करना चाहती हूँ। जब मैनेजर बन जाऊंगी तभी दूसरी जगह जाने की सोचूंगी। मैं आज बहुत खुश हूं पर मेरे मन में संतुष्टि तभी होगी जब मैं अपने सपने पूरे कर लूंगी।

पूजा बहुत निर्विकार होकर बताती है कि मैं शादी तभी करूंगी जब मेरी मंजिल मुझे मिल जायेगी। वह कैसे लड़के से शादी करना चाहेगी यह पूछने पर पूजा ने कहा कि निसंदेह एक अच्छे लड़के से जो सरकारी नौकरी में हो, जिसका परिवार संस्कारित हो। वह सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि अपने परिवार और बिरादरी का भी ख्याल रखता हो। हां एक बात जरूर है मैं सिर्फ अपनी ही जाति बिरादरी में शादी करना चाहूंगी। वह बहुत स्पष्टता से बताती है। वह बताती है कि मेरी समझ में आ गया है कि अपना घर, वातावरण और संस्कृति ज्यादा महत्वपूर्ण है बजाय पैसे के। आप लोगों ने हमें जहां छोड़ा था निसंदेह हम उससे काफी आगे बड़े हैं। मेरी कोशिश होगी कि मैं आपको यहीं पर मैनेजर बनकर दिखाऊं और साथ ही एक अच्छा इंसान भी....। पूजा खतरे उठाना जानती है और साथ ही मिले अवसरों को भुनाना भी उसे आता है। तभी वह इतने कम पैसों में अपनी कोचिंग भी कर रही है और घर में पैसा भेजकर अपनी जिम्मेदारी भी निभा रही है। पूजा में एक सुंदर बात है कि वह व्यक्तिगत और काम की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना बहुत सुंदरता से जानती है। उसने अपनी जिंदगी में कुछ लक्ष्य तय किये हैं जिनको पूरा करने के लिए वह प्रतिबद्ध है। वास्तव में एक बात पूजा के बारे में निसंकोच कही जा सकती है कि वह एक जन्मजात उभरता तारा है उसे जब

चमकने का मौका मिला तो उसने अपनी पूरी ताकत से टिमटिमाना शुरू कर दिया है। हमारी प्रार्थना है कि पूजा एक दिन इस क्षैतिज में उस शान और शिद्दत से चमके जिसकी वह हकदार है।

पूजा के बारे में ILFS के प्रशिक्षकों ने बताया कि हम अपनी ट्रेनी के अंदर जो कुछ गुण और योग्यता देखना चाहते हैं ? वह सब पूजा में मौजूद हैं। पूजा अपने काम में बहुत चुस्त व समय की बहुत पाबंद है। उसके अंदर लोगों को अपना बनाने की ताकत है। हम प्रशिक्षण पूरा होने के बाद कई बच्चों को अपने इंस्टीट्यूट में नए बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए बुलाते हैं पर कम बच्चे आते हैं। यदि हमने पूजा को दस बार बुलाया तो वह नौ बार आई।

पूजा से बातचीत कर जब हम उससे विदा लेने लगे तो उसने आखिरी में बड़ी शालीनता से कहा हम UGVS और ILFS के आभारी हैं, जिनकी वजह से हम गांव की पंगडंडियों से चलकर यहां तक पहुंच पाये हैं। खासतौर पर UGVS के जिसने मेरे सपनों को फड़फड़ाने के लिए ताकत दी है। आप जरूर मेरी जैसी और भी गांव की लड़कियों के सपनों में सुंदर रंग भरना। वह सब खुले आसमान में उड़ना चाहती हैं। वह भी पुलिस में इंसपैक्टर बनकर समाज में न्याय व्यवस्था को बनाने के लिए काम करना चाहती हैं। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की रोकथाम के लिए एक मजबूत दीवार बनकर उनका सहारा बनना चाहती हैं। आखरी में उसका विनम्र यक्ष प्रश्न था कि मैं पुलिस में जाना चाहती हूं। क्या UGVS ! मेरे रास्ते में आने वाली मुसीबतों का गुणा भाग करने के लिए मुझे जिंदगी का हिसाब किताब सिखाने में मेरा हौसला बनेगा ?

सुंदर की सुंदर बातें

सुंदर सिंह रावत 9927502748
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

कभी कभी किसी बच्चे को देखकर लगता है कि यह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही परिपक्व और समझदार है। ऐसे बच्चे धरती पर कुदरत का शानदार तोहफा होते हैं। अनजाने में कही उनकी बातों में भविष्य के संकेत छिपे होते हैं और या यूं कहो कि वह अपनी बाल नजर से इस दुनिया को सरल, सहज और सुंदर बनाने का रोड मैप खींच देते हैं। कहते भी हैं दुनिया को और सुंदर बनाना है तो उसे बच्चों की नजर से उतनी ही मासूमियत से देखो। दुनिया को और रंगीला बनाना है तो उसमें बच्चों के पंसदीदा चटकीले रंग भरो और उनकी ही तरह के छोटे छोटे सपने देखो, उन सुंदर सपनों को मिट्टी में उकेरो, अपने सपनों में औरों की खुशियां खोजो और दूसरों को उसमें शामिल कर उन खुशियों का हिस्सेदार बनाओ और मिल जुलकर इस सुंदर दुनिया को और सुंदर बनाने के अपनी कोशिशों जारी रखो.... । यह बात अल्मोड़ा के मोहनरी गांव, ब्लॉक भिकियासैंण के 20 साल के सुंदर सिंह रावत पर एकदम फिट बैठती है जिसकी आंखों में उत्तराखंड के गांवों और लोगों के लिए सुंदर सपने हैं और उसकी सुंदर बातों में गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की एक बाल सुलभ मगर परिपक्व जिद छिपी है। ऐसे सुंदर की सुंदर बातों को बाहर निकलवाने का श्रेय UGVS को है जिसने अपने कौशल वृद्धि कार्यक्रम के द्वारा गांव में छिपी इस प्रतिभा को मुरझाने से पहले ही सही जगह पर लाकर खिलने का मौका दिया है।

सुंदर का परिवार मोहनरी गांव में खेती बाड़ी कर गुजर बसर करता है। हाड़ मांस जलाने वाली मेहनत के बावजूद परिवार को मुश्किल से दो तीन महीने का ही राशन मिल पाता है। परिवार की आय का कोई साधन नहीं है। सुंदर के चाचा उनकी आर्थिक मदद करते हैं। उन्होंने ही इन बच्चों को पढ़ाया लिखाया। सुंदर ने किसी तरह इंटर पास किया और अभी बी.ए. प्राइवेट कर रहा है। उसकी तीन बड़ी बहनें हैं जिनकी शादी उसके चाचा लोगों ने ही की है। उसका एक छोटा भाई है जिसने इंटर पास कर लिया है। सुंदर आजकल देहरादून के कॉसरोड़ मॉल स्थित कॉफी कैफे डे में ब्रू

मास्टर के रूप में काम कर रहा है और अपने पांवों पर खड़े होकर बहुत खुश है। गांव की गलियों से देहरादून के इस मॉल तक पहुंचने की कहानी सुनाते हुए बच्चों जैसी मासूमियत लिए इस नौजवान की आंखों में आई चमक और चेहरे पर अपने होने की पहचान का भाव देखते ही बनता था। वह इस बात से बहुत खुश था कि कोई उसकी जिंदगी के बिखरे पलों को एक जगह समेटने की कोशिश कर रहा है। सुंदर की भाषा बहुत सुंदर है और बोली में गजब की मिठास भरी है। मई 2014 में सुंदर को उसके एक दोस्त संजय जिसकी भतरौजखान में दुकान है ने बताया कि ऐसी कोई ट्रेनिंग देहरादून में कोई ।LFS संस्था करवा रही है जिसमें खाना पीना सब फ्री है। ट्रेनिंग में क्या होगा और कैसे होगा यह तो वह बहुत बता नहीं पाया पर यह जरूर बताया कि उसके बाद नौकरी भी मिलेगी। सुंदर को क्या चाहिए था उसने बस वहां जाना तय कर लिया। एक हफ्ते बाद सुंदर अपने 9 दोस्तों के साथ इंटरव्यू पास करके देहरादून में था।

प्रशिक्षण के बाद सुंदर को कॉफी कैफे डे दर्शन लाल चौराहे पर टीम सदस्य के रूप में नियुक्ति मिली। कुछ ही दिनों में वह क्रॉस रोड़ मॉल के कैफे डे में आ गया। शुरू में सुंदर की तनख्वाह 4700 रू. थी। आज सुंदर को 8000 रू. हाथ में मिलता है। तीन महीने में वह कम्पनी में नियमित हो चुका था। उसका इंश्योरेंस और प्राविडेंट फंड दोनों कटता है जिसकी वजह से वह अपने जीवन को बहुत सुरक्षित समझता है। वह 2000 रू. प्रति माह बचाता है। अपने खर्च कम करने के लिए उसने अपने दो दोस्तों के साथ कमरा मिलकर लिया है। वह अब एक कुशल ब्रू मास्टर है और कॉफी विशेषज्ञ बनने पर वह बहुत खुश है। वह अपने भविष्य पर खुलकर कहता है कि इसके बाद वह कॉफी डे की अन्य परीक्षाएं पास करके यहीं पर मैनेजर की शर्ट पहनने को बेताब है। मैं काम तो सारा सीख चुका हूं पर मुझे शर्ट पहनने के लिए अभी बहुत सारी परीक्षाओं से गुजरना ही होगा।

सुंदर की मुस्कराहट में घर की माली हालत को सुधारने का एक सपना छिपा था। वह बताता है कि अगर चाचा ताऊ मदद नहीं करते तो मैं कहां से पढ़ता ? बहनों की शादी भी उन्हीं लोगों ने की। मैंने विज्ञान विषयों के साथ इंटर पास किया है। मैं आगे बी.एस.सी. करना चाहता था पर पैसों की तंगी के कारण कर नहीं पाया। मेरे पिताजी कुछ काम करते ही नहीं हैं। बचपन से उनको ऐसे ही देखा है। मैं इंटर करके दिल्ली गया पर वहां की गर्मी और प्रदूषण के चलते एक बात तो तय कर ली कि काम तो अपने उत्तराखंड में ही करना है इसलिए मुझे यह मौका मिला और मैं इसका फायदा उठा रहा हूं। मैं अपनी तनख्वाह से अपने भाई को पढ़ा कर फोर्स में भेजने की तैयारी कर रहा हूं। मेरी लम्बाई कम होने से मैं फौज में नहीं जा सका इसलिए भाई को भेजकर ही अपना सपना पूरा करूंगा। पहाड़ी लड़कों को फौज में ही होना चाहिए। मैं खेलों में भी बहुत अच्छा हूं। मैंने होटल लाईन में आने का सोचा भी नहीं था पर यहां आकर जाना कि यह लाईन खराब नहीं है। यहां आकर तो मेरी जिंदगी में एक अनुशासन आ गया है। मैं काम के तौर तरीके और दुनियादारी जान गया हूं। मैंने 10 महीनों में इतना सीखा है कि मेरी तो जिंदगी ही बदल गई है। पहले डरा डरा सा रहने वाला सुंदर अब किसी से

नहीं घबराता है। कोई भी मुश्किल आने पर मैं उसका हल खोज लेता हूं। मैं हर बात के हर पहलू पर गंभीरता से विचार कर निर्णय लेने लगा हूं। पहले मैं बहुत जल्दबाजी करता था पर नौकरी ने मेरी यह आदत बदल दी है। मैं यह जान चुका हूं कि यहां पर काम करने वाले के लिए यह एक अच्छा कैरियर है। दो साल के अंदर मैं मैनेजर बन सकता हूं और उसी के लिए प्रयास कर रहा हूं। उसके बाद मैं एरिया और सिटी मैनेजर भी बन सकता हूं। यहां राष्ट्रीय स्तर पर कॉफी बनाने की चैम्पियनशिप होती है। मैं उसमें भाग लेना चाहता हूं। एक मौका जो मुझे गांव से यहां लाया है वह मुझे आगे ले जाऐगा, उस दिन UGVS को फख्र होगा कि उन्होंने कितना अच्छा काम किया है।

सुंदर ने एक बात और बताई कि मुझे लिखने का बहुत शौक है और मैं लेखक बनना चाहता हूं। मेरा यह शौक मेरे घर के हालतों ने तोड़ दिया था पर मेरी नौकरी ने मुझे फिर से लिखने की प्रेरणा दी है। मैं कविताएं और उपन्यास लिखना चाहता हूं। मुझे प्रकृति, मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं पर लिखने का मन होता है। मेरे मन से कविताएं छलकती हैं पर गरीबी बच्चों को कितना लाचार करती है यह सिर्फ मैं ही जान सकता हूं। मैं अपना लिखने पढ़ने का सपना अब पूरा करूंगा। सुंदर की रचनात्मकता, रचनाधर्मिता और उत्साह इस नौकरी के बाद कितना उभर कर बाहर आया है, यह तो उससे मिलकर ही महसूस किया जा सकता है। वह बताता है कि जब मैं उदास होता हूं तो कुछ लिखने बैठ जाता हूं। वह पहाड़ों, जंगलों और खत्म होते वन्य जीवों और चिड़ियाओं पर अपनी कलम चलाना चाहता है। वह उन्हें अपनी रचनाओं में फिर से खोजना बटोरना चाहता है।

वह बड़े दार्शनिक अंदाज में कहता है कि मैंने अपने बचपन में जो कुछ खोया है उसे शब्दों में उतारकर उसकी कीमत सबको बताना चाहता हूं। हमारे प्राकृतिक संसाधन खो गये हैं उनके बारे में जन जागरण करना चाहता हूं। साथ ही आज के लोग जो रिश्तों की अहमियत नहीं समझ रहे हैं उनको बताना चाहता हूं कि मां, बाप, भाई, बहन और बाकी नाते रिश्तों की जीवन में क्या कीमत होती है? अपने लोगों से दूर रहना कितना तकलीफदेह होता है यह कोई मुझसे पूछे? आजकल हमारे गांवों और शहरों में लोग संयुक्त परिवारों में रहना पसंद नहीं करते हैं। यह बात मुझे दुख देती है कि क्यों लोग एक दूसरे के साथ रहना पंसद नहीं करते? अगर हमारा संयुक्त परिवार नहीं होता तो मेरा क्या होता? मेरे भाई बहनों का क्या होता? पिताजी तो कुछ करते नहीं हैं, जो कुछ भी किया हमारे चाचा ताऊ ने ही किया। मैं यह बात अपनी कविताओं के माध्यम से सबको बताना चाहता हूं। इस नौकरी ने मेरे अंदर की बुझ गई संवेदनाओं को फिर से जिंदा कर दिया है। यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। मैं एक बड़ा आदमी बनना चाहता हूं अपने मां बाप के लिए। मैं अपने पर अपनी तनख्वाह का सिर्फ 10 प्रतिशत ही खर्च करूंगा और बाकी का 90 प्रतिशत अपने परिवार पर खर्च करना मेरी जिम्मेदारी है क्योंकि घर से बाहर रहकर मैं परिवार की कीमत समझ चुका हूं। मेरे चाचा ताऊ ने हमें बहुत मदद की है। मैं रिश्तों को ही भगवान मानता हूं! ऐसा कहते कहते वह चुप हो गया। हमें तो पता ही नहीं चला कि मेरी बहनों की शादी इन लोगों ने कर दी। एक बच्चे के लिए

परिवार के संस्कार बहुत मायने रखते हैं। यह बात सुंदर की सुंदर और सारगर्भित बातों को सुनकर समझ आता है कि एक संयुक्त परिवार ने इस बच्चे को एक नई गहराई दी और विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में जीवन मूल्यों पर टिके रहने का जज्बा भी दिया है। वह एक ऐसी लड़की से शादी करेगा जो उसके परिवार के साथ रह सके पर शादी वह मैनेजर बनने के बाद ही करना चाहता है।

सुंदर के सोचने का दायरा बहुत बड़ा है। वह जानवरों से बहुत प्रेम करता है। वह बताता है कि उसने बचपन में एक कुत्ते और बिल्ली को साथ साथ रहते और खेलते कूदते देखा पर भाई भाई को लड़ते देखा है। वह इस बात का उत्तर भी अपनी कविताओं में खोजना चाहता है कि असली जिंदगी में यह भेदभाव और प्रेम का अभाव क्यूं है? अपने गांव के खत्म होते बांज के जंगलों पर उसको बहुत दुख है। वह अपने गांव में वापस बांज के जंगल लाना चाहता है क्योंकि बांज की जड़ों से निकलने वाला मीठा और ठंडा पानी गांवों को जीवन दे रहा है पर अब गांव के पेड़ खत्म हो गये हैं। वह पेड़ों को बचाना चाहता है और नए पेड़ों का जंगल लगाना चाहता है। वह अपने जीवन के मूल्यों को लेकर बहुत स्पष्ट है कि एक समय बाद वह वापस अपने गांव में जाना चाहेगा और अपनी आखिरी सांस अपने ही गांवों में लेना चाहता है। मैंने दिल्ली और देहरादून सब देख लिया है। लोग विदेश भी जाते हैं सिर्फ पैसों के कारण पर जीवन में पैसा ही सबकुछ नहीं होता। मैं वापस जाकर अपने मां बाप के साथ रहना चाहता हूं। अपने पेड़ों, जंगलों और जानवरों के साथ खुशी के गीत गाना चाहता हूं, अपने खेतों में हल चलाना चाहता हूं। मैं सच में गांव नहीं छोड़ना चाहता पर आजीविका की तलाश में कहां कहां नहीं भटकना पड़ता यह मेरी समझ में अब आया। मैं शरीर से यहां आया जरूर हूं पर मेरा मन आज भी गांवों में ही कहीं किसी ऊंचे पेड़ पर किसी चिड़िया के माफिक गीत गाता उड़ान भरता रहता है। एक दिन मैं जरूर वापस जाऊंगा अपने गांव में।

मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैं मुंशी प्रेमचंद्र की कहानियां बहुत पसंद करता हूं क्योंकि वह जीवन से जुड़ी और जीवन के यथार्थ को बताने वाली कहानियां हैं। उनमें आम आदमी की आम जिंदगी के छोटे छोटे सच छिपे हैं। मैंने सबसे पहले गोदान कहानी को दूरदर्शन पर देखा। मैंने बहुत कहानियां मांग मांग कर पढ़ीं। मेरे पास तो इतने पैसे ही नहीं होते हैं कि खुद से खरीद सकूं। मैं सुमित्रानंदन पंत की कविताओं को भी बहुत चाव से पढ़ता हूं। अपने खोये सपनों पर बात करते करते सुंदर भी एक कवि सा ही संवेदनशील हो उठता है। कुछ पलों के लिए वह भूल गया कि वह कॉफी कैफे डे में नौकरी करता है और इस वक्त भी वह काम की जगह पर ही मौजूद है। अचानक भाव विभोर होकर बोला कि– 'मानव जब जोर लगाता है तो पत्थर भी पानी बन जाता है'... मुझे कवि पंत की यह पंक्तियां बहुत अच्छी लगती हैं। यह पंक्तियां मुझे जीने की प्रेरणा देती हैं और मैं बार बार सोचता हूं कि मैं भी इतना ही जोर लगाकर एक अच्छा इंसान बन सकूं। शायद मेरे अच्छे इंसान बनने की राह अब साफ हो रही है। यह छोटी सी नौकरी मुझे हौसला देती है कि मैं अपना जोर लगाना कभी ना छोड़ूं। कभी ना कभी तो मेरी मंजिल मुझे मिल ही जाऐगी। मेरे सपनों को पूरा करने में UGVS और

ILFS का हाथ है। ILFS से मिलना मेरी जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। इन्होंने मेरी जिंदगी को एक नया मोड़ दिया। मैं जब से कॉफी डे में आया हूं तब से मुझे एक दिशा मिली है। मैं अब अपने दम पर ही आगे बढ़ना चाहता हूं। यहां तनख्वाह भले ही कम है पर फिर भी मैं संतुष्ट हूं। हमारे यहां हाऊस कीपिंग के लोग रीजनल हैड के पोस्ट तक पहुंचे हैं और वह बहुत बड़ी तनख्वाह लेते हैं। मैं वहां तक पहुंचना चाहता हूं। सुंदर का बहुत ही ठहरा हुआ व्यक्तित्व है और इसके विचार बहुत ही स्पष्ट हैं। वह अपने काम और जीवन की सारी बारीकियां जानता है। वह अचानक बोला आज तक जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। चाहता हूं कि ईश्वर की मेहरबानी मुझ पर बनी रहे।

मेरे अंदर बहुत डर है। मैं अपने डर को भगाने के लिए कभी जंगल में तो कभी खेतों में रात रात को अकेले जाता हूं। एक बार अपने जानवरों को खोजने के लिए रात को अकेले पूरा जंगल छान मारा। मेरे जानवर तो नहीं मिले पर मेरा डर जाता रहा। इस नौकरी ने मेरे अकेलेपन के डर से मुझे बाहर निकालने में बहुत मदद की है। मेरा पूरा परिवार हमेशा आर्थिक तंगी के डर में जिया है। मैं बहुत पैसा कमाकर उन्हें इस डर से बाहर निकालना चाहता हूं। मैंने अपने मां बाप के लिए सोचा है कि उन्होंने बहुत दिक्कतें झेली हैं। उनका बुढ़ापा बस अच्छे से कट जाये इसलिए आखिरी में अपने ही गांव जाना चाहता हूं। यहां नौकरी करते करते मैं हिंदी और राजनीतिशास्त्र में एम.ए. करना चाहता हूं। हिंदी में इसलिए कि मेरी हिंदी ठीक हो जाएगी तो जब मैं उपन्यास और कविताएं लिखूंगा तो मुझे आसानी होगी। राजनीतिशास्त्र में पढ़ाई करके यह जानना चाहता हूं कि ऐसा कौन सा नियम है जिसके कारण कम पढ़े लिखे नेता आई.ए.एस. अफसरों पर राज करते हैं? यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है। पता नहीं यह गलत परम्परा कहां से आई? मैं इसका हल खोजना चाहता हूं और एक स्वस्थ राजनीति की शुरूआत करना चाहता हूं। पर मुझे राजनीति बिलकुल पसंद नहीं है। हमारे गांवों से बहुत पलायन हो रहा है। मैं सोचता हूं यदि नेता अपने अपने गांवों की दशा भी सुधार दें तो कितनी बड़ी बात होगी। इससे कम से कम पलायन तो रूकेगा।

मेरे को एक बात और लगती है कि हम नौजवानों को अपने माता पिता और अध्यापकों का सम्मान किसी भी कीमत पर बनाए रखना होगा। ऐसी बहुत सी परिस्थितियां होती हैं जब यह लोग अपने रास्तों से भटक जाते हैं पर उसके बावजूद हमें उनका सम्मान करना होगा। कभी भी अपने मां पिता को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे लिए उन्होंने जो तकलीफें सही हैं उनको सिर्फ पैसे भेजकर आप बात खत्म नहीं कर सकते। मैं इसलिए उनके साथ रहना चाहता हूं। जैसा अपना घर और अपने माता पिता होते हैं वैसा कोई नहीं होता। मैं अपने गांवों में बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देना चाहता हूं और चाहता हूं कि बच्चों के अंदर पनपने वाली यह नशे की लत किसी तरह खत्म हो। मैं कोई नशा नहीं करता और अपने गांव के बच्चों को इससे मुक्त रखने के लिए यदि कुछ कर सका तो यह बहुत बड़ी बात होगी। मैंने बचपन में एक टीचर को शराब के नशे में गिरा पड़ा पाया तो मन को बहुत ठेस लगी। मैं आज तक सोचता हूं कि शराब आदमी को कितना गिरा देती है। सरकार को कुछ ऐसा

करना चाहिए कि यह शराब खत्म हो जाए। दूसरा स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई की हालत देखकर बुरा लगता है। पैसे वाले ही अब पढ़ सकते हैं। मैं यदि नीतिकार होता तो सारे प्राइवेट स्कूलों को खत्म करके सरकारी स्कूलों को सुधार देता। हमारे सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता भी प्राइवेट स्कूलों की तरह होनी चाहिए नहीं तो दो तरह की स्कूली व्यवस्था से कैसे बच्चों का भविष्य सुधरेगा। यह बात दुख पहुंचाती है कि कोई तो दून स्कूल में पढ़े और किसी को सरकारी स्कूल में भी पढ़ने को ना मिले?

मैं अपने गांव और पहाड़ के हर गांव की हालत पर बहुत सोचता हूं और उसका कोई हल खोजना चाहता हूं। मैं पर्यटन को बढ़ावा देकर गावों में ही रोजगार पैदा करना चाहता हूं। गांवों में सुंदर हरे भरे जंगल बनाना चाहता हूं। गांवों में ही सब्जियां पैदा करना चाहता हूं। गधेरों में हौज बनाकर ही आलू और बाकी सब्जी लगाना चाहता हूं। कुछ भैंसे पालना चाहता हूं। हमारे गांव में कुछ लोग जिनके पास जमीन हैं। वह एक सीजन में 35–40 हजार की सब्जी बेच देते हैं। मेरी तो समझ में बहुत अच्छे से आ गया है कि गांवों के संसाधनों को गांवों में लगाकर खूब मेहनत से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। पहले हमारे गांवों में रिंगाल का काम होता था पर वह हाथ के काम अब बंद हो चुके हैं। हम गांवों में फूलों की नर्सरी बना सकते हैं। जैसे कार्बेट नेशनल पार्क में पर्यावरण और वन्य जीवों का संरक्षण हो रहा है और पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है उसी तरह से हम अपने गांवों के आस पास के जंगलों को संरक्षित कर अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचा सकते हैं। हमें किसी भी तरह से अपने हर प्रयास से प्रकृति को पुष्ट करना होगा और इसे और ज्यादा विनाश से बचाना होगा। सुंदर एक दार्शनिक अंदाज में बोलता है कि जैसे एक पेड़ अपनी जड़ों से दूर दूर तक की मिट्टी को थाम कर रखता है उसी तरह हमें भी पेड़ बनना चाहिए। पेड़ की उदारता अपने जीवन में उतार कर अपने संयुक्त परिवारों को अपने प्रेम से थामकर इस समाज को बचाने की दिशा में पहल करनी चाहिए। हमारे संयुक्त परिवार ही आज बिखरते समाज को दिशा दे सकते हैं।

सुंदर अपनी बाल सुलभ सहजता में बोलता रहा कि हमें प्रकृति, समाज और बच्चों को फायदा पहुंचाने वाली ट्रेनिगों की जरूरत है। क्या सरकार ऐसी कोई ट्रेनिंग विकसित नहीं कर सकती जिससे हम प्रकृति के साथ जिंदा रहने का तरीका सीख सकें। हमारे गांवों में तो हरेक को पता होता है कि जंगलों को कैसे पनपाना है? हमारी मां बहनें तो उनके साथ ही रहती हैं? क्या सरकार अपनी नीतियों में ऐसा बदलाव लाकर इनको ही जंगलात में नहीं ला सकती जिससे यह जंगलों के और नजदीक आयें। ऐसा करके जंगलों का और ज्यादा संरक्षण और संवर्धन होगा। मैं सोचता हूं गांवों के लिए कैसे विकास की जरूरत है यह गांव वालों से अच्छा कोई नहीं जानता। बस वहां सिर्फ संकेत देने की जरूरत है। वह लोग आधे प्रशिक्षक वैसे ही हैं और शारीरिक रूप से काम करने में भी पूरी तरह सक्षम हैं। बस एक चिनगारी लगाने की जरूरत है। यदि विकास की यह चिनगारी लग जाये तो कोई भी अपने गांवों से कहीं बाहर ना जाये। पैसों के लिए बाहर जाना भी पड़ता तो है यह बात बाहर जाकर ही समझ आती है कि पैसे का आनन्द तभी है जब आपके अपने साथ हों। सुंदर दार्शनिक अंदाज में कहता है कि लोग पैसों के लिए विदेश जाना चाहते हैं पर मैं गांव वापस जान चाहता हूं।

सुंदर के प्रशिक्षक उसके बारे में बताते हैं कि यह बहुत लम्बी रेस का घोड़ा है। यह जानता है कि विपरीत परिस्थितियों में कैसे जिया जाता है। यह बहुत ही कम समय में इतनी ज्यादा बारीकियां समझा रहा है जिन्हें हम भी नहीं जानते थे। यह उन बच्चों के लिए बहुत बड़ा उदारहण है जो बच्चे प्रशिक्षण छोड़कर वापस चले जाते हैं। प्रशिक्षण के दिनों में इसमें गंभीरता नहीं दिखती थी पर यह इतनी बारीकी से चीजों को सोचता और समझता है यह हम नहीं जानते थे। सुंदर के कैफे डे मैनेजर ने बताया कि यह बहुत जिम्मेदार है और अपनी टीम की बहुत मदद करता है। यह दूसरों के हिस्से का काम भी चुपचाप कर देता है।

सुंदर से काम की बारीकियां और जीवन के बेशकीमती पाठों का व्यवहारिक सबक सुनकर लगता है हमारा प्रशिक्षण सफल हुआ। इस कैफे में कई ऐसे ग्राहक हैं वह तभी आना पसंद करते हैं जब सुंदर कैफे में होता है। क्या बात है सुंदर...उतना ही सुंदर नाम, उतना ही सुंदर काम और उतने ही सुंदर विचार। प्लीज सुंदर तुम अपने जीवन की इस सुंदरता को बचाये रखना!

थैंक्यू! यू.जी.वी.एस.

फरजाना 09927115928
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

थैंक्यू यू.जी.वी.एस। थैंक्यू वैरी मच! फरजाना जैसी साधारण गांव की लड़की को देहरादून जैसे शहर तक पहुँचाने के लिए, गाँव के सीधे साधे माहौल से एक सीधी साधी लड़की को दुनियादारी का सबक सिखाने के लिए। मैंने अपने गांव के स्कूल में किताबों को पढ़ना तो सीखा था पर जिंदगी की किताब पढ़ने का मौका UGVS से मिले प्रशिक्षण के बाद मिला, जब मुझे कदम कदम पर अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए लड़ना पड़ा। मैंने स्कूल के दिनों में लिखने का सबक जरूर सीखा था पर जिंदगी की कहानी लिखने का अदब यहीं से मिला। जब मैं हर रोज कुछ नया लिखने की चाह में अपने से संघर्ष करती थी और बार-बार हार कर भी आखिर में मैंने जीत की कहानी यहीं पर लिखी पर मेरी कहानी अभी खत्म नहीं हुई। मैं आज भी अपनी मंजिल की तलाश में जिंदगी का असली हिसाब किताब सीख रही हूं। मेरी हर सुबह इसी गुणा भाग के हिसाब किताब से शुरू होती है और हर शाम इस उम्मीद में कि मेरी जिंदगी के जोड़ घटाने का यह सिलसिला जरूर एक दिन थमेगा और मेरे जीवन में भी ठहराव आएगा.... !

हां अपनी मंजिल की ओर पहला कदम चलाने के लिए और मेरी जैसी कई फरजानाओं की ऊंगली पकड़ने और मेरे टूटे हौसलों को मजबूत आधार देने के लिए मैं तहे दिल दिल से UGVS की आभारी हूं। Thank You UGVS and Thank You ILFS! जितनी सुंदर और सहज अभिव्यक्ति इन शब्दों में अल्मोड़ा जिले के गांव रणखीला, पोस्ट बैंसखेत, ब्लॉक हवालबाग की फरजाना ने की है, उतनी ही सुंदर, सहज और सरल 22 साल की फरजाना है। उसे देखकर लगता है कि यह छोटी सी लड़की जो अपनी जिंदगी की ऊंच नीच में कदम ताल करते करते अपने बचपन को कहीं दूर भूल गयी थी, यदि UGVS के फूड एंड बीवरेज प्रशिक्षण के बाद वह थोड़ा सा भी मुस्कराती है तो उसकी सहज मुस्कान इस प्रशिक्षण की सार्थकता को व्यक्त करने के लिए काफी है।

फरजाना एक पहाड़ी परिवेश से आई मुस्लिम किशोरी है। पीढ़ी दर पीढ़ी इनका परिवार अल्मोड़ा में ही रहता है। पहाड़ों की संस्कृति में रच बस चुके फरजाना के परिवार में सभी लोग बहुत अच्छे से स्थानीय कुमांऊ भाषा को बोलते हैं। वह यहां के रीति रिवाजों एवं परंपराओं को पूरी तरह अपना बना चुके हैं। उसके परिवार में माता पिता, 6 बहनें और 1 छोटा भाई है। बहनों में फरजाना का नम्बर तीसरा है। उसकी दो बहनों की शादी हो चुकी है। छोटी बहनें स्कूल में पढ़ रही हैं। माता पिता खेती बाड़ी कर गुजारा करते हैं। परिवार में स्थाई रोजगार का कोई साधन नहीं है। खेती से दो तीन महीने का राशन निकल आता है। फरजाना ने छोटी उम्र से ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर व बुनाई करके अपनी पढ़ाई की। वह स्कूल के दिनों से ही अल्मोड़ा की स्थानीय स्वयं सेवा संस्था अमन में जन जागरूकता का काम कर रही है। यहां उसे 2000 रू. महीने मिलता था। जी तोड़ मेहनत के बाद मिले यह दो हजार रूपये परिवार के लिए बहुत बड़ी मदद थी। एक दिन अचानक फरजाना को पता चला कि ILFS नामक संस्था में 12 वीं पास लड़कियों के लिए एक प्रशिक्षण आतिथ्य सत्कार का होने वाला है। अमन संस्था में कहा गया कि लड़कियों को इंटरव्यू के लिए भेज दो। फरजाना ने गांव गांव में यह जानकारी दी और 8–9 लड़कियों को प्रशिक्षण के लिए तैयार किया। फरजाना ने सोचा मुझे 2000 रू. मिलते हैं। यदि मैं भी प्रशिक्षण ले लूं तो मुझे ज्यादा पैसा मिलेगा। मैंने घर में बात की तो थोड़ा समझाने पर वह मान गये। मैं नौ लड़कियों को ट्रेनिंग के लिए तैयार करते करते खुद ट्रेनी बन गई। अक्टूबर 2014 में एक माह के प्रशिक्षण के बाद हम गांव वापस गए तो गांव वालों ने हमारे प्रशिक्षण को सहजता से लिया।

फरजाना प्रशिक्षण के दिनों को याद कर कहती है कि वह जीवन के सबसे अच्छे दिन थे। ना कोई चिंता और ना कोई चाह बस बेफिक्री। सब कुछ नया नया सीखने को मिला। प्रशिक्षण ने हमारी उमंगें जगाई, मेरे सपनों को एक नई अंगड़ाई मिली। हम गांव से पहली बार बाहर निकले थे, मेरे पंख एक नई उड़ान भरने को फड़फड़ा रहे थे, यहां एक व्यवस्थित दिनचर्या थी, ऐसा लग रहा था कि हमारे स्कूल के दिन वापस आ गये हैं। मेरे मन में नई नई कल्पनाएं जाग रही थीं कि मुझे कैसे आगे बढ़ना है? मेरे अंदर एक अनजाना डर व्याप्त था और मैं उस पर काबू पाने की कोशिश कर रही थी। प्रशिक्षण के बाद मैंने एक नई ऊर्जा अपने अंदर महसूस की और यह भी समझा कि यदि हम चाहें तो एक सही माहौल और सही मौके का फायदा उठाकर हम कुछ भी कर सकते हैं। बस हमारे दिल की उमंग मरनी नहीं चाहिए। मुझे एक मौका UGVS ने दिया। मैं अब आत्मविश्वास से इतना भर गई हूं कि कुछ भी कर सकती हूं। अब मेरे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। मैं आपको सच बताऊं इस प्रशिक्षण के बाद मेरे बचपन में सोये और मुरझाये सपने वापस आ गये हैं। प्रशिक्षण खत्म होने के बाद हम देहरादून ILFS कार्यालय आये।

फरजाना थोड़ा उदास होकर कहती है कि इसके बाद इंटरव्यू और जॉब प्लेसमेंट का सिलसिला शुरू हुआ। मैंने कहां कहां इंटरव्यू नहीं दिया। कौन सी कम्पनी छोड़ी होगी। आइडिया, पीजा हट, सी.

सी.डी. और भी ना जाने कितनी कम्पनियां। पीजा हट हलद्वानी ने हां कर दी थी। पर आखिरी में वहां भी काम नहीं मिला। आइडिया में मैंने 11 दिन की ट्रेनिंग भी की पर बैच की कुछ समस्या आने के कारण वहां से भी बाहर निकलना पड़ा। हमें आश्वासन दिया कि कुछ दिन बाद आना। इस बीच मेरे इंटरव्यू होते रहे और हम देते रहे। यह बहुत निराशा भरा दौर था। कई बार मुझे इंटरव्यू में अस्वीकार किया गया। यहीं कॉफी कैफे डे में मेरे साथ यह दो बार हुआ। मैं खूब रोती और फिर अगले इंटरव्यू के लिए तैयार हो जाती। मेरा एक महीना कैसे कटा मैं आपको बता नहीं सकती। मैं पूरी तरह हार चुकी थी। मुझे ।LFS के विकास सर पर बहुत गुस्सा आता था कि इन्होंने सबकी नौकरी लगवा दी और मैं ऐसे ही भटक रही हूं। कभी कभी तो मन में आता कि मैं ही सबको यहां पर लेकर आई और सबको काम मिल गया है। क्या मेरी किस्मत में ऐसे ही धक्के खाना है? मेरा मन कर रहा था कि मैं वापस अपने घर चले जाऊं पर इस भय से कि मैं माँ बाप को क्या जवाब दूंगी? बहुत मुश्किलें आईं पर मैंने हार नहीं मानी। मेरा एक एक पल कैसे कटा यह तो मैं ही जानती हूं। मेरी सहेलियां मुझे दिलासा दे रही थीं। सर ने भी कहा कि शांत रहो तुम्हारे लिए कुछ अच्छा ही इंतजार कर रहा होगा। दूसरों को धैर्य रखो कहना कितना आसान होता है पर जिस पर गुजरती है यह तो वही जानता है कि धैर्य कैसे रखा जाता है। फरजाना के प्रशिक्षकों का कहना है कि यह बहुत हिम्मती लड़की है। सबकी नौकरी लग गई और मेरी क्यों नहीं ? इस बात पर यह हमसे बहुत लड़ती थी। हमें भी एक एक दिन भारी लग रहा था। सही मायने में फरजाना ने यह जॉब हमसे लड़कर ली है। एक बार तो बार बार के इंटरव्यू के बाद हम भी थक गये थे कि कैसे करेंगे? और ऐसा क्या कारण है कि इतनी प्रतिभावान होने के बावजूद इसकी जॉब नहीं लग पा रही है। आखिर में जनवरी 2015 में फरजाना को रेसकोर्स कैफे डे में बतौर टीम मेम्बर काम मिल ही गया।

फरजाना कहती है कि शुरू में देहरादून में रहना बहुत कठिन था। मैं सोशल फील्ड से आई थी और यहां होटल लाईन एकदम उसके विपरीत थी। यहां का माहौल बिलकुल अलग था। मैं बड़ा परेशान रहती और एक दिन मैंने तय किया कि अब तो कुछ करके ही घर जाना है। मैं सच में बहुत लड़ी हूं इन दिनों में खुद से और अपने हालतों से। एक लड़की का संघर्ष कितने मोर्चों पर एक साथ चलता है इस बात को वही समझ सकता है जो एक लड़की की तरह संवेदनशील हो। मैं अखबारों में पढ़ती थी कि महिला और पुरूष में भेदभाव नहीं हो पर क्या सिर्फ बोलकर यह खत्म हो जायेगा? समाज में हर कदम पर एक लड़की को अपना रास्ता खुद तलाशना होता है। फरजाना चुपचाप कहीं शून्य में खोकर बताती कि मैं सोचती थी कि कैसे करूंगी और क्या करूंगी और कहां फंस गई? पर अब ठीक लग रहा है। पहले तो देहरादून ही बेकार लग रहा था लेकिन अब सामंजस्य बैठाना आ गया है। कभी कभी सोचती हूं हम गांव की लड़कियां कभी जंगलों में घास लकड़ी के लिए दौड़ती, कभी खेत खलिहानों में, कभी सहेलियों से गुनगुनाते, हर वक्त चलना ही तो एक पहाड़ी लड़की की जिंदगी होती है पर यहां देहरादून की डामर की सड़कों से निकलती गरमी और हर जगह चलती मोटरों और बाईकों में दौड़ते लोग पता नहीं यह दौड़ कहां के लिए है और क्यूं लोग इतना दौड़ रहे

हैं? यह प्रश्न मुझे बहुत परेशान करते पर अब मेरी जिंदगी में ठहराव आ गया है। मैं यहां काम करूंगी क्योंकि अब मैंने काम सीख लिया है। हां मेरे पास एक बड़ी ताकत है कि मैं बी.ए. पास हूं। मैंने तय किया है कि जब थोड़ा घर की परिस्थितियां मेरे काबू में होंगी तो मैं वापस गांव जाकर सोशल फील्ड में ही काम करूंगी। गांवों में काम करना मेरी ताकत है। गांवों में काम करते हुए बहुत शांति मिलती है। फरजाना कहती है मेरे ऊपर पैसा किसी और ने खर्च किया है। मैं उनका अहसान कभी नहीं भूल सकती। वह सहजता से कहती है कि एक दिन विकास सर ने मुझे कहा कि तुम सबसे अलग हो और जो ताकत तुम्हारे पास है वह किसी के पास नहीं है। तो मुझे अचानक याद आया कि हां मैं बी.ए. पास हूं और मेरे लिए इस क्षेत्र में भी बहुत रास्ते हैं और अन्य से कहीं ज्यादा हैं। सर ने ही मुझे समझाया कि होटल लाईन में सोशल वर्क नहीं होता यह किसने कहा ? तुम यहीं रहकर उन संभावनाओं को खोजो। बस मेरा मन ही बदल गया।

मैं आज बहुत अच्छे से अकेले ही कॉफी डे को चला लेती हूं। सुबह का सारा प्रबंधन मैं ही करती हूं और बहुत खुशी खुशी करती हूं। मैं और ममता आर्या साथ साथ रहते हैं। इससे हमारे खर्चे बंट जाते हैं। परदेश में कोई तो सहारा चाहिए। वह बताती है कि एक दिन हम दो लड़कियां डी.एल. चौक में खो गये। हम बार बार गोल चक्कर पर घूमते और वापस वहीं आ जाते। ऐसे करते करते रात हो गई। हम डर के मारे किसी से पूछ भी नहीं रहे थे। अंधेरा होने के साथ हमारा रोना छूटने लगा। सारे लोग हमें देख रहे थे कि कहां से आई यह गंवार लड़कियां। अचानक हमें कुछ ILFS की ड्रेस पहने लड़कियां नजर आईं और हम चुपचाप उनके पीछे पीछे चल पड़े। बस इस तरह से होस्टल पहुंचे। इस घटना ने मुझे बहुत सिखाया। फरवरी 2015 में राजभवन में होने वाले बसंत उत्सव से मेरी जिंदगी को एक नया मोड़ मिला!

उस दिन UGVS के साथ राजभवन गये। हम तो हैरान ही रह गये वहां की चकाचौंध देखकर, फूलों की प्रदर्शनी ने तो मुझे मेरा गांव ही याद दिला दिया। हम राज्यपाल जी से भी मिले। उनको अपने अनुभव बताए। हमने कभी नहीं सोचा था कि हम कभी राज्यपाल से मिलेंगे। है ना हैरानी की बात। पहले तो कभी गांव से नहीं निकले और बाद में सीधे राजभवन ही पहुंच गये। राजभवन के हरे भरे इलाके को देखकर मुझे तो अपना गांव ही याद आ गया और देहरादून में अपना गांव महसूस कर मेरे तो पंख फड़फड़ाने लगे और ऊंचा उड़ने के लिए। आप देखना मैं बहुत ऊंचा ऊड़ूंगी और अपने साथ बहुत से बच्चों को भी आसमान की सैर कराऊंगी। जब मुझे कुछ पता नहीं था तब मेरी बेवकूफी के प्रयासों से नौ लड़कियां गांव से बाहर आई। अब तो मेरी भी आंख कान और दिमाग खुल गया है। मैं इतना आगे बढ़ूंगी कि मुझे देखते ही लोग खुद से अपने पांवों पर खड़े होने के लिए कसमसाने लगें। यही मेरी UGVS और ILFS के लिए गुरू दक्षिणा होगी। मैं यहां पर मैनेजर बनना चाहती हूं। मेरी यात्रा बहुत कठिन है। मैंने सोचा भी नहीं था कि मेरे घर के हालत मुझे इतना दूर ले जाएंगे। मैं तो पूरी एक कहानी बन चुकी हूं। मेरी बहनें कहती थीं कि दीदी आप थक जाओगे इतना

बोझ उठाते उठाते क्योंकि मेरे पिताजी बीमार रहते हैं। हम लोग मुसलमान हैं पर उसके बावजूद मेरा परिवार बहुत खुले विचारों का है। मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। मैं परिवार के लिए ही सब कुछ करना चाहती हूं। मेरे पिता ने किसी तरह हम सबको पढ़ाया छोटी मोटी दुकान चलाकर! फरजाना के प्रशिक्षकों ने बहुत सुंदर बात कही कि 'फरजाना हमारे लिए बहुत कीमती है। फरजाना एक बहुत सुंदर किरदार है हमारे व्यवसायिक प्रशिक्षण की यात्रा का क्योंकि उसके अंदर जो जज्बा और धैर्य है वह बहुत कम लोगों में होता है। यह हमारे श्रेष्ठ पांच किरदारों में एक है।' यह सुनते ही फरजाना की स्वाभाविक मुस्कराहट उसके होठों से छलकने लगी। वह बहुत ही और समझदार लड़की है। फरजाना में काम करने का जबरदस्त हौसला है। वह बाहर से जितनी सरल और सीधी दिखती है उसकी कहानी सुनकर महसूस होता है कि वह अंदर से बहुत मजबूत है। वह बार बार हारी अपनी इस यात्रा में पर टूटी नहीं! लड़ती रही खुद से, हालत से और आखिर में आज रेसकोर्स के कैफे डे में उसे ब्रू मास्टर की प्रमोशन लेकर अपनी जिम्मेदारियों को मुस्कराते हुए निभाते देखना एक सुखद अनुभव है। फरजाना को आज 6000 रू.तनख्वाह हाथ में मिलती है। वह तनख्वाह से नियमित बचत करके 2000 रू.घर भेजती है। उसका पी.एफ. एवं इंश्योरेंस का पैसा भी कटता है। अब वह अपनी अगली प्रमोशन हेतु जी तोड़ मेहनत कर रही है। फरजाना अपने पांवों पर खड़े होकर बहुत खुश है।

फरजाना के पिता बेटी की नौकरी से खुश हैं। वह सबसे कहते हैं कि मेरी बेटी मेरा सहारा बन चुकी है। पिता की खुशी और उनका मान अपनी बेटी के कारण बड़े, किसी बेटी के लिए इससे बड़ी बात क्या हो सकती है। फरजाना कहती है कि मैंने बहुत सपने देखे हैं। सुंदर सपने देखना मेरी ताकत है और देखने में हर्ज भी क्या है? जब सुंदर देखेंगे तभी तो वह पूरे भी होंगे मैं इनको सच करना चाहती हूं। इस नौकरी के बाद इतना हौसला तो आ ही गया है कि चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं पर मैं उनसे नहीं डरूंगी। मैं आगे बढ़ना चाहती हूं बहुत आगे! इसके बाद वह खामोश हो गई। थोडी देर बाद उसने बड़ी सहजता से कहा मैं एक अच्छी एक्टर हूं! देखिए जिंदगी में सबसे सुन्दर और मंझा हुआ कलाकार वह है जो असल जिंदगी के किरदारों को बखूबी निभाने की कुव्वत रखता हो। फरजाना से कुछ समय कॉफी कैफे डे में बात करना, उसका संजीदा और गंभीर व्यवहार और बीच बीच में मुस्कराती दंत पक्तियां मानो बहुत कुछ कहने को आतुर हों। खामोशी के कुछ पलों के बीच जब फरजाना से अलग हुए तो वह शांति से बोली थैंक्यू यू.जी.वी.एस.! मुझे गांव से यहां देहरादून तक पहुंचाने के लिए। फरजाना के व्यक्तित्व में एक अजब सादगी है, एक गजब की संतुष्टि है और जिंदगी जीने की एक संजीदगी है। ईश्वर फरजाना के जीवन की इस सबसे बड़ी ताकत को बनाये रखे।

ऐसी भी क्या लुकाछिपी!

चन्द्रा मनराल 09758631896
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

मेरी कहानी UGVS के हाथों लिखी गई। मेरी बदली जिंदगी की स्लेट पर सुंदर ईबारत लिखने वाले हाथ कोई और ही ही हैं। यह तो मुझे आज ही मालूम हो रहा है कि मुझे यहां तक पहुंचाने वाले लोगों के पीछे किसी और के हाथ छिपे हैं। अरे ऐसी भी क्या लुकाछिपी! UGVS को सामने आने में इतना वक्त क्यों लगा? आप पहले सामने आये होते तो हमें भी इस अनजान शहर अपना कोई लगता। हमारा डर बहुत पहले खत्म हो गया होता। मैं UGVS को यूं अचानक सामने आया देख खुश नहीं हूं बल्कि संतुष्ट हूं कि हम सही हाथों में हैं और सही दिशा में जा रहे हैं। मुझमें अब इस दुनिया में भले बुरे से टकराने की, दुनिया को अपना बनाने की और अपने टूटे बिखरे बेरंग सपनों को जोड़ने और उन्हें अपने मनमाफिक रंग देने की हिम्मत और हौसला सा आ गया है। लड़कियों की दुनिया बहुत छोटी और रूपहली होती है, उसमे ढेरों कल्पनाएं होती हैं और कल्पनाओं को हकीकत में बदलने का एक हुनर भी छिपा होता है। जिंदगी की बाधाओं से पार पाना भी मैंन सीख लिया है।

UGVS आप आये, आप मिले और आपने हमारा हालचाल पूछा। बहुत अच्छा लगा कि इस भीड़ भाड़ भरे शहर में कोई अपना सा है। यूं ही आते रहना। आप गांव से यहां तक लाये पर हमें बहुत दूर जाना है। आपको उस कठिन डगर में बार-बार हमेशा हमारे लिए खड़ा होना पड़ेगा। किसी काम के लिए नहीं बल्कि अपनी दो बातें सुनाने के लिए और हमारी सुनने के लिए.... । इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने वाली अल्मोड़ा जिले के रणकुना गांव, तहसील भिकियासैंण की 19 साल की चन्द्रा मनराल कितनी समझदार होगी। इसका अंदाजा तो आप इससे खुद ही लगा सकते हैं और कुछ उसकी कहानी में लगाएंगे कैसे उसने UGVS के सामने भी एक नया रोड मैप रख दिया है कि कौशल वृद्धि प्रशिक्षणों को कैसे टिकाऊ बनाया जा सकता है।

चन्द्रा ने UGVS के कौशल वृद्धि कार्यक्रम के अर्न्तगत फूड एंड बीवरेज ट्रेड में प्रशिक्षण लिया है। साधारण परिवार की चन्द्रा का जीवन बहुत सरल नहीं है। देखने में छोटी कद काठी की यह दुबली पतली, चुप चुप सी लगने वाली लड़की इतनी बातें जानती होगी यह उसे देखकर तो नहीं लगता। चन्द्रा के गांव में खेती बाड़ी उत्पादक नहीं है। साल भर मेहनत के बाद तीन चार महीने का राशन मिलता है। परिवार में माँ पिताजी, एक छोटा भाई और बहन है। पिताजी परिवार की गुजर बसर के लिए हरियाणा के किसी शहर में पिछले सात सालों से एक होस्टल में खाना बनाने का काम करते हैं। उसके पिता को 6000 रू. मिलते हैं। छोटी बहन ने 12वीं और भाई ने 9वीं के पेपर दिये हैं। पिता ने परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ उठाकर चन्द्रा को सन् 2014 में 12वीं पास कराया। चन्द्रा एक होनहार लड़की है। इंटर में उसने विज्ञान विषयों से द्वितीय श्रेणी में पास किया। वह बी.काम करके एकाउंटेंट बनना चाहती थी। पहले वह पापा के पास ही रहते थे पर उनकी नौकरी छूटने के कारण यह बच्चे गांव वापस आ गये। गांव में दादा और चाचा-चाची हैं। यह बहनें खेती बाड़ी और पढ़ाई साथ साथ करती हैं। स्कूल जाने के लिए घर से पैदल पौना घंटा लगता है।

चन्द्रा बताती है कि 12वीं पास करके मैं समझ गई थी कि पिताजी की सार्मथ्य हमको पढ़ाने की नहीं है। माँ ने भी बोला अब हम नहीं पढ़ा सकेंगे। मैंने कहा कोई बात नहीं। आप भाई बहनों को पढ़ाओ और मैं अपनी पढ़ाई खुद करूंगी। बस मुझे काम के लिए बाहर भेज दो। चन्द्रा ने यह तो कह दिया पर भेजेंगे कहां और कब? यह किसी के भी समझ से परे था। चन्द्रा का मन आगे पढ़ने के लिए कसमसा रहा था और घर के हालत उसे पीछे धकेल रहे थे। मई 2014 की बात है एक दिन चन्द्रा की तो लॉटरी ही लग गई। चन्द्रा को गांव के एक प्रमोद नामक लड़के से पता चला कि देहरादून की कोई संस्था ILFS गांव के 12वीं पास बच्चों के लिए होटल मैनेजमैंट की ट्रेनिंग कर रही है। गांव के पूरन बिष्ट जी ने गांव-गांव तक यह संदेश भेजे थे। बाद में पता चला कि पीजा हट की ट्रेनिंग हो रही है। पहले तो बहुत डर लगा कि यह पीजा हट क्या होता है? बाद में लड़कियों का ग्रुप तैयार हुआ तो हमने हल्द्वानी में 36 दिन की ट्रेनिंग ली। प्रशिक्षण के दिन हमने हंसी खुशी बिताये। चन्द्रा कहती है कि प्रशिक्षण के दिनों में 'चिल्ड्रन डे' मनाना मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन था। हमने मिल जुलकर उस उत्सव में खूब आंनद उठाया। हम लोग नर्सिंग वाली लड़कियों से मिलने गये थे।

प्रशिक्षण के बाद पीजा हट के लिए मेरा साक्षात्कार हुआ और मैं पास हो गई। मैं 14 दिसम्बर 2014 में इंदिरानगर के पीजा हट में आ गई थी। हमारे गांव में तो छोटे छोटे घर होते हैं। चन्द्रा की पहली प्रतिक्रिया थी कि यहां तो बाप रे बाप कितना बड़ा होटल है। यहां तो सारे लड़के हैं और सिर्फ एक ही लड़की है। एअर कंडीशनर जैसी मशीन के बारे में तो सपने में भी नहीं सोचा था। हमारे गांव में तो पूरा गांव ही एअर कंडीशनर है। बहुत अजीब लगा इतने लोगों से मिलना जुलना और बात करना। मेरी बदली दिसम्बर 2014 को पीजा हट, आई.एस.बी.टी. रोड़ पर हो गई। तब से मैं यहीं पर हूं। पहले तो काम आता ही नहीं था पर अब तो पीजा और उसका बेस बनाना अच्छे से सीख गई

हूं। मुझे 6000 रू. तनख्वाह मिलती है और फंड व इंश्योरेंस का पैसा कटता है। बहुत अजीब लगता है सोचकर कि मेरे पिताजी को भी इतनी ही तनख्वाह मिलती है पूरी जिंदगी काम करके और मेरे को शुरू में ही इतने पैसे मिल रहे हैं। यह सोच मेरे मन में नौकरी के लिए सम्मान बढ़ गया है। मैं मेहनत से काम करके आगे बढ़ना चाहती हूं और एक दिन इसी पीजा हट में मैनेजर बनना चाहती हूं। मैंने यहां के काम सीख लिए हैं। मैंने जरूरत पड़ने पर अच्छे से कभी कभी पूरा रेस्टोरेंट अकेले चलाया है।

चन्द्रा बताती है कि मुझे पहली तनख्वाह मिली तो मैं बड़ी खुश हुई। मैं पहले मंदिर गई । मैंने पहली सैलरी अपने पर खर्च की। यहां रहने का इंतजाम करना था। मैंने घर फोन करके बता दिया था कि इतनी सैलरी मिली है और मैं ऐसे ऐसे खर्च कर रही हूं। मैं नौकरी लगने के बाद एक ही बार घर गई हूं। गांव और घर के लोग मुझे देखकर बहुत खुश हुए। सबने मेरा ऐसे स्वागत किया जैसे मैं कितनी बड़ी नौकरी पर लग गई हूँ। यह देखकर मुझे बड़ा गर्व महसूस हुआ कि काम चाहे छोटा हो या बड़ा पर मेहनत की कमाई की बड़ी इज्जत होती है। सब लोग मुझसे बहुत सी बातें पूछते थे। मेरी माँ इस भीड़ में एकदम चुप रहती थी। वह सबसे ज्यादा खुश थी। बात बात में वह रोने लगती थी। मेरी छोटी बहनें भी बहुत खुश थी। वह कहने लगी दीदी हमारे लिए भी काम खोजो पर मैंने उनको समझाया कि अभी तुमको पढ़ना है। घर से बाहर निकलकर इतनी समझदारी तो मेरे में आ ही गई थी कि पढ़ाई की कीमत क्या है? चन्द्रा बताती है कि घरवालों ने मेरी बड़ी खातिरदारी की। यह सब देखकर मुझे लगा कि मेरी तो कीमत ही इस नौकरी ने बढ़ा दी है। गांव की लड़कियों की नजरों में तो मैं हीरो बन गई थी। सब मुझसे बात करने को उत्सुक होते और खूब बातें पूछते। ज्यादातर लड़कियां काम करना चाहती हैं और उसके लिए मौके खोजना चाहती हैं। मेरी नौकरी पर आने का बड़ा असर इलाके में हुआ। मैं अपने गांव के प्रधान जी से भी मिली वह बोले बेटा मैं तेरे वजह से बहुत खुश हूं। अपनी नौकरी ठीक से करके गांव का नाम रोशन करना। गांव में सब कहते हैं कि इसने बहुत अच्छा काम किया है। यह गांव की पहली लड़की है जो गांव से बाहर अकेले गई है। इसने सबके लिए रास्ते खोल दिये हैं।

चन्द्रा ने बताया कि पहले मैं बोलती नहीं थी, पर अब मैं बहुत खुश हूं। देखो बिना डरे और झिझके कितना बातचीत कर लेती हूं। पहले मेरा रंग काला था पर अब मैं गोरी हो गई हूं। मेरे चेहरे पर चमक आ गई है। जब मन में खुशी होती है तो वह चेहरे पर तो दिखती ही है ना। मेरी भाषा भी अब शहरों जैसी हो गई है। पहले तो मैं अपने गांव की बोली बोलती थी। हिंदी बोलते वक्त हर बात पर कुमांऊ बोली का ठहरा-ठहरा! अब मैं पीजा हट के लायक बन गई हूं। मैं पीजा हट में डो-आटा बनाना, टेबिल का आर्डर तैयार करना और पूरी सुबह की पाली को अकेले ही थाम लेती हूं। चन्द्रा ने बताया कि प्रशिक्षण से पहले की चन्द्रा और आज की चन्द्रा में बहुत अंतर आ गया है। मेरा रहन सहन बदला है। समाज में कैसे रहना है और कैसे पहनना ओढ़ना है यह सब मैंने सीखा है। मेरी

बोलचाल और भाषा में बहुत अंतर आया है। मैं खुद को विश्वास से भरा पाती हूँ। मेरे मन में एक इच्छा और भरोसा जागा है कि अब मैं अपने भाई बहनों को पढ़ा सकती हूं। मेरे हाथ में पैसा आने से मैं अपनी जरूरतें पूरा कर सकती हूं। मेरा एक सपना प्रबल हो गया है कि मेरा भाई भी अब पढ़ लिख सकेगा और नौकरी करके पूरे परिवार का सहारा बनेगा। मैं अपने भाई पर ही अपनी तनख्वाह खर्च करना चाहती हूं। पीजा हट में एक बात है कि यह बार बार अच्छे काम करने पर शाबासी देते हैं। कभी जरूरत पड़ने पर मैं दूसरों का काम भी खुशी से कर लेती हूं। चन्द्रा के ड्रैस पर एक बैच लगा था, इसके बारे में पूछने पर उसने बताया कि वह 'डो एक्सपर्ट' बन गई है। डो एक्सपर्ट याने पीजा का आटा बनाने के जो अन्तर्राष्ट्रीय मानक हैं उसने उनके अनुसार डो बनाने में महारत हासिल कर ली है। यह बैच प्राप्त करना बड़ी टेड़ी खीर है। 'पी' कैप में स्मार्ट सी चन्द्रा को देखकर उसके प्रशिक्षक उसे पहचान ही नहीं पाये कि यही वह सीधी सी लड़की है। यह तो हिंदी भी बहुत अच्छी बोल रही है। इसका तो पूरा व्यक्तित्व ही बदल गया है। चन्द्रा बहुत ही सौम्यता से बात करने वाली लड़की है। अपनी बात को बहुत खूबसूरती से वह रखती है। उसने पीजा हट के साथ साथ समाज में उठने बैठने के तौर तरीके भी बड़ी खूबसूरती से सीख लिए हैं। चन्द्रा के प्रशिक्षक बताते हैं कि डो एक्सपर्ट का यह बैच ILFS के आज तक निकले किसी बच्चे के पास नहीं है। हमें गर्व है कि उसने इतनी जल्दी ही विश्वस्तरीय मानकों के अनुसार डो बनाना सीख लिया है। लोग सालों काम करने के बाद भी डो बनाना नहीं सीख पाते हैं क्योंकि 'डो' बनाना ही पीजा बनाने की मूल कला है।

चन्द्रा बताती है कि यहां पर प्रमोशन के कम मौके हैं। मैंने तय किया है कि मैं बी.ए. करने तक यहां नौकरी करूंगी। तब तक मुझे काम और जिंदगी दोनों का अनुभव हो जायेगा। हमें गांव मेंअंग्रेजी नहीं पढ़ाते हैं इसलिए हमारी अंग्रेजी कमजोर है। जो यहां मैनेजर बनते है उनको अच्छी अंग्रेजी आनी चाहिए। मैं सोच रही हूं कि अंग्रेजी बोलने का कोई कोर्स करूं। मेरी योजना है कि यहां से शाम को छुट्टी होने के बाद मैं अंग्रेजी का कोर्स करूंगी। फिर मैं भी एक दिन मैनेजर बन ही जाऊंगी। यह बताते हुए चन्द्रा के चेहरे पर एक विनम्र सेनापति सा विजयी भाव आ गया जो अपनी सफल रणनीति के बल पर अपनी भविष्य में आने वाली विजय को साफ साफ देखकर अपने में ही आत्ममुग्ध हो रहा है।

मैं यहां अकेले हूं और अपने ही दम पर हूं। सच पूछो यहां मेरा मन नहीं लगता है, पर गांव में खाली बैठकर माँ बाप पर बोझ बनना कोई अच्छी बात नहीं है। मैं हर छुट्टी के दिन मंदिर जाती हूं। मेरे मन में एक बात आती है कि मैं अपने भाई बहनों को अपने साथ रखकर पढ़ाऊं पर मैं खर्चा कैसे उठाऊंगी उनका ? मैं जब से आई हूं तब से एक बार ही घर गई हूँ। मैंने अपनी माँ को 4000 रू.दिये। माँ के लिए साड़ी, पूरे परिवार के लिए कपड़े व पापा के लिए सैमसंग का मोबाइल भी खरीदा। बहन को 500 रू. दिये। अपने पड़ोसियों के लिए और चाची लोगों के लिए मिठाई खरीदी। चाची के लिए भी एक साड़ी व उनके बच्चों के लिए खिलौने खरीदे। उनके लिए कौन ले जायेगा ? चाचा

तो गांव में ही रहते हैं। मेरे मन में एक बात तो गहरे से बैठ गई है कि मुझे अपने परिवार के लिए कुछ करना है। मेरे जाने से चाचा बहुत खुश हुए। मेरी ऐसी आवभगत हो रही थी, मानो कोई फौजी बेटा अपने घर बहुत दिनों बाद आया हो।

प्रशिक्षण के बाद हमारी राहें खुल गई हैं। मैं पहले से बहुत अच्छा महसूस कर रही हूं। मैं गांव से बाहर आ गई हूं और भाई बहनों को लाने की योजना बना रही हूं। हमारा गांव अभी बहुत पीछे है। मैं चाहती हूं कि सब लोग आगे बढ़ें और अपनी पढ़ाई जारी रखें। इस नौकरी से मेरी सपने देखने की शुरूआत हो गई है। बहुत अच्छा लग रहा है। मैंने आज तक इस तरह से कभी किसी से बात नहीं की थी। मैं बचपन से बाहर आना चाहती थी और बाहर आकर बहुत खुश हूं। मैं अपने भाई को कक्षा 11वीं में यहीं पढ़ाना चाहती हूं। बहन को नर्सिंग का कोर्स कराना चाहती हूं। मैंने सोचा है हम दोनों बहनें नौकरी करके अपने भाई को अच्छे से पढ़ाकर इंजीनियर बनाएंगे। इतनी मंहगाई में मैं अकेले नहीं कर सकती। हमें आने वाले समय के लिए टाईम टेबिल बनाना होगा। मेरी नौकरी पर आने के बाद परिवार का प्यार बहुत बढ़ गया है। वह मेरे लिए चिंता करते हैं। मैं अकेले रहती हूं ना!

चन्द्रा बहुत ही समझदार, स्पष्ट सोचने और बोलने वाली लड़की है। उसकी दृष्टि बहुत ही पैनी और दूर तक देखने वाली है। उसको इस नौकरी से इतना हौसला मिला है कि कैसे अपने परिवार को साथ लेकर आगे बढ़ना है। इतनी छोटी सी उम्र में इतना हौसला और साहस रखना बहुत बड़ी बात है। चन्द्रा के बारे में उसके साथी हरीश सती ने बताया कि वह जब शुरू में यहां आई थी तो वह बिलकुल चुपचाप रहती थी। अब तो यह यहां लोगों को बहुत खुश रखती है। यह बहुत ही मिलनसार है। इसने बहुत जल्दी अपना काम सीख लिया है। इसका तो व्यक्तित्व ही बदल गया है। इसे देखकर बहुत खुशी होती है। चन्द्रा अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ेगी। चन्द्रा किसी से डरती भी नहीं है। बहुत सरलता से अपनी बात बोल देना इसकी आदत है। चन्द्रा को देखकर उसके प्रशिक्षक बहुत खुश हैं लेकिन चन्द्रा अपने को यहां तक पहुंचाने वाले UGVS से मिलकर उनसे भी ज्यादा खुश है। वह बड़ी सहजता से लड़ने वाले अंदाज में कहती है कि हमने तो सोचा ही नहीं था कि हम कभी UGVS से मिलेंगे। हमें तो पता ही नहीं था कि हमारी इस ट्रेनिंग के पीछे कौन छिपा है? ऐसी लुकाछिपी तो नहीं होनी चाहिए। हमें UGVS से मिलने कोई आया है। यह अहसास ही अपने आप में कितना गुदगुदाने वाला है कि इस अनजान शहर में हमारा भी कोई है। आज पहली बार मुझे मिलने कोई आया है। इस अनजान शहर में कोई मुझे जानता है यह बात बहुत गहरे से दिल को छू गई है। UGVS आखिर ऐसी लुकाछिपी क्यों?

और भी हैं राहें!

जगदीश कड़ाकोटी 09837620473
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

मैंने अपनी माँ से सुना था कि किसी को देखकर आप अंदाजा नहीं लगा सकते कि उस पंछी में क्या क्या गुण छिपे हैं। पहाड़ों की सुन्दर वादियों में बसे अल्मोड़ा जिले के भतरौंजखान गांव, ब्लॉक भिकियासैंण के 20 साल के शर्मीले नौजवान जगदीश कड़ाकोटी से मिलकर यह पंक्तियां सहज याद आ गईं। जगदीश बहुत ही खामोश लड़का है मगर साथ ही उतना ही फुर्तीला भी है। वह चुप रहकर काम करने वाला खिलाड़ी है। जगदीश चुप तो रहता है पर उसकी आंखें हर पल अपनी खामोशी में भी कुछ बोलने को बेताब रहती हैं। काम करते हुए उसके शरीर की भाषा और काम करने के उसके अंदाज से उसे भीड़ में भी अलग से पहचाना जा सकता है। दुर्गम क्षेत्र से आने वाले जगदीश का बचपन कठिनाईयों में गुजरा और उसने जीवन में बहुत उतार चढ़ाव देखें हैं जिससे वह वह छोटी उम्र में ही समय से पहले ही समझदार व परिपक्व हो गया है। जगदीश की यह समझदारी और परिपक्वता उसकी हर बात व व्यवहार में झलकती है।

जगदीश का बचपन गांव में बीता। पिता साधारण खेती बाड़ी से गुजर बसर करते थे पर खेती में इतना अनाज नहीं होता था कि इससे परिवार का पालन हो सके। वह काम की तलाश में जयपुर चले गये। वहां वह किसी प्राइवेट कम्पनी में सुपरवाईजर का काम करने लगे। जगदीश ने ताड़ीखेत से दसवीं की परीक्षा पास की और वह भी परिवार के साथ जयपुर चला गया। जगदीश ने टैगोर भारती सीनियर सैकेंडरी स्कूल जयपुर राजस्थान से सन् 2013 में 12वीं की परीक्षा पास की। अब उसके जीवन में एक चुनौती थी कि वह अब आगे क्या करे? पिता की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह होनहार जगदीश को आगे पढ़ा सकते और जगदीश की पढ़ाई इतनी नहीं थी कि उसे कुछ अच्छा काम मिल सके। वह इसी उहापोह की मन:स्थिति में अपने गांव भतरौंजखान चला आया। जगदीश अपने

जीवन की प्राथमिकताओं के प्रति बहुत स्पष्ट है। उसने जीवन के कुछ साल जयपुर में बिताने के बाद यह तो तय कर लिया था कि जो भी काम करना है वह अपने ही गांव और पहाड़ों में करना है। सिर्फ काम के लिए अपने लोगों से दूर रहना कोई अच्छी बात नहीं है। जगदीश शर्माते हुए बताता है कि दरअसल मेरे माता पिता तो जयपुर में हैं पर मेरे दूसरे माता पिता गांव में हैं। उनके बारे में वह रहस्यमयी अंदाज में बोला कि मेरी बड़ी माँ याने मेरी मौसी के कोई संतान नहीं है। उन्होंने ही मुझे पाला पोसा और पढ़ाया लिखाया है। मेरे मौसा जी आर्मी में हैं इसलिए उनकी देखभाल करना भी मेरी जिम्मेदारी है। मैं जयपुर रहकर उनको नहीं देख सकता था इसलिए वापस गांव चला आया।

गांव में अगस्त 2014 में अचानक उसे अपने दोस्तों से पता चला कि देहरादून की एक कम्पनी ILFS के लोग गांव के 12वीं पास लड़कों को कोई ट्रेनिंग देकर होटल में नौकरी दिलायेंगे। जगदीश तो जैसे किसी मौके की तलाश में था। उसने इंटरव्यू दिया और पास होने पर वह फूड एंड बीवरेज ट्रेड का प्रशिक्षण लेने देहरादून चला आया। वह उत्तराखंड में ही काम करना चाहता था और यह तो उसकी लाटरी निकलने जैसा मौका था। ट्रेनिंग भी फ्री में करने को मिल रही थी। प्रशिक्षण केन्द्र में आकर उसने अंग्रेजी बोलना, कम्प्यूटर व होटल लाईन की बारीकियां सीखीं। वहां उसे आर्मी कैंट में खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने का मौका मिला जिसका उसने पूरा आनन्द उठाया। एक माह के प्रशिक्षण के बाद उसमें यह आत्मविश्वास आ गया कि अब मैं शायद वह सब कुछ कर सकूंगा जो बचपन से सोचता था। उसने कैम्पस इंटरव्यू में हिस्सा लिया। उसका चयन पहली ही बार में कैफे कॉफी डे में 'टीम मेम्बर' के लिए हो गया और उसे सितम्बर 2014 में देहरादून में दर्शनलाल चौराहे के कॉफी डे में काम करने का मौका मिला।

घर वालों ने कहा कि अपना काम मन लगाकर करना और एक ही लाइन में आगे बढ़ने की कोशिश करना। जगदीश बताता है कि यह बात मैंने गांठ बांधकर रख ली कि चाहे कितनी भी मुसीबत क्यों ना आये वह अपने काम को नहीं छोड़ेगा। उसकी पहली तनख्वाह रू.4700 थी। पहली तनख्वाह की ऐसी कोई खुशी मन में नहीं हुई। हां एक बात जरूर दिमाग में आई कि यह मेरा पहला कदम है और मेरी कोशिश रहेगी कि मैं नौकरी ठीक से कर सकूं। पहली और दूसरी तनख्वाह तो उधार चुकाने में ही खत्म हो गयी पर अब मेरी जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आ चुकी है। मेरे पर कोई उधार नहीं है। आज जगदीश अपनी मेहनत और लगन से 'ब्रू मास्टर' याने काफी बनाने का विशेषज्ञ बन चुका है और उसकी तनख्वाह रू. 6049 हो चुकी है। उसकी तनख्वाह से प्राविडेंट फंड और इंश्योरेंस का पैसा कटता है। जगदीश की अगली मंजिल ओ.टी. (औपरेशनल ट्रेनर) लेबल 1 व 2 की परीक्षा पास करने की है जिसे पास करके वह सहायक मैनेजर और बाद में कैफे डे का मैनेजर बन जायेगा। मैनेजर बनने पर उसकी तनख्वाह लगभग 15000 रू.होगी और यदि वह पूरी मेहनत करेगा तो इसमें उसको लगभग डेढ़- दो साल का वक्त लगेगा। जगदीश कैफे डे में अपने आगे बढ़ने की संभावनाएं तलाश चुका है और उनको पूरा करने में जुटा है। जगदीश से पूछने पर कि वह कैसे इतनी दूर की प्लानिंग इतनी सहजता से कर रहा है तो उसने शांति से बताया कि हमारी ट्रेनिंग के

दौरान हमें इस लाइन के बारे में सब बताया गया था। जब मैंने कॉफी डे में आकर यह सब समझा तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ता ही गया और अब मैं अंदर से और मजबूत हो गया हूं। अब एक दिन मैं कॉफी डे में मैनेजर बन जाऊंगा। यहां आकर मुझे प्रैक्टिकल ज्ञान तो हो ही गया है पर बात करने में अभी थोड़ी घबराहट होती है। मेरी बचपन से बोलते हुए थोड़ी जुबान अटकती है सो घबराता हूं कि कुछ गलत ना बोल दूं। हां एक बात बहुत अच्छी हो गयी है कि मैंने ग्राउंड लेबल से काम शुरू किया है सो मुझे सब इन-आउट का पता हो गया है, इसलिए मैं सबको कंट्रोल कर सकता हूं और सबकी गलतियां सुधारने की कोशिश करते हुए अपने साथ काम करने वालों साथियों को रास्ता दिखा सकता हूं। जगदीश अपने काम और अपनी अभी तक की यात्रा से बहुत संतुष्ट है। वह यहां से काम नहीं छोड़ना चाहता क्योंकि वह यहां सैकेंड इन्चार्ज बनकर इस काम में निपुण हो चुका है। कई बार तो वह अकेले ही पूरा कॉफी डे चलाता है, जिसमें ग्राहकों से आर्डर लेने से लेकर, आर्डर तैयार करना, सर्व करना, बिलिंग आदि सब काम शामिल होते हैं।

जगदीश देहरादून में घंटाघर में एक भीड़ भाड़ वाले कॉफी डे में काम करता है। जगदीश के दोस्त बताते हैं कि कई ग्राहक सिर्फ जगदीश के व्यवहार और उसके हाथ की कॉफी के स्वाद की वजह से यहां आते हैं। उनकी ख्वाहिश होती है कि हम सिर्फ जगदीश के ही हाथ की कॉफी पियेंगे। जगदीश अपने काम में इतना निपुण हो चुका है कि उसे कभी भी कम्पनी की ओर से मिले लक्ष्यों को पूरा करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। जगदीश बताता है कि मैंने यहां आकर एक बात बहुत अच्छे से समझी है कि 'हमारा व्यक्तिगत व्यवहार ही हमारी सफलता की कसौटी है'। मेरे व्यवहार के कारण ही ग्राहक मेरी बात सुनते और मानते हैं। जब मेरे ऊपर ज्यादा बिक्री का लक्ष्य होता है तो मैं अपने ग्राहकों को फोन कर कॉफी पीने हेतु बुलाता हूं । इस साल 31 दिसम्बर को 35000 रू. की बिक्री का लक्ष्य था और अपने व्यवहार के चलते ही मैं वह लक्ष्य पूरा कर पाया। जगदीश सहजता से यह बताता है मानो पैंतीस हजार की बजाय 35 रू. की कॉफी बेचने की बात चल रही हो। देहरादून में कई ऐसे ग्राहक हैं जो सिर्फ मेरी तलाश में सिर्फ उसी कॉफी डे में जाते हैं जहां मैं रहता हूं। जगदीश ने ऐसे कई ग्राहकों के नाम बताए जो उसके बारे में पूछताछ करते हैं और उसकी अनुपस्थिति में कैफे डे में नहीं आते है। किसी भी काम करने वाले की जिंदगी में यह बहुत बड़ा मोड़ होता है जब लोग उसको उसके नाम से पहचानते हों, जानते हों और उसकी खोज करते हों। एक महीने के प्रशिक्षण से जगदीश में परिपक्वता और जनसम्पर्क का जो अद्‌भुत कौशल आया है वह देखते ही बनता है। वह बता रहा था कि पहले मुझे बात करते हुए बड़ी शर्म लगती थी। शर्म तो अभी भी लगती है पर काम करते हुए अब मैं सहज हो गया हूं।

जगदीश अपने भावी सपनों के बारे में कहता है कि मैं मैनेजर बनकर ही शादी करूंगा। अभी मुझे भाई को पढ़ाना है। मैं सोच रहा हूं कि उसे भी यही ट्रेनिंग यहां से करवा दूं। मुझे अपनी दोनों माँ और पिताओं की देखभाल करनी है। मैं अपने जयपुर वाले माता पिता को पैसे से मदद करता हूं। अपने गांव वाले माता पिता को पैसा तो नहीं देता पर बीच बीच में गांव जाकर उनका हाल चाल लेता रहता

हूं। इसके अलावा प्रतिमाह 2000 रू.बचा भी लेता हूं। मैं अपने दोस्तों के साथ रहता हूं जिससे हमारा खर्चा कम होता है। घर वाले मेरे प्रति अब निश्चिंत हो गये हैं कि जगदीश अब धक्के नहीं खा सकता है। वह बताता है कि मैंने ट्रेनिंग के दौरान बहुत सी चीजें सीखी हैं कि कैसे समाज में रहा जाता है और कैसे आगे बढ़ा जा सकता है? मैंने सीखा कि एक ही लाइन में टिके रहकर कैसे अपनी पहचान बनाई जा सकती है? जगदीश प्रशिक्षण से पहले बहुत ही असहज था कि कैसे यह सब होगा? क्या मैं यह ट्रेनिंग कर भी पाऊंगा या नहीं? पता नहीं कैसे टीचर होंगे? सबसे कैसे व्यवहार करना होगा? पर हमारा प्रशिक्षण इतने सहज माहौल में हुआ कि सब कैसे और कब हुआ पता ही नहीं चला और मैंने कब इतनी सारी बातें सीखीं मुझे खुद ही पता नहीं चला। सच में यह सब शायद प्रशिक्षण का ही कमाल है। कई बार मुझसे कई तरह की गलतियां हो जाती हैं और ग्राहक भी गुस्सा करने लगते हैं तो ऐसे समय में अपनी गलती नम्रता से मानकर चीजें आसानी से हैंडिल करने की बात मैंने सीख ली है। वह बड़े भोलेपन से बताता है कि कई बार बिलिंग में गलती हो जाती है तो मैंने जेब से पैसे भी भरे है। मुझे इन सब बातों ने बहुत सिखाया है।

जगदीश संतुष्ट होकर बताता है कि मेरा और मेरे परिवार का जीवन पटरी पर आने लगा है। मेरी इस छेटी सी नौकरी से परिवार का डगमगाया विश्वास वापस लौट रहा है। मैं अपने साथ साथ पूरे परिवार की स्थिति को काबू करना सीख गया हूं। मैं यहां भी काम अच्छे से मैनेज कर रहा हूं और परिवार में सब ठीक से चलने लगा है। मेरा भाई भी सपने देखने लगा है कि उसकी पढ़ाई पूरी होगी और वह भी मेरी तरह नौकरी करेगा। मेरे दोनों परिवार खुश हैं यह मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। जगदीश के बारे में ILFS संस्थान का मानना है कि पहले हमें पता नहीं था कि जगदीश इतने अच्छे से काम करके दिखाएगा। इसने टेस्ट में सबसे ज्यादा नंबर लिए थे। यह बहुत कम बोलता है पर इसके हुनर के कारण हर कैफे से इसकी बहुत मांग रहती है। जगदीश को देहरादून में अलग अलग कैफे में शिफ्ट किया जाता रहता है। इसे गेस्ट लैक्चर में भी बुलाया जाता है। वह नए प्रशिणार्थियों को बड़ी खूबसूरती से बताता कि हमने थ्योरी व प्रैक्टिकल में क्या क्या सीखा? सबको बताता है कि मन लगाकर अपना प्रशिक्षण पूरा करो। जगदीश सबको यह बताना भी नहीं भूलता कि तुम यहां आकर बहुत आगे बढ़ सकते हो।

जगदीश साफ साफ बात करता है। शायद दुराव छिपाव उसके जीवन में कहीं नहीं है और यह उसकी बहुत बड़ी ताकत है। वह बताता है कि पहले लगता था यहां सैलरी बहुत कम है पर अब दुनिया देखकर इतनी समझ आ गई है कि नीचे से आगे बढ़ना ही बेहतर है। वह बड़ी शालीनता से कहता है कि मैं अब सीढ़ी दर सीढ़ी काम करने की कीमत जान चुका हूं और काम के दौरान मेरी कोशिश रहती है कि मैं अपने किसी काम से भी कभी UGVS और ILFS का सम्मान कम ना होने दूं। आखिर में इनके ही कारण तो मैं गांव का लड़का जगदीश एक ब्रू मास्टर बना हूं जिसे देहरादून जैसे शहर में लोग उसके नाम से जानते हैं और उसे खोजते हैं कि उसके ही हाथ की कॉफी पीनी है। कई

बार मेरे सामने अतिरिक्त आमदनी के मौके आये पर मैं लालच में नहीं आता क्योंकि हमें प्रशिक्षण के दौरान ईमानदारी और मेहनत का सबक बार बार सिखाया गया। मैं जान चुका हूं कि आगे बढ़ने के लिए अपना चरित्र बनाना पड़ता है।

जगदीश गंभीर होकर कहता है कि मैं तो यहां महज एक संयोग के चलते आया हूं। शुरू में तो मेरा बिलकुल मन नहीं लगा पर अब 8 माह बाद एक बात समझ में आई है कि मेरे जीवन में नि:संदेह एक नया मोड़ आ गया है और मैं जरूर कुछ नया कर पाऊंगा। आप देख लेना मेरे जीवन में एक दिन ऐसा आयेगा और मैं वहां जरूर पहुंच जाऊंगा जहां के लिए मैं बना हूं। मुझे विश्वास है कि वह ताकत जो मुझे जयपुर से यहां तक लायी है वह मुझे उस मुकाम तक भी जरूर पहुंचाएगी जो मेरा इंतजार कर रहा है। इतनी कम उम्र में ऐसे ठहरे और खामोशी से प्रबन्धन के गुर समझने वाले और उसको सही मायने में जिंदगी में उतारने वाले बंदे जगदीश को समझकर किसी के मुँह से सहजता से निकलेगा कि जगदीश ने जीने का सलीका सीख लिया है। इस होनहार नौजवान के लिए दुनिया की और भी राहें अनजाने में कब खुल चुकी हैं इसका अहसास शायद जगदीश को भी अभी नहीं हो रहा है पर वह जल्द ही समझ जायेगा क्योंकि वह लम्बी रेस का घोड़ा जान पड़ता है। उन राहों को पाने के लिए जगदीश को UGVS की ढेर शुभकामनाएं!

इच्छाशक्ति ने खोली भविष्य की राहें

ललिता नेगी 91-7579131293
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

UGVS द्वारा संचालित ILSP परियोजना के 'खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका वृद्धि' घटक के अर्न्तगत आयोजित व्यवसायिक प्रशिक्षणों का उद्देश्य उत्तराखंड के स्थानीय युवाओं को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाना है। इन व्यवसायिक प्रशिक्षणों की शुरूआत अप्रैल 2014 में अलग अलग ट्रेड में हुई। इनमें से एक ट्रेड आतिथ्य सत्कार का भी था। जनपद अल्मोड़ा के तड़ियाल बाखली गांव, पोस्ट ऑफिस गनाई चौखुटिया की छोटे कद काठी की सौम्य स्वभाव की ललिता 19 साल की है। ललिता का चेहरा मोहरा इतना मासूम और आर्कषक है कि जो भी उसे देखता है, उसकी तारीफ किये बिना नहीं रहता है। उसकी बातचीत में इतना भोलापन है कि उसे शब्दों में लिखना संभव नहीं है। शर्मीले स्वभाव की इस सौम्य चेहरे वाली लड़की ने अपनी किशोरावस्था गांव में ही बिताई। ललिता ने अपने गांव के सरकारी कन्या इंटरमीडिएट कालेज चौखुटिया अल्मोड़ा से बारहवीं कक्षा पास की है।

बारहवीं पास करने तक वह अपने गांव से बाहर नहीं गई थी। बाहर की दुनिया का ज्ञान उसे बिलकुल नहीं था। ललिता के परिवार में छः सदस्य हैं। ललिता के पिता किसान थे। पिता का स्वर्गवास होने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई, जिस वजह से ललिता के परिवार को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। 24 जुलाई 1994 को जन्मी बारहवीं पास ललिता अपने भविष्य को लेकर बड़ी दुविधा में थी कि वह आगे का रास्ता कैसे चुने ? घर की हालतों को देखते हुये ललिता अपनी माँ का हाथ बंटाने के लिए नौकरी करना चाहती थी, लेकिन ललिता को मालूम नहीं था कि उसे क्या करना चाहिये और कैसे ? वह अपने भविष्य और घर की हालतों को लेकर बहुत परेशान रहती।

एक दिन ललिता को अचानक अपने गांव में कुछ सहेलियों से UGVS एवं ILFS संस्थान देहरादून द्वारा संयुक्त रूप से चलाए जा रहे एक जागरूकता अभियान से ILFS के 'प्लेसमेंट लिंक्ड हास्पिटेलिटी प्रशिक्षण' कार्यक्रम के बारे में पता चला। वह माँ की सहमति से वहां गई जहां इस प्रशिक्षण हेतु अभ्यर्थियों का चयन हो रहा था। ललिता ने 'खाद्य एवं पेय सेवा' की प्रवेश आंकलन परीक्षा में भाग लिया। ललिता परीक्षा में शामिल हुई और उसे प्रशिक्षण के लिए चुन लिया गया। ललिता तो खुशी से झूमने लगी कि अब वह कोर्स करके काम करेगी और माँ को मदद कर सकेगी। किसी भी तरह से माँ का हाथ बंटाना ललिता का सपना था और आज ललिता को यह सपना पूरा होते दिख रहा था।

19 अगस्त 2014 को ललिता एक माह के प्रशिक्षण हेतु देहरादून पहुंची। गांव से चलते वक्त ललिता के मन में सिर्फ एक ही बात थी कि इस प्रशिक्षण के द्वारा उसे किसी तरह अपना व अपने परिवार का भविष्य संवारना है। प्रशिक्षण के शुरूआती दिनों में ऐसा लगता था कि ललिता बहुत कम बोलने वाली लड़की है लेकिन जल्दी ही वह सबसे घुल मिल गई। प्रशिक्षण खत्म होने तक ललिता की पहचान अपने बैच में एक बुद्धिमान और मिलनसार लड़की के रूप में होने लगी। सहपाठियों को बाद में पता चला कि ललिता गाना भी बहुत अच्छा गाती है। ललिता के बातचीत का ढंग बहुत ही प्रभावशाली है। वह बहुत उत्साही और कौतुहल से भरी लड़की है। शुरूआती दिनों में उसे अंग्रेजी भाषा के शब्दों को समझने और उन्हें बोलने में परेशानी होती थी लेकिन ललिता ने प्रशिक्षण के दौरान यह सब सीखने की कोशिश की क्योंकि उसके प्रशिक्षण में सॉफ्ट स्किल के सत्र भी शामिल थे। ललिता ने मेहनत करके अच्छी अंग्रेजी बोलना भी सीख लिया। ललिता पहले बहुत झिझकती थी, उसे हर नई चीज को सीखने में डर लगता था, वह बात बात पर शर्माती थी पर प्रशिक्षण पूरा होते होते वह आत्मविश्वास से भरी एक जिम्मेदार युवती बन चुकी थी। उसका डर मानो कहीं पीछे छूट गया था। अब वह एक ऐसी प्रशिक्षु के तौर पर तैयार खड़ी थी जिसे अपने जीवन की नई पारी शुरू करनी थी। वह नौकरी के कायदे कानून नहीं जानती थी और ना ही शहरों में रहने के तौर तरीके पर उसमें अब इतना आत्मविश्वास आ गया था कि वह हर जोखिम उठाने के पूरी तरह तैयार हो चुकी थी। प्रशिक्षण के दौरान वह बातचीत व समाज में रहने का सलीका भी सीख गई थी। ललिता का प्रशिक्षण सितंबर 2014 में पूरा हुआ। इस प्रशिक्षण ने ललिता के व्यक्तित्व को पूरी तरह निखार दिया था।

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद ललिता को कैफे कॉफी डे देहरादून में जॉब प्लेसमेंट के लिये साक्षात्कार देने का मौका मिला। वह साक्षात्कार में सफल हुई। ललिता ने अपनी पहली नौकरी एस्ले हॉल स्थित कैफे कॉफी डे देहरादून में शुरू की। ललिता अपने प्रशिक्षण संस्थान की ओर से नौकरी पाने वाली पहली प्रशिक्षणार्थी थी। शुरूआत में ललिता को रू. 4700 वेतन मिला। काम के तीन महीनों बाद ही उसके प्रोविडेंट फंड एवं इंश्योरेंस की कटौती भी होने लगी। वह बहुत खुश

थी। अपनी छोटी सी तनख्वाह से उसमें जो आत्मसम्मान की भावना आई वह देखते ही बनते थी। वह जितना हो सकता था अपनी माँ की मदद करती। वह अपने काम में बहुत जल्दी ही दक्ष हो गई। उसके काम करने का तरीका इतना शानदार है कि जो भी उसे और उसके काम करने के सलीके को देखता वह उसका प्रशंशक बन जाता। उसके साथ प्रशिक्षण लेने वाले और साथ काम करने वालों का कहना है कि ललिता को देखते ही थकान उतर जाती है। वह बहुत खुश रहती है और सबको अपने व्यवहार से खुश रखने की कोशिश करती है। सबको बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी हिम्मत बंधाने की कोशिश करना ललिता का स्वभाव है। उसके मैनेजर बताते हैं कि वह बहुत कम छुट्टियां लेती है। उसके प्रशिक्षकों व मैनेजर दोनों का कहना है कि जितना जबरदस्त आर्कषण एवं सौम्यता उसके व्यक्तित्व में है उतनी ही दक्ष वह अपने काम में भी है। उसमें काम की अपार क्षमताएं हैं। वह हर काम को बहुत जल्दी ही सीख लेती है। बहुत छोटी उम्र में वह अपने कैफे में सैकेंड इंचार्ज बन गई थी। प्रमोशन पाने के बाद उसकी तनख्वाह 7200 रू. हो गई। अपने व्यवहार से ललिता साथ में काम करने वाले लोगों व ग्राहकों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

कैफे डे में मुस्कुराते हुये अपने काम को करना और जिम्मेदारियों को पूरी लगन से निभाना ललिता की पहचान है। ललिता 'कैफे कॉफी डे' में अपने इसी शानदार तरीके से काम करने के अंदाज के कारण अपने सहपाठियों, नए प्रशिक्षुओं और सहकर्मियों के बीच एक अनुकरणीय उदाहरण बन चुकी है। जब भी उसके प्रशिक्षण संस्थान में कोई खास दिन होता तो ललिता को अपने अनुभव साझा करने हेतु बुलाया जाता है।

ललिता की खामोश यात्रा यहीं पर नहीं थमी और उसने कुछ समय काम करने का अनुभव लेते हुए यह तय किया है कि वह अब अपनी पढ़ाई आगे जारी रखेगी। जून 2015 में उसने अपनी नौकरी छोड़कर कुछ समय बी.ए. के इम्तहान देने हेतु तैयारी करने का मन बनाया जिससे वह और अच्छे नम्बर ला सके। अभी वह इम्तहान देने और कुछ पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने हेतु कुछ माह के लिए अपने गांव गई है। इम्तहान पूरा हो जाने के बाद वह फिर से काम करके अपने पांव पर खड़ा होना चाहती है।

ललिता के बारे में उसके प्रशिक्षकों का कहना है कि ललिता हमारे यहां आने वाले बच्चों में से सबसे मेधावी बच्चों में एक है। वह आज भी हमारे संपर्क में है। उसने यदि काम छोड़कर पूरे मन से पढ़ाई करने का फैसला भी लिया है तो इसमें भी वह कुछ दूर का ही सोच रही होगी क्योंकि वह हर काम बहुत सोच समझकर करती है। अगर वह कैफे डे में वापस भी आना चाहेगी तो कम्पनी उसे हाथों हाथ लेगी क्योंकि ललिता ने बहुत कम समय में अपने काम और व्यवहार से सबका भरोसा जो जीता है। उसके प्रशिक्षक गर्व से कहते हैं कि ललिता जैसे बच्चे किसी भी संस्थान की बहुमूल्य संपति होते हैं व ऐसे बच्चों को काम की क्या कमी है।

मैं बहुत खुश हूँ!

ममता राजौरिया 9536264311
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

मैं बहुत खुश हूं। सच में मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है। अगर मुझे UGVS ने फूड एंड बीवरेज ट्रेड में प्रशिक्षण ना दिया होता तो मुझे अपने गांव से बाहर आने का मौका नहीं मिलता और मुझे पता ही नहीं चलता कि दुनिया में क्या-क्या है? और आगे बढ़ने के कितने मौके हैं.... मुझे कभी मालूम नहीं होता कि यह दुनिया कितनी सुन्दर और बड़ी है। आज मैं कहां से कहां पहुंच चुकी हूं? मेरी तो आंखें ही अब खुल रही हैं। सच में मैं बहुत खुश हूं अपने लिए, अपने परिवार के लिए और उन सबके लिए जिनके कारण मैं यहां तक पहुंची हूं। मैं अपने माँ बाप की आभारी हूं मुझे हर उस मौके को देने के लिए जो उन्होंने खुद कष्ट सहकर मुझे दिया। यह किसी कहानी की नायिका के बोल नहीं हैं बल्कि भाव विभोर एक ऐसी किशोरी के दिल की गहराईयों से निकले शब्द हैं जो हमें याद दिलाते हैं कि देश में विकास की डुगडुगी बजने वाले इस दौर में भी हमारे गांवों में ऐसे बच्चे हैं जो सही मौकों की तलाश में टकटकी लगाकर बैठे हैं कि हमारे जीवन में कोई तो जरूर आयेगा, जो हमें हमारे हिस्से की वह खुशी दिलाएगा जिसके हम हकदार हैं...।

यह सारगर्भित अभिव्यक्ति अल्मोड़ा शहर से 15 किमी. की दूरी पर बसे हवलबाग गांव की 19 साल की ममता राजौरिया की है। ममता का गांव और कहानी भी पहाड़ों के दूसरे गांवों और किशोरियों से कोई अलग नहीं है। परिवार खेती बाड़ी करता है। परिवार में आमदनी का स्त्रोत उसके सुपरवाईजर पिता की नौकरी व माँ का सिलाई का काम है। ममता की चार बहनें हैं। बड़ी दो बहनों की शादी हो गई है और छोटी दो बहनें पढ़ रही हैं। ममता ने गांव से ही हाईस्कूल और इंटर की पढ़ाई द्वितीय श्रेणी में पास की है। ममता बताती है कि पिता की इतनी गुंजायश नहीं थी कि हम सब बहनों के खर्चों को उठाते हुए हमें पढ़ा सकें। मुझे लगता था कि मुझे भी परिवार के लिए कुछ करना चाहिए, पर क्या? यह मेरी समझ में कभी नहीं आया? ममता को इसी उलझन में जून 2014 में ब्लॉक से पता चला कि ILFS नामक एक कम्पनी 12वीं पास बच्चों को आतिथ्य सत्कार के ट्रेड में

प्रशिक्षण दे रही है और उसकी कोई फीस नहीं पड़ेगी। प्रशिक्षण के बाद वह नौकरी भी दिलाएंगे। ममता ने जानकारी लेकर ILFS कार्यालय में फोन किया और वहां से पूरी बात मालूम करके वह आजीविका कार्यालय अल्मोड़ा गई। पूरी तरह समझने के बाद उसने व उसके चचेरे भाई ने इंटरव्यू दिया। वह पास हो गये। ममता के घर वालों ने बहुत विरोध किया पर भाई के समझाने पर माता पिता मान गये। वह दोनों प्रशिक्षण हेतु देहरादून आये। भाई ने प्रशिक्षण पूरा नहीं किया और वह बीच में ही छोड़कर चला गया पर ममता ने कोर्स पूरा किया। शुरू में ममता हिचकिचाहट से भरी थी कि वह कैसे पढ़ेगी और क्या करेगी? क्या वह इतने कठिन कोर्स को पूरा कर भी पाएगी या नहीं? पर धीरे धीरे उसकी घबराहट और डर खत्म होता गया और वह कोर्स को अच्छे से समझने लगी थी।

अगस्त 2014 में ममता की ट्रेनिंग पूरी हुई। 9 सितम्बर 2014 को ममता को साक्षात्कार में सफलता मिली। ममता ने दर्शन लाल चौराहे के कॉफी कैफे डे देहरादून में टीम सदस्य के रूप में अपना काम शुरू किया। ममता की पहली तनख्वाह रू. 4700 थी। वह पहली तनख्वाह लेकर बहुत खुश हुई। आज ममता की दस महीने की नौकरी हो गई है। ममता को 6049 रू. मिलते हैं और उसका पी.एफ. और इंश्योरेंस का पैसा भी कटता है। वह तीन सहेलियां साथ रहती हैं जिन्होंने एक साथ प्रशिक्षण लिया था। शुरू में ममता को बहुत डर लगता था पर अब काम करते हुए उसे खुद पर इतना भरोसा हो चुका है कि वह अपनी नौकरी के साथ साथ बी.ए. की पढ़ाई भी प्राईवेट कर रही है। उसने इन महीनों में देहरादून में रहकर हालतों से समझौता करने के बजाय उनके बीच से रास्ता निकालना ज्यादा अच्छा समझा। वह अपने कैरियर की लाईन तय कर चुकी है। वह बी.ए. पूरा करने के बाद एम.बी.ए. करना चाहती है। ममता बताती है कि अब वह अपना पूरा खर्चा उठा रही है और हर महीने डेढ़ हजार रूपये तक बचा लेती है। कभी कभार घर भी पैसा भेजती है। ममता अपनी जिंदगी में आए बदलाव से बहुत खुश है।

ममता के प्रशिक्षक बताते हैं कि ममता शुरू में बहुत चुप व सहमी सी रहती थी पर आज काम के अनुभव ने उसको बदल दिया है। ममता के साथ काम करने वालों का कहना है कि वह बड़ी खुशमिजाज और हंसमुख लड़की है। उसका काम का तरीका और व्यवहार सबके साथ बहुत अच्छा है। काम के पहले दिन ममता को बिलकुल अच्छा नहीं लगा और कॉफी सर्व करते हुए वह शरमा रही थी कि यह तो अच्छा काम नहीं है पर बाद में उसने खुद से बातचीत कर खुद को समझाया कि जब हमारे सीनियर काफी सर्व कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं? ममता ने इस बीच ब्रू मास्टर का टेस्ट पास कर लिया है और वह कॉफी बनाने की विशेषज्ञ हो चुकी है। इससे उसकी तनख्वाह में 500 रू. की बढ़ोतरी होगी। ममता इतनी अनुभवी हो चुकी है कि वह आर्डर लेना, सर्विस करना, आर्डर तैयार करना और बिलिंग व कैश सब कुछ अकेले ही संभाल लेती है। वह बड़ी सहजता से बताती है कि शुरू में कैश हैंडिल करते हुए बड़ा डर लगता था पर अब मैनेजर ने एक बार बिलिंग, कम्प्यूटर हैंडिल करना और कैश का प्रबन्धन करना सिखाया तो धीरे धीरे सब समझ आ गया है। कई मौके ऐसे आए जब ममता ने अकेले पूरा कैफे डे संभाला। उसकी यह सहज अभिव्यक्ति ममता में आये आत्मविश्वास व उसकी प्रबन्धन क्षमता में आए निखार को बताने को काफी है। गांव से

आई एक सकुचाती लड़की यदि देहरादून के इस भीड़ भाड़ वाले इलाके में स्वयं खुश रहते हुए अपने ग्राहकों को संतुष्ट करते हुए उस कैफे की जरूरत बन सकती है तो यह तय करने में कतई संकोच नहीं है कि यह व्यवसायिक प्रशिक्षण अपने उद्देश्य में सफल रहा है। ममता के चेहरे की हंसी नौ घंटों की थकाने वाली ड्यूटी के बाद भी कभी कम नहीं होती है।

ममता के नौकरी में आने के बाद उसके गांव की लड़कियों में इस बात की होड़ है कि हम भी प्रशिक्षण में जायें और नौकरी करें। ममता उनको प्रशिक्षण के दौरान हुई सारी दिक्कतों और अपने जीवन में आए बदलाव के बारे में समझाकर इन प्रशिक्षणों में शामिल होने को प्रोत्साहित करती है। ममता ने अपने जीवन में आए बदलाव के बाद अपने ब्लॉक की फरजाना और अल्मोड़ा की प्रियंका मेहता को प्रशिक्षण हेतु प्रोत्साहित किया। आज फरजाना और प्रियंका मेहता आतिथ्य सत्कार के ट्रेड में ही UGVS की मदद से ILFS एजेंसी में सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं और देहरादून में कॉफी कैफे डे में ही नौकरी कर रही हैं।

ममता में अपनी परिस्थितियों और क्षमताओं का विश्लेषण करने की ताकत विकसित हो चुकी है। वह अपने काम के अनुभव के बारे में बताती है कि यहां आकर मैंने धीरे धीरे समझा कि आपका कैरियर कैसे आगे बढ़ता है? अपने साथियों के बारे में जानकर मैंने यह तय किया है कि मुझे यहीं पर एक अच्छे पद पर पहुंचने तक धैर्य से काम करना है। मेरे जीवन में मैंने एक बड़ा बदलाव महसूस किया है कि नौकरी लगने से पहले घर वाले मेरी बात नहीं सुनते थे पर अब हालत बदल गये हैं। उसका कारण है कि अब मैं अब अपने पांव पर खड़ी हूँ। मैं इतना तो कह सकती हूं कि इस छोटी सी नौकरी में मैंने बहुत कुछ तो नहीं किया है पर कुछ तो जरूर पाया ही है। यह पूछने पर कि अगर UGVS तुम्हारी जिंदगी में नहीं होता तो तुम्हारा जीवन कैसा होता? शायद अपने ही गांव में खेती बाड़ी करते होते और माँ बाप शादी कर देते। यही मेरी ही क्या हर लड़की की जिंदगी का सत्य है और यहीं पर उसकी जिंदगी ठहर जाती है। मैं घर में होती तो वही डरी सहमी सी ममता होती पर अब मेरा डर खत्म हो गया है। मैं अपनी उम्र से पहले ही नौकरी में आ गई हूं। यह एक अच्छा अनुभव है। यह मेरे, मेरी सहेलियों और गांव वालों के लिए एक अच्छा उदारहण है कि कैसे लड़कियों को सही मौके मिलने पर उनके बढ़ते कदमों को कोई बाधा नहीं रोक सकती। मैं आने वाले सालों में इसी कम्पनी में सफल मैनेजर बनना चाहती हूं और अपनी निजी जिंदगी में भी एक कुशल प्रबन्धक बनना चाहती हूं। मेरी कोशिश है कि मैं अपनी निजी जिंदगी और काम के बीच संतुलन बिठाकर एक संतुलित जिंदगी बिताऊं। ममता थोड़ी देर चुप रहकर कहती है कि UGVS ने तो हमारी जिंदगी ही बदल दी है। उसने मेरे जैसे कई बच्चों के सपनों को हकीकत में बदला है यह प्रशिक्षण दिलवाकर। किसी को रोजगार दिलाना सबसे बड़ा पुण्य होता है। UGVS ने हमें आत्मविश्वास दिलाया और हमारी जिंदगी देखते ही देखते बदल गई है। ILFS के प्रशिक्षणों का ममता पर बहुत गहरा असर पड़ा है। वह वहां के प्रशिक्षकों के तौर तरीकों, व्यक्तिगत व्यवहार और बच्चों को प्रोत्साहित करने की उनकी कला को बहुत याद करती है। वह प्रशिक्षक शशांक व विकास को याद कर कहती है कि उनके कहे शब्द हमेशा मेरा हौसला बढ़ाते हैं कि ममता घबराओ नहीं, जो होगा वह

अच्छा ही होगा। ममता बताती है कि उनकी बात तो सही है क्योंकि मैंने तो सोचा ही नहीं था कि मैं कभी यहां तक पहुंचूगी। मेरा भगवान पर भरोसा बढ़ गया है कि जिसने मुझे यहां तक पहुंचाया है वह मुझे आगे भी बढ़ायेगा। उसकी प्रेरणा से ही UGVS जैसी संस्थाएं गांव वालों के लिए काम कर रही हैं।

ममता के बारे में उसके प्रशिक्षकों की राय है कि इसने कभी हमें तंग नहीं किया और ना ही फोन कर कभी अपनी परेशानियों का रोना रोया। आज इसे 7200 रू. तनख्वाह मिल रही है। यह बहुत खामोशी से काम करने वाले कार्यकर्त्ताओं की पंक्ति में शामिल है। ममता की कम्पनी से भी कभी शिकायत नहीं आई। दर्शनलाल चौक, घंटाघर पर स्थित कैफे की पूरी जिम्मेदारी ममता पर है। यह कैफे डे के सारे काम कुशलता से कर लेती है। ममता से यह पूछने पर कि इतनी छोटी उम्र में तुमने यह सब कैसे सीखा और कैसे अकेले यह सब कर लेती हो? वह बोली मुझे लगता है हम रिटेल ट्रेड के बच्चों से बहुत अच्छे हैं क्योंकि हम पर काम का उतना प्रैशर नहीं है जैसा उन पर है। मैं अब इतना अनुभव हो चुकी हूं कि जब कभी प्रैशर भी आता है तो मैं उन परिस्थितियों का सामना कुशलता से कर लेती हूं। पहले मेरे लिए कॉफी बनाना ही अपने आप में एक बड़ी चुनौती होती थी पर अब मैं हर तरह की हॉट और कोल्ड कॉफी अच्छी तरह से बना लेती हूं। कॉफी बनाना मुझे बहुत डराता था पर अब मेरा डर खत्म हो गया है। मैं अब हर रैसिपी अच्छे से जानती हूं और ग्राहकों के पूछने पर आत्मविश्वास से बता भी देती हूं। मैंने एक बात समझी है कि हमें यहां नौकरी करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को कायम रखना होता है जो अपने आप में किसी भी काम करने वाले के लिए अग्नि परीक्षा जैसा होता है। मुझे खुशी है कि मैं उन मानकों को पूरा करने में सफल हुई हूं।

मैं अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती हूं पर यहां काम बहुत ज्यादा होता है। मैंने अपने एरिया मैनेजर से इस बारे में बात की तो वह बोले पढ़ाई के लिए कम्पनी तुम्हें छुट्टी देगी। तुम इसी कैफे डे में काम करो। हमारे जैसे बच्चों के लिए अनजान जगह में इतना सहारा ही काफी है। यहां हमारी तनख्वाह छुट्टी के दिनों में नहीं कटती है। ममता ने अपने इलाके की कई लड़कियों को इस काम के बारे में बताया जो प्राईवेट पढ़ाई करके काम की तलाश में हैं। ममता जिसने कभी अंग्रेजी नहीं बोली थी, वह इतने शानदार तरीके से हर तरह की कॉफी के नाम शुद्ध उच्चारण के साथ ले रही थी कि मन खुश हो गया। ममता के प्रशिक्षक बताते हैं कि इसके प्लेसमेंट के समय हम बहुत डर रहे थे कि इसका चयन होगा कि नहीं पर आज वही ममता अपने तौर तरीकों और काम की जानकारी से हमें भी हैरान कर रही है। यह इतने दूर के गांव से आई थी और शहर के वातावरण से बिलकुल अनभिज्ञ थी, फिर भी इतने अच्छा काम कर रही है। इसका काम देखकर बहुत खुशी होती है। ममता की किसी बात को समझने की ताकत बहुत अच्छी है। किसी बात को ना जानने पर यह सवाल करती है। सवाल करना व संतुष्ट होने तक पूछते रहना उसका स्वभाव है। वह अपने काम में बहुत पाबंद है और ना के बराबर छुट्टियां लेती है। ममता आखिरी में बड़े गंभीर भाव से कहती है कि इस ट्रेनिंग के बाद तो मेरी दुनिया ही बदल गई। मैं सच में बहुत खुश हूं! बहुत बहुत खुश! उसकी सहज खुशी देख व सरल शब्दों को सुनकर इन प्रशिक्षणों की सार्थकता सफल प्रतीत होती है।

एक भरोसेमंद प्रबन्धक!

नीतू नेगी 08859442380
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

अल्मोड़ा के प्रेमपुरी गांव, पोस्ट आफिस गनाई, चौखुटिया की 23 साल की एक दुबली पतली सौम्य मगर मजबूत इरादों वाली नीतू नेगी को देखकर ना आज यह लगता है कि गांव की इस सीधी साधी लड़की के अंदर कितनी प्रतिभा छुपी हुई है और ना ही UGVS के फूड एंड बीवरेज प्रशिक्षण के दिनों में इसे देखकर कोई कहता था कि नीतू अपना प्रशिक्षण भी पूरा कर सकेगी और प्रशिक्षण के बाद इसे काम भी मिलेगा? उसके प्रशिक्षकों को लगता था कि नीतू इतनी सीधी है कि वह अपना साक्षात्कार कैसे पास करेगी? लेकिन नीतू ने अपनी मेहनत, आत्मविश्वास और समर्पण के बल पर अपना प्रशिक्षण भी अच्छे से पूरा किया। नीतू अपने साक्षात्कार के शुरूआती प्रयासों में बार बार असफल हुई पर उसने हार नहीं मानी और फिर से एक कर्मठ योगी की तरह साक्षात्कार की तैयारियों में जुट गई और आखिर में कॉफी कैफे डे, आर्शीवाद इन्कलेव, देहरादून में एक टीम सदस्य के तौर पर काम करने लगी। नीतू ने कैफे डे में काम करते हुए कुछ ही महीनों में अपने काम के दम पर ऐसी पहचान बनाई कि आज वह देहरादून के इस सबसे व्यस्त कैफे डे की एक जरूरत बन गई है। आज इस कैफे डे की सारी टीम हर छोटे बड़े काम के लिए नीतू पर निर्भर रहती है। अपनी ईमानदारी के चलते नीतू ने वह पहचान बना ली है कि जिस नीतू ने कभी अपने हाथों से गांवों में इतने नोट नहीं गिने थे वह आज पूरे कैफे डे की हजारों रूपये की बिक्री की बैंकिग जिम्मेदारी को बखूबी निभा रही है, जो कि उसका काम नहीं है। नीतू इतनी जिम्मेदार है कि मैनेजर की अनुपस्थिति में वह पूरे कैफे डे की जिम्मेदारियों और अपनी टीम के प्रबन्धन का काम बखूबी निभाती है। उसके बारे में सब जानकर एक पंक्ति में यही कहा जा सकता है कि वह बिना प्रबन्धक पद के अनौपचारिक रूप से प्रबन्धकीय जिम्मेदारियों का निर्वहन इतनी सुंदरता से कर रही है कि इस भीड़ भाड़ वाले कैफे डे से ट्रांसफर मांगने के बावजूद उसको कहीं और नहीं भेजा जा रहा है।

नीतू अपने परंपरागत समाज में उन लोगों के लिए एक सुंदर उदारहण है जो लड़कियों को घरों से बाहर ना निकलने देकर उन्हें उस स्वतंत्रता से वंचित रखते हैं जिसकी वह हकदार होती हैं। नीतू ने अपने माता पिता और भाई का भरोसा जीतकर अपने काम के बल पर समाज में एक सुंदर उदारहण प्रस्तुत किया है।

उसने अपनी साधारण परिस्थितियों में किसी तरह इंटरमीडिएट और बाद में बी.ए. की परीक्षाएं द्वितीय श्रेणी में पास की। नीतू का परिवार खेती बाड़ी करता है। उसके परिवार में माता पिता, तीन बड़े भाई, भाभियां और उनके बच्चे हैं। अपने भाई बहनों में वह सबसे छोटी है। उसके दो भाई गांव में ही दुकान करके गुजर बसर करते हैं जबकि एक भाई पुलिस में है। घर वाले उसकी शादी कर देना चाहते थे। नीतू के भाई किसी भी हालत में उसे गांव से बाहर नहीं आना देना चाहते थे पर बचपन से ही नीतू के मन में एक बड़ी इच्छा थी कि वह काम करे और अपने पैरों पर खड़ी होकर दुनिया को देखे। नीतू के सपने सुंदर तो जरूर थे पर इन सपनों को वह पूरा कैसे करे इसका कोई सटीक ताना बाना उसके पास नहीं था। नीतू की आंखों में काम करने के सपने के साथ दिल में मेहनत करने का जज्बा भी था, जिनके दम पर जैसे ही उसे मालूम चला कि देहरादून के किसी ILFS संस्थान में होटल मैनेजमेंट का कोई प्रशिक्षण 12वीं पास युवाओं के लिए हो रहा है तो उसने ब्लॉक में जानकर पूरी जानकारी ली। नीतू इससे पहले कभी घर से बाहर नहीं निकली थी क्योंकि घरवालों ने कभी इजाजत नहीं दी थी। वह पढ़ाई के साथ खेती बाड़ी का सारा काम करती थी। नीतू बताती है कि मैंने नहीं सोचा था कि मैं घर से बाहर निकल सकूंगी। मेरी बहुत जिद पर बड़े भाई ने किसी तरह से हां बोल ही दिया। हमारे आस पास के 25-30 बच्चों ने साक्षात्कार दिया और मैं उनमें से पास हो गई। हमें गांव में हतोत्साहित करने वालों की भी कमी नहीं थी। सब लोग कहते थे कि लड़कियां और वह भी होटल लाईन में। क्या कभी सुना है कि होटल मैनेजमेंट की ट्रेनिंग कभी फ्री में होती है? क्या बिना अंग्रेजी जाने कोई होटल मैनेजमेंट का प्रशिक्षण कर सकता है? तरह तरह की बातें करते हुए लोग कहते कि यह सब फ्रॉड हैं, तुम इनके चक्कर में क्यों पड़ रही हो?

नीतू बताती है कि मैं सबकी बातें सुन रही थी और मुझे डर भी लग रहा था पर मेरा मन घर से बाहर निकलने को मचल रहा था। मैंने एक बात तय की कि एक बार जाकर सच का पता लगाना चाहिए और मैंने अपनी एक सहेली पूजा नेगी को इस बात के लिए तैयार किया कि वह भी मेरे साथ इस प्रशिक्षण में चले। अगर हमें समझ नहीं आएगा तो वहां से वापस आ जाएंगे। कभी बसों में सफर नहीं किया था। किसी तरह से हिम्मत करके हम दोनों 23 जुलाई 2014 को अपने भाई के पास आये जो देहरादून में ही रह रहा था। उसने प्रशिक्षण के बारे में सारी जानकारियां लेकर हां कर दी। जब हम प्रशिक्षण के लिए आये तो हमारा प्रशिक्षण नहीं हुआ क्योंकि बच्चे कम आने से बैच पूरा नहीं हुआ था। हमें वापस कुछ दिनों के लिए घर जाने को कहा गया पर हमने सोचा यदि एक बार घर गये तो कोई हमें आने नहीं देगा और हमारे बार-बार के आने जाने का खर्चा कौन देगा? इसलिए हम लगभग 15 दिन अपने भाई के पास ही रहे। अगर रहने का ठिकाना नहीं होता तो हम दोनों कभी

प्रशिक्षण पूरा नहीं कर सकते थे। 10 अगस्त 2014 से हमारा प्रशिक्षण शुरू हुआ और 36 दिनों के बाद पूरा हुआ। वह बताती है कि हमें प्रशिक्षण में वह व्यवहारिक बातें नहीं सिखाई गईं जिनकी काम के दौरान जरूरत पड़ती है। वह सब बातें हमने काम पर आकर ही सीखीं। प्रशिक्षण के दौरान नीतू अपने साथ के बच्चों के साथ हर गतिविधि में बढ़ चढ़कर भाग लेती थी। शुरू में वह बहुत हिचकती और डरती थी पर धीरे धीरे सब सामान्य हो गया। उसका डर खत्म हो गया। नीतू का प्रशिक्षण सितम्बर 2014 में पूरा हुआ और वह अक्टूबर 2014 से कॉफी डे में नौकरी कर रही है। शुरू के दिन उसके लिए बहुत कठिन थे लेकिन अब वह ग्राहकों व बाकी लोगों से खुलकर बात करती है।

वह बताती है कि मेरे अंदर प्रशिक्षण के बाद इतना आत्मविश्वास जागा कि मैंने 15 दिन में ही कॉफी कैफे डे के सारे तौर तरीके सीख लिए थे। वह आत्मविश्वास से मुस्कराते हुए कहती है कि यहां की सुबह 8 बजे से 12 बजे तक अकेले मेरी होती है। मैं कैश काउंटर, बैंकिग, आर्डर लेना, आर्डर देना व मेज की सफाई आदि सब काम अकेले ही कुशलता से कर लेती हूं। हां मैं एक बात बताना चाहती हूं कि अपने सीनियर के रहते हुए भी बैंकिग मैं ही करती हूं। बैंकिग में एक पूरे दिन के कैश को गिनकर बैंक में जमा कराना होता है। यहां प्रतिदिन 20–25 हजार की बिक्री होती है और जब हमारे ऊपर बिक्री ज्यादा करने का लक्ष्य होता है तो कभी कभी मैंने 60000 रू. तक की बिक्री की है। हम अपने बिक्री लक्ष्यों को अपने व्यवहार के बल पर पूरा कर लेते हैं। मेरे सीनियर मुझ पर भरोसा करते हैं और मेरी कार्यकुशलता से बहुत खुश हैं। मैं यहां से अपने कमरे के नजदीक वाले कैफे में जाना चाहती हूं पर मेरे पुराने मैनेजर मुझे समझाते हैं कि यहीं पर रहो। तुम्हारा एक दिन यहीं पर प्रमोशन हो जाएगा और तुम अपनी मेहनत के बल पर इसी कैफे डे में मैनेजर बनोगी। वह बताती है कि मेरा घर यहां से राजपुर रोड पर काफी दूर पड़ता है फिर भी मैं समय पर आ जाती हूं। नीतू बताती है कि इस कैफे में अभी तक कोई लड़की नहीं आई। ज्यादातर लड़के भी यहां टिकते नहीं हैं क्योंकि यहां पर काम बहुत ज्यादा है। मुझे सब कहते हैं कि तू यहां कैसे टिकी है? यहां ज्यादातर युवा और बच्चे आते हैं। वह बहुत मूडी होते हैं। कभी कभी बड़े गुस्सैल और आक्रामक लोग भी आते हैं। वैसे मैं सबको अपने व्यवहार से शांत कर लेती हूं पर कभी कभी ऐसा भी हुआ है कि उनको शांत करने के लिए हमारे सीनियर को सामने आना पड़ता है। यहां लोगों के साथ काम करते करते शुरू में बड़ी खीज होती है पर अब तो अच्छा लगता है और शायद यह अनुभव मेरी अपनी जिंदगी की मुसीबतों को कम करने के लिए मददगार साबित होगा। शुरू में मैं अपने को बहुत कमजोर महसूस करती थी पर अब तो सब कुछ मेरे ही हाथ में है। मुझे खुद भी लगता है कि यहां काम करके मेरे व्यक्तित्व में निखार आया है। वह बातचीत के दौरान कुछ अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग निसंकोच करती है। वह कहती है कि मैंने नौकरी में आकर कपड़े पहनने, बातचीत और यहां के समाज में उठने बैठने का सलीका सीखा लिया है। अब मैं बहुत खुश हूं। नीतू बताती है कि शुरू में मेरी तनख्वाह 4700 रू. थी पर मुझे ढाई महीने तक भुगतान नहीं हुआ। मैंने अपनी सहेलियों से

पैसे मांगकर अपना काम चलाया पर घर से पैसे नहीं मांगे। वह लोग वापस बुला देते। मैं शुरू में राजपुर रोड़ से यहां आर्शीवाद एनक्लेव, चकराता रोड पैदल ही आती थी। बाहर बहुत ठंड होती थी लेकिन मैंने पहुंचने में कभी देर नहीं की। यहां की सर्दी के हिसाब से मेरे पास गरम कपड़े भी नहीं थे पर मैंने घर से पैसे नहीं मांगे। बस किसी तरह अपना काम चलाया। अब तो सब ठीक हो गया है और मेरी तनख्वाह भी 6000 रू. हो गई है। मेरा प्राविडेंट फंड और इश्योरेंस कटता है। मुझे घर में पैसा नहीं देना पड़ता। वह कहते हैं कि अपने पर ही खर्च कर अपनी पढ़ाई करो। मैं जब से नौकरी पर आई हूं बस एक ही बार घर गई हूं। उसी समय सबके लिए कपड़े व मिठाई आदि पर मेरे 6000 खर्च हो गये पर ऐसा करके मुझे बहुत खुशी हुई। हमारे घर जो भी आया उसे अपनी पहली कमाई की मिठाई खिलाई। घर के बाकी लोग भी खुश हैं कि यह अपने पांव पर खड़ी है और बहुत समझदार व बहादुर हो गई है। मुझे देखकर मेरे गांव वालों का सोचना बिलकुल बदल गया है। उनको लगता है कि गांव की बाकी लड़कियों को भी ऐसे प्रशिक्षण के लिए जाना चाहिए। हमारे गांव की लड़की हेमा भी इस प्रशिक्षण के बाद नौकरी करना चाहती है। अब गांव वालों को समझ आ गया है कि यह सुरक्षित जगह पर है और पूरे ठाठ बाट से रह रही है। मेरी देखा देखी गांव से कई लोग नौकरी के लिए बाहर आएंगे। गांव में सब मुझे बधाई दे रहे थे।

नीतू के बारे में उसके प्रशिक्षकों का कहना है कि यह दो बार साक्षात्कार में असफल हो चुकी थी। हमें भी प्रशिक्षण के वक्त लगता था कि इसकी प्लेसमेंट मुश्किल होगी पर यह डरी नहीं और पूरी हिम्मत से इसने अपनी बारी का इंतजार किया। एक बार नौकरी मिलने के बाद वह इस नौकरी को बहुत अच्छे से संभाल रही है। यह कभी शिकायत नहीं करती और जब भी इसने फोन किया तो सिर्फ अपनी कुशलक्षेम बताने के लिए किया। यह बहुत परिपक्व हो चुकी है। इसके बारे में एक बात मशहूर है कि यह सबसे कम छुट्टियां लेती है। यह अपने काम में बहुत पाबंद है। यह बहुत ही साधारण परिवार से है पर इसने कभी अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि को अपने राह का रोड़ा नहीं बनने दिया। अब जब यह अपने कैफे डे की बड़ी जरूरत बन गई है तो भी इसके व्यवहार और कार्यशैली से कहीं ऐसा नहीं लगता है कि इसमें घमंड आ गया है। उसके प्रशिक्षक विकास बताते हैं कि हमारे सामने ऐसे बहुत ही कम उदारहण हैं कि जो नौकरी के लिए एक बार पूरी तरह अस्वीकार किये जाने के बाद केवल और केवल अपने काम और आत्मविश्वास के दम पर अपने संस्थान में बिना प्रबन्धक बने एक कुशल प्रबन्धक की भूमिका में है। नीतू खालिस पहाड़ी परिवेश की लड़की लगती थी। नीतू को समझने और सीखने में बहुत दिक्कत होती थी पर कैसे सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कोई सफल हो सकता है यह उसका सुंदर और जीता जागता उदारहण है। नीतू के बारे में उसके सभी प्रशिक्षकों की एक ही राय है कि यदि नीतू कल सफल होती है तो हमें बड़ी खुशी होगी।

नीतू बताती है कि यदि मैं इस प्रशिक्षण में बाहर नहीं आती तो अभी तक मेरी शादी हो जाती। माँ ने एक बार कहा था तो मैंने यही कहा कि अभी अपने पैरों पर खड़े होना चाहती हूं। मेरी बचपन से एक

ही इच्छा थी कि मैं काम करूं और वह पूरी हो गई है। अब मैं यहीं पर नौकरी करते हुए बी.एड. करना चाहती हूं। मैं अपने घर वालों की मर्जी से ही शादी करूंगी। वह बड़े रहस्यमयी अंदाज में कहती है कि जब माँ बाप हमारी खुशी में अपनी खुशी देखते हैं तो मुझे भी उनकी ही खुशी में सब देखना होगा। मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि यहाँ आकर मेरी जिंदगी इतनी अच्छी हो जायेगी। यहां मेरे पर दबाव नहीं है। उसका कारण है कि सारा स्टाफ एक दूसरे की मदद करता है। मेरे मैनेजर मुझ पर बहुत भरोसा करते हैं और उनके ना रहने पर पूरी टीम मेरे ही नियंत्रण में रहती है। नीतू के मैनेजर का कहना है कि यदि नीतू ने अपने संवाद कौशल को बढ़ा दिया तो यह बहुत जल्दी ही मैनेजर बन जायेगी क्योंकि यह बहुत ही प्रतिभाशाली है। वह बताते हैं कि कई ग्राहक यहां आकर सबसे पहले नीतू के बारे में ही पूछते हैं। यहां उसकी अच्छी पहचान बन चुकी है। नीतू बहुत ही सरल, सौम्य व सीधी लड़की है। वह बड़ी सहजता से कहती है कि मैंने जो चाहा वह मुझे मिल गया। मैं अपनी शर्तों पर ही जीवन को जी रही हूं। सच पूछो तो मेरी तो जिंदगी ही बदल गई है!

हालात ने समझदार बनाया!

प्रियंका मेहता 08477876572
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

जिला अल्मोड़ा के मेहथगांव, ब्लॉक हवलबाग की 19 साल की प्रियंका मेहता खामोशी से काम करने वाली एक मंझी हुई कुशल कार्यकर्त्ता है। एक बार में उसे देखने पर वह बहुत शर्मीली, विनम्र, चुप चुप रहने वाली, सीधी और हर वक्त मुस्कराती लड़की नजर आती है पर जब आप उससे मिलेंगे तो वह बहुत बात करती है। उसकी बातों में दुनिया जहान की समझदारी होती है और वह बहुत बड़ी बड़ी बातें भी करती है। इतनी छोटी उम्र में अपने काम में इतनी महारत हासिल करना हरेक के बूते की बात नहीं है। आज वह सिर्फ और सिर्फ अपने काम और व्यवहार के बूते शहर के सबसे भीड़ भाड़ और मांग वाले इलाके राजपुर रोड़ देहरादून के कॉफी कैफे डे में, जहां कोई दो तीन दिन से ज्यादा नहीं टिकता वहां पिछले सात आठ महीने से अपनी योग्यता के दम पर अपनी श्रेष्ठता बनाये हुई है। प्रियंका देहरादून के कॉफी कैफे डे की चेन में काम करने वाली अकेली लड़की है जो इस जगह पर इतने लम्बे समय से टिकी है।

यद्यपि प्रियंका यहां पर एक साधारण टीम सदस्य है लेकिन वह एक कुशल प्रबन्धक की तरह हर काम बड़े सलीके और संजीदगी से कर अपनी टीम के सदस्यों, कैफे चेन के वरिष्ठ प्रबन्धकों और ग्राहकों को अपना सबसे बेहतरीन प्रदर्शन कर प्रभावित कर रही है। छोटी सी प्रियंका से मिलकर ही कोई उसके खामोश व्यक्तित्व में छुपे बेहतरीन गुणों का अंदाज लगा सकता है। वास्तव में उसके गुणों और मंझे व्यक्तित्व को शब्दों में उतारना बहुत मुश्किल है। प्रियंका असल में अपने जैसे बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए एक रोल मॉडल की तरह नजर आती है। वह बड़ी संजीदगी से कहती है कि मुझे हालतों ने उम्र से पहले ही समझदार बना दिया है। प्रियंका के बोलते व्यक्तित्व पर एक प्रेरणादायक फिल्म बनाई जा सकती है।

प्रियंका गांव की एक साधारण लड़की है। उसका गांव शहर से 5 किमी. दूर है। गांव में पानी, बिजली, स्कूल, डाकघर और अस्पताल सब कुछ हैं। अस्पताल में अब सुविधाएं पहले से अच्छी हो गई हैं। अब गांव के लोगों को छोटी छोटी बीमारियों के लिए अल्मोड़ा नहीं जाना पड़ता। प्रियंका के परिवार में एक 14 साल का छोटा भाई, 16 साल की एक छोटी बहन और उसके पिता हैं। प्रियंका की मां की मौत बरसों की लम्बी बीमारी के बाद एक साल पहले ही हुई है। प्रियंका बताती है कि हमने अपनी मां को अपने होश आने के बाद कभी स्वस्थ नहीं देखा। वह जीवित होते हुए भी हमारे लिए कभी जीवित नहीं रही। वह मानसिक रूप से अस्वस्थ थी। जब मैं 5 साल की थी तब से मैंने उसे ऐसे ही देखा है। हम भाई बहनों ने बहुत धैर्य से अपना जीवन निकाला और अपनी मां को तिल तिलकर मानसिक रोगी की तरह भटकते देखना कितनी बड़ी पीड़ा है इसका अहसास सिर्फ हम ही कर सकते हैं। मैंने और मेरे परिवार ने हर तरह से बहुत कठिन वक्त देखा है। हमारे पारिवारिक हालत साल दर साल कठिन होते जा रहे थे, कहीं से कोई रास्ता नहीं सूझता था। मैं घर में सबसे बड़ी हूं। इसलिए किसी से कोई अपेक्षा नहीं करती हूं। मैं अपने हालतों को देखकर ही कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य ना खोने का संकल्प साथ लेकर चली हूं। मेरे मन में एक ही बात रहती थी कि जब हम खुद करेंगे तभी आगे बढ़ेंगें। यदि मैं ही हार जाऊंगी तो मेरे पिता और भाई बहनों को कौन हौसला देगा? मेरी बीमार और विक्षिप्त मां को कौन संभालेगा? यही सोचकर मैं छोटे उम्र से ही खुद पर टिकने लगी थी कि मुझे ही अपना खुद का सहारा बनकर परिवार को सहारा देना है। ऐसा नहीं कि मैं अपनी इस लम्बी और कठिन यात्रा में टूटी नहीं। मैं बहुत रोती और बिलखती थी। मेरे पास रोने के लिए किसी मजबूत कंधे का सहारा नहीं था, फिर भी मैंने अपने को संभाला और पूरे परिवार को भी। हमने बार बार अपनी मां को बिना खाये पीये जंगलों में दौड़ते जाते देखा। हम चाहकर भी कुछ नहीं कर सके। मेरे पिता ने भी बहुत बर्दाश्त किया है। मेरे पिताजी पढ़े लिखे हैं पर उनको उनकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिल पाया। वह मन ही मन बहुत कुंठित रहते हैं पर कभी किसी से कुछ जाहिर नहीं करते। इस बात का भी मुझे बहुत दुख है पर अब जब से मैं कैफे डे में नौकरी पर आयी हूं तब से मुझे अपने पर भरोसा हो गया है। मैं अब यहीं पर नहीं रूकूंगी और बिना रूके हुए अपनी यात्रा पूरी करूंगी। मेरी आज यही कोशिश है कि मैं बेहतरीन काम कॉफी डे में कर सकूं।

प्रियंका बताती है कि उसके पिता सुपरवाईजर की नौकरी करते हैं और उनकी मासिक पगार 7-8 हजार रूपये प्रतिमाह है। प्रियंका ने घर के इन्हीं डगमगाते हालतों में 12 वीं पास की। वह खेती बाड़ी भी करती थी और अपनी पढ़ाई भी। भाई बहनों और पिता की देखभाल के साथ साथ उसने सामाजिक जिम्मेदारियों को भी सफलतापूर्वक निभाया। वह वर्तमान में बी.ए. की परीक्षा प्राइवेट दे रही है। इतनी विपरीत परिस्थितियों ने भी प्रियंका की मुस्कराहट नहीं छीनी और ना ही उसके साथ के लोग कभी जान पाये कि वह किन हालतों से गुजर रही है। दसवीं कक्षा में प्रियंका को 45% और 12 वीं में 50% नम्बर मिले और यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि प्राईवेट बी.ए. करते हुए उसे प्रथम साल में 75% नम्बर मिले हैं। वह बताती है कि पहले मां की तबियत बहुत खराब रहती थी

इसलिए पढ़ने का मौका ही नहीं मिलता था पर मां की मौत के बाद पढ़ने के लिए थोड़ा समय मिला तो पढ़ लेती थी। प्रियंका बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलती है। उससे पूछने पर कि उसने गांव में इतनी सुंदर भाषा बोलनी कैसे सीखी ? वह बोली मैंने टेलीविजन देखकर अंग्रेजी भाषा का ज्ञान लिया। मैं अपने पिता से पूछती थी कि इस शब्द का क्या अर्थ होता है ? मेरी अंग्रेजी भाषा में बहुत रूचि है। मैं सोचती हूं कि जिस काम में रूचि रखो वह हो ही जाता है। मैं अंग्रेजी बोली पर पकड़ बनाना चाहती हूं। इसके लिए मैं खुद से मेहनत करूंगी।

परिवार के बारे में वह बताती है कि हमारी पानी और बिना पानी वाली कुछ खेती बाड़ी है। हमारा संयुक्त परिवार है इसलिए जीवन की गाड़ी चल रही है। हमारे ताऊ जी मेरे पिता की आधी जिम्मेदारियां निभाते हैं। मुझे और मेरे भाई बहनों को भी उन्होंने ही पढ़ाया है। उनके अपने भी दो लड़के हैं पर उन्होंने हमें कभी किसी चीज की कमी नहीं होने दी। हमारा परिवार बहुत अच्छा है। यह संयुक्त परिवार की ही ताकत है कि मैं यहां तक पहंच पाई हूं। मेरी ताई जी बहुत सुलझे विचारों की एक आधुनिक सोच की महिला हैं। वह सोचती हैं कि लड़कियों को उनके पावों पर खड़े होना चाहिए। पापा और ताई जी की सोच बहुत ही प्रगतिशील है। उनके ही संस्कारों का असर पड़ा कि मेरे भाई बहन भी अपनी उम्र से ज्यादा समझदार निकल रहे हैं। मेरा भाई 14 साल का है और मुझे समझाता है कि दीदी तू आगे बढ़ेगी तो हमें खुशी होगी। तू आज परिवार की जिम्मेदारियां निभा रही है तो तुझे देखकर गर्व महसूस होता है। मेरे मन में एक ही बात रहती है कि मैं इतना अच्छा काम करूं कि मेरे पापा मेरे नाम से जाने जाएं।

जिंदगी की गाड़ी इतनी कठिन पगडंडियों पर चलते चलते कॉफी डे तक कैसे पहुंची ? यह पूछने पर प्रियंका बड़ी सरलता से कहती है कि ILFS के गिरीश सर की बदौलत ! मेरे पिता घर की हालतों के कारण दो नौकरियां करते हैं एक तो सुपरवाईजर की रात के शिफ्ट में और दूसरी दिन में किसी दोस्त के साथ प्राईवेट सप्लाई के काम में मदद करते हैं। पिता को गिरीश सर वहीं मिले और उन्होंने ही उनको इस ट्रेनिंग के बारे में बताया। पहले तो सबने कहा कि बाहर जाकर क्या होगा पर मेरी भी एक जिद्द थी कि बाहर जाकर ही पता चलेगा कि दुनिया कैसी है। मैंने पिता को समझाया और इंटरव्यू दे दिया। मैं पास होकर फूड एंड बीवरेज ट्रेड में देहरादून ILFS ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में आई। मेरे साथ घर से आने वाला कोई नहीं था। हिम्मत तो करनी ही होती है। मैं बस स्टैंड से ग्रेट वैल्यू होटल तक किसी तरह पहुंची और उसके बाद पूछकर पहुंच ही गई थी। मैं दस दिन यहां रूकी क्योंकि मेरी ट्रेनिंग बैच पूरा ना होने के कारण स्थगित हो गई थी। मैं निराश होकर घर चली गई और बाद में फिर से 45 दिन की ट्रेनिंग के लिए हलद्वानी आई।

प्रशिक्षण का अनुभव बहुत अच्छा था। हमें होटल मैनेजमेंट में प्रचलित ब्रांडों पीजा हट, कैफे डे, बरिस्ता आदि के बारे में बताया गया। हमारी सीनियर ललिता के बारे में भी बताया गया कि कैसे उसने फूड एंड बीवरेज प्रशिक्षण के बाद अपने और अपने परिवार के जीवन को संभाला है। हमें लगा जब ललिता दीदी कर सकती है तो हम क्यों नहीं कर सकते ? हमारे बैच में 6-7 लड़कियां

थीं। प्रशिक्षण के बाद सिर्फ ममता, फरजाना, तारा और प्रियंका ही काम पर आईं। बाकी ने प्रशिक्षण करके छोड़ दिया है। उनको यह काम पंसद नहीं आया। सबकी अपनी अपनी सोच है। मुझे यह काम ठीक लगा तो कर रही हूं। मुझे एक बात यह भी कहनी है कि हमारे समाज में लोग बिना देखे ही धारणा बना लेते हैं कि यह लाईन ठीक नहीं है। ऐसी ही एक प्रचलित धारणा होटल लाईन के प्रति बन चुकी है पर आज 6 महीनों से काम करने के बाद मुझे यहां काम करना ठीक लग रहा है।

प्रियंका बताती है कि दिसम्बर 2014 में मेरा कॉफी कैफे डे में चयन हुआ और मैं राजपुर के कैफे डे में आ गई। मुझे यहां काम करने के लिए मानसिक रूप से ललिता नेगी ने बहुत सहारा दिया। ILFS के गिरीश सर जब भी मैं निराश होती तो बहुत समझाते कि यदि अच्छा नहीं लगेगा तो छोड़ देना। उस वक्त प्रियंका की तनख्वाह 6000 रू. थी। आज उसे 7200 रू. मिलते हैं। उसका प्रोविडेंट फंड और इंश्योरेंस भी कटता है। वह बताती है कि पहले मैं बहुत शरमाती थी और मुझे बहुत हिचक भी लगती थी। मेरे लिए सब कुछ नया नया सा था। मैंने तो कैफे डे और कॉफी का नाम ही नहीं सुना था। मुझे लगता था कि क्या मैं कभी कॉफी बनाना सीख पाऊंगी। अब तो मैं धीरे धीरे सारे काम सीख गई हूं। मुझे इस काम का पूरा अनुभव हो गया है और इससे मेरे अंदर बहुत आत्मविश्वास आ गया है। मेरी इच्छा है कि मैंने जिस विषय की ट्रेनिंग ली है मैं उस मुकाम तक पहुंच सकूं। वह बड़ी शालीन लड़की है और लोगों को उनके कामों का श्रेय देना जानती है। प्रियंका बताती है कि मेरे सारे काम अच्छे से सीखने की वजह यहां के मैनेजर हैं। वह बहुत धैर्य से काम सिखाते हैं। मैं चाहती हूं कि यह गुण मैं भी अपनाऊं और लोगों को खूब काम सिखाऊं। मेरी वजह से लोग आगे बढ़ें यह मेरी दिली ख्वाहिश है।

प्रियंका बड़ी शालीनता से कहती है कि उसने यहां आकर काम करने का तौर तरीका सीखा, काम करने का सलीका सीखा, प्रेम से बात करना सीखा, ग्राहकों से नम्रता से पेश आना सीखा, पहले ग्राहक लड़ाई करके चले जाते थे पर अब हम अपने व्यवहार से उस क्षण को टालना सीख गये हैं। मैंने कॉफी का तो कभी नाम ही नहीं सुना था पर अब मैं अलग अलग तरह की कोल्ड और हॉट कॉफी बनाना सीख गई हूं। वह बड़े आत्मविश्वास से ऐसे कॉफी बीन और कॉफी पाउडर आदि के बारे में जानकारी देती है मानो कोई सधी हुई कॉफी व्यापारी हो। उसकी जानकारियों का स्तर इतना व्यापक और व्यवहार इतना मंझा हुआ कि उसे देखकर लगता है कि उसे अपनी ही कॉफी शॉप खोल लेनी चाहिए। वह बताती है कि हालतों ने मुझे निडर बनाया पर मेरे सामने कोई मौका नहीं था। ILFS ने अपने प्रशिक्षण में मौका दिया और मैंने उसका फायदा उठाया। मुझे आज ही मालूम पड़ रहा है कि हमारी इस ट्रेनिंग के पीछे UGVS है। मैं बहुत खुश हूं कि किसी कार्यक्रम में तो यह संजीदगी है कि वह जरूरतमंद बच्चों को आगे बढ़ा रहा है। मैं और मेरे जैसे बच्चे इस कार्यक्रम का प्रचार कर सकते हैं कि सबको एक बार तो कोशिश करनी ही चाहिए। हमने कोशिश की तो हम आगे बढ़े, ऐसे ही और बच्चे भी कोशिश कर यहां तक आसानी से पहुंच सकते हैं। मैं इसी कैफे डे

में मैनेजर तो बन ही जाऊंगी पर मैं मैनेजर से आगे कुछ बनना चाहती हूं। इस कैफे डे की औसतन बिक्री 25000 रू. होती है। मैनेजर ने हमें सिखाया कि ग्राहक हमारे भगवान होते हैं यदि हम उनके साथ अच्छे से पेश आयेंगे तो वह बार बार आयेंगे। यह मैनेजर एक अच्छे टीम लीडर हैं क्योंकि वह अपनी टीम को प्रोत्साहित करते हैं। मैंने यहां आकर सीखा कि सर्विस के साथ साथ अच्छा व्यवहार भी बहुत जरूरी है।

प्रशिक्षण के दौरान हमने सिर्फ पाठ पढ़ा था पर यहां आकर हम प्रयोग करना सीखते हैं और करते भी हैं। मेरी सोच है कि प्रशिक्षण के दौरान यदि थोड़ा सा प्रयोग भी सिखा दें तो हम अपने काम में बहुत मजबूत हो जायेंगे। वह बड़े आत्ममुग्ध भाव से कहती है कि मेरा चयन ब्रू मास्टर के लिए हो गया है। वह अपने पैसों से अभी तक कोई बचत कर नहीं पाई है। नये शहर और नई नौकरी की जिम्मेदारियों ने उसे जरूरत की चीजें जुटाने में ही सारी सैलरी खत्म करवा दी। मैं एक बार घर भी गई। पापा ने कहा तू अपनी पढ़ाई पर ही पैसे खर्च कर पर मैं अपने भाई–बहन को पढ़ाना चाहती हूं। अपने भाई को इंजीनियर और बहन को अच्छी डांसर बनाना चाहती हूं। वह बहुत अच्छा नृत्य करती है। हर चीज के लिए पैसा चाहिए इसलिए मैं नौकरी कर रही हूं। भाई प्राइवेट स्कूल में पढ़ता है। उसकी फीस के लिए पैसा चाहिए। मेरी जिंदगी अपने पापा और भाई बहनों के लिए है। मैंने सोचा है जिस नौकरी की वजह से मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास आया है उसे मैं बीच में नहीं छोड़ूंगी। मुझे फोटोग्राफी का बहुत शौक है और मैं खाली समय में फोटाग्राफी करती हूं। मुझे गाना गाना बहुत अच्छा लगता है। यह बोलते बोलते वह आहिस्ता आहिस्ता एक गीत की मीठी धुन गुनगुनाने लगी। प्रियंका को देखकर लगा कि वह बहुत ही संजीदा लड़की है जो अपने इतने कठिन हालतों के बावजूद भी जीवन को बहुत सरलता, सहजता और सुंदरता से जीने का हौसला रखती है।

प्रियंका के बारे में उसके प्रशिक्षकों ने बताया कि इसका चयन ही नहीं हो पा रहा था। यह देखने में इतनी सीधी और चुपचप रहने वाली थी कि हम भी हार गये थे। एक दिन हमने धमकी भरे अंदाज में कहा कि हमारा प्रशिक्षण संस्थान आपको इतने बच्चे देता है क्या आप एक लड़की को हमारे कहने पर ट्रायल पर नहीं रख सकते? संस्थान ने हमारी बात का सम्मान रखने के लिए उसे इस शर्त पर काम दिया कि इस कैफे में दो तीन रखकर इसे किसी और कैफे में भेज देंगे। हैरानी की बात है कि प्रियंका ने दो तीन दिन में ही इतने अच्छे से काम किया कि वह यहां की जरूरत बन गई है। इस कैफे से सभी बच्चों को तैयार कर बाकी जगह भेजा जाता है। कैफे डे संस्थान के शहर मैनेजर का कहना है कि यह इतनी छोटी उम्र में ही इतनी व्यवहार कुशल है और इसका काम इतना अच्छा है कि हम चाह कर भी इसकी कोई कमी नहीं खोज पाते हैं। वह गर्व से कहते हैं कि यह लड़की अपनी प्रतिभा के बल पर बहुत दूर तक जायेगी चाहे यह कहीं भी नौकरी करे? उसके प्रशिक्षकों का कहना है कि इसकी आज तक कोई शिकायत नहीं आई। प्रियंका बहुत साफ साफ बात करती है और कहती है कि मैंने अपनी पढ़ाई के साथ खेती बाड़ी और पशुओं की देखभाल सब कुछ की है पर मुझे गांव का काम बिलकुल पंसद नहीं है क्योंकि पहले हम अपने पिताजी के साथ हवालबाग में सरकारी क्वार्टर

में रहे। वहां बहुत सारे वैज्ञानिक और उनके परिवार रहते थे। उनको देखकर मेरा मन भी खूब पढ़ने को होता था। अब हमारी मां नहीं है सो हमें घर वापस आना पड़ा। औरतें पापा से कहतीं कि तुम्हारी लड़की होशियार है इसे नौकरी कराओ। पिछले एक साल से मैं कभी प्रशिक्षण, कभी इंटरव्यू और कभी काम के सिलसिले में दौड़ती ही जा रही हूं। इस कारण मेरा खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आ गया है। ऐसा नहीं कि मेरे से काम के दौरान कभी गलतियां नहीं हुईं पर मैं तुरंत बताकर लॉग बुक में नोट कर देती हूं। मैनेजर समझाने वाले अंदाज में डांटते हैं पर उसी समय मैं यह तय कर लेती हूं कि अब यह गलती दुबारा नहीं होगी और मेरी कोशिश होती है कि वह गलती फिर ना हो।

पहले हमारे गांव में यह धारणा थी कि यह होटल में काम कर रही है पर मेरी सोच है कि लोगों के कहने पर अपनी धारणा कभी नहीं बनानी चाहिए। किसी चीज को सामने देखकर ही उसके बारे में ख्याल बनाना चाहिए। इससे बहुत अच्छे से आप काम को कर लेते हो। मैं तो यहां काम करके बदल ही गई हूं। मुझे खुद पर भरोसा नहीं होता कि यह मैं ही हूं। मैंने यहां रहकर अपने ही अनुभव से एक बात बहुत अच्छे से सीखी कि जो काम करो वह मन लगाकर करो और जो भी करो खुल कर करो। कभी भी मन मारकर काम नहीं करना चाहिए क्योंकि उससे उस काम में पछतावे की गुंजायश नहीं रहती है। यही बात काम करते करते मेरे मन में बैठ गई है। यह मेरा बहुत बड़ा अनुभव है।

एक बात मैंने और सीखी है कि हर कोई अच्छा नहीं होता और ना ही हर कोई बुरा होता है। काम में तो हरेक को थोड़ा बहुत समझौता तो करना ही पड़ता है और मैंने अब आगे बढ़ने के लिए समझौता करना सीख लिया है। मेरा चयन भी बहुत मुश्किल से हुआ पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। मैंने धैर्य और शालीनता से अपनी बारी का इंतजार किया और आज मैं इस महत्वपूर्ण जगह पर अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर टिकी हुई हूं। उसके कैफे मैनेजर बताते हैं कि यह पहले बहुत झिझकती और डरती थी पर जैसे जैसे इसे काम आया है वैसे वैसे यह निडर और शालीन हो गई है। यह कैफे डे के मानकों के अनुसार काम कर अब बहुत परिपक्व हो गई है। बहुत जल्दी ही कॉफी एक्सपर्ट बन जायेगी। यदि यह इसी तरह से काम करती रही तो यह 2 साल में मैनेजर बन जायेगी।

प्रियंका ने एक बहुत अच्छी बात कही कि इस प्रशिक्षण ने मुझे मेरे खोये सपनों की दुनिया में झांकने का मौका दिया है। मुझे एक बात कहनी है कि UGVS के इन प्रयासों के कारण मेरे जैसे बहुत से जरूरतमंद बच्चे अपनी उम्मीदों को पूरा कर अपने परिवारों का सहारा बन रहे हैं। मैं अपने उदारहण से सबको बताना चाहती हूं कि UGVS सबको मौका दे रहा है और हमें इसका फायदा उठाना चाहिए। प्रियंका को देखकर और उसकी हर बात की गहराई समझकर यह बात बहुत स्पष्ट है कि यह कैसी भी परिस्थिति हो उसको संभालना जानती है और मानसिक रूप से बहुत ही मजबूत है। प्रियंका की सबसे बड़ी खूबी है उसका जीवन और जीवन के व्यवहारिक पहलुओं के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण जिसकी बदौलत वह छोटे छोटे सपने देखती है और उनको पूरा करने के लिए जी जान से मेहनत कर रही है। उसकी बातें सुनकर उसका यह कहना बिलकुल सही लगता है कि मुझे प्रशिक्षण से मेरी राह मिल गई है।

हां! मैंने मौके का फायदा उठाया

पुष्पा मनराल 8859219798
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

पुष्पा अल्मोड़ा जिले के स्याल्दे ब्लॉक, गांव उदयपुर की रहने वाली है। पुष्पा की मां गांव में खेती बाड़ी करती हैं। पिता एक प्राइवेट कम्पनी में छोटा मोटा रोजगार करते हैं। उसकी दो बहनें कक्षा 12 व 10 में पढ़ रही हैं। पुष्पा का कोई भाई नहीं है जिसका उसे बेहद दुख है। वह बात बात में कहती है यदि हमारा भाई होता तो वह हमारी खोज खबर लेता कि मैं यहां परदेश में कहां हूं? क्या नौकरी कर रही हूं? घर जाने में कभी देर होती तो हमें डांटता या लेने आता। मेरी मां को भी अपना बेटा ना होने का बहुत दुख है इसलिए मैं अब अपने घर में भाई और बहन दोनों की ही भूमिका निभाना चाहती हूं। मां मुझे अपना बेटा और बेटी दोनों ही मानती है। पुष्पा के परिवार को खेतों से दो तीन महीने का ही राशन मिल पाता है। पिता के रोजगार से किसी तरह घर का खर्च चलता था। हम पहले पिताजी के साथ पंजाब रहते थे इसलिए बहुत ज्यादा काम खेती का आता नहीं है पर मजबूरी में तो सब करना पड़ता है। पुष्पा कक्षा 6 तक पंजाब में ही पढ़ी है। उसने गांव से 12वीं कक्षा पास की है। स्कूल जाने के लिए उसे 7-8 किमी. पैदल जाना पड़ता था। बी.ए. करने के लिए मां ने मना कर दिया। पिता से कहा तो उन्होंने कहा कि तू मेरे साथ कहां रहेगी? तुम अपना खर्चा खुद उठाओ। मैं जिद करती तो शायद मां मेरा साथ देती पर मैंने जिद नहीं की। बस मेरे सपने किसी अनिश्चितता के धुंध में कहीं खो से गये थे।

मैंने भी हालतों से समझौता कर लिया पर अचानक एक दिन प्रधान जी ने बताया कि हल्द्वानी में होटल मैनेजमेंट का प्रशिक्षण है। कोई पैसा भी नहीं लगेगा। मैं तो तैयार हो गई और किसी तरह मां पिता को भी मनाया पर एक परेशानी थी कि मुझे बहुत चक्कर आते थे। इसका कारण क्या था यह तो पता नहीं क्योंकि डॉक्टर के पास कभी गये नहीं गये। मैं 6 महीने से पीजा हट में काम कर रही हूं तब से मेरे यह चक्कर आने अपने आप बंद हो गये हैं। मैं अब स्वस्थ हूं। मां भी कहती है कि मेरे

सिर से बोझ हट गया है तेरी तबियत का जानकर। यह मेरी नौकरी की एक बड़ी उपलब्धि है। हम अपने गांव से दो लड़कियां तारा मनराल और मैं प्रशिक्षण के लिए आये थे। पहले बहुत डर लगता था पर अब नौकरी करने के बाद यह डर खत्म हो गया है। बाहर निकलकर बहुत कुछ देखा सीखा। प्रशिक्षण में ही मेरी आंखें खुली कि हम लोग दुनिया से कितने पीछे हैं। दुनिया कहां की कहां पहुंच गई हैं। जो रास्ते परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण बंद हो गये थे वह अब खुलते नजर आ रहे हैं। सपने देखने की ताकत और कुछ अपने लिए और कुछ अपने परिवार के लिए करने का हौसला नजर आ रहा है। प्रशिक्षण के बाद मेरा वालमार्ट, पीजा हट, कॉफी कैफे डे और बैरिस्टा में इंटरव्यू हुआ। मैं गांव से सीधे देहरादून आई। बहुत घबराहट हो रही थी। हम पांच लड़कियां किसी तरह पूछते पुछाते यहां पहुंची। उस वक्त लगता था कि कोई शुरू में थोड़ी मदद कर दे तो बड़ा सहारा रहता है।

मैं नवम्बर 2014 में पीजा हट पहुंची। मैनजर से औपचारिक बातचीत के बाद थोड़ा सहज हुई। उन्होंने पीजा हट के तौर तरीकों और कुछ रैसिपी के बारे में बताया। सबसे पहले पीजा बनाना सीखा। मैंने तो कभी पीजा नाम ही नहीं सुना था। मुझे बड़ी हंसी आती थी कि पीजा के पीछे इतने बड़े बड़े होटल चल रहे हैं। हम कहां पहाड़ का मोटा अनाज खाने वाले लोग और कहां यह पीजा पर मैंने सब कुछ धैर्य से सीखा। पीजा हट में हम यहां पीजा के साथ बेस भी बनाते हैं। मैं बहुत अच्छा पीजा बना लेती हूं। हमें पीजा बनाते समय अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को कायम रखना पड़ता है। मुझे बड़ी खुशी होती जब सब मेरे पीजा की तारीफ करते हैं। मैं बेस भी बना लेती हूं। शुरू में मुझे टापिंग याद नहीं रहते थे पर अब अलग अलग टॉपिंग बना लेती हूं। मैंने 2-3 महीने में पीजा बनाने का सारा काम सीख लिया है। गांव में दाल भात खाने वाली पुष्पा को कोर्न पीजा सबसे अच्छा लगता है। पहले वह रोज पीजा खाना पंसद करती थी पर अब कभी कभार ही खाती है। मेरे घर वालों को तो पता ही नहीं है कि मैं कहां और कैसे काम कर रही हूं। आयेगा भी कौन? भाई होता तो आता। पिताजी बहुत दूर अपनी छोटी सी नौकरी पर हैं। जब छुट्टी मिलेगी तो इस बार आयेंगे। पुष्पा को अभी प्रोविडंट फंड और इंश्योरेंस का पैसा काटकर हाथ में 5769 रूपये मिलते हैं। शुरू में काम करना कठिन था पर अब अपने पर इतना भरोसा हो गया है कि अकेले भी कई बार सब कुछ संभाला है। यह बहुत ही व्यस्त पीजा हट है। यहां बुद्धवार के दिन रू. 30000 तक की बिक्री हो जाती है। उस दिन सुबह 8 बजे से 6 बजे तक व्यस्त रहते हैं। घर की याद आती है तो वापस जाने का मन करता है पर खुशी होती है कि मैं अब दुनिया भर में पसंद की जाने वाली एक डिश की कारीगर बन चुकी हूं।

मैंने होटल चलाने के तौर तरीके और प्रबन्धन कला सीख ली है। मेरे घर वाले इस नौकरी के कारण खुश हैं कि यह अपने पांव पर खड़ी है। अपना खर्चा खुद उठा रही है। होटल लाइन में आने का तो नहीं सोचा था पर अब बहुत अच्छा लग रहा है। मैं बाहर नहीं जाना चाहती। उत्तराखंड में रहकर

हीकबिअ् काम करूंगी। मेरी पढ़ने की जो चाहत पैसों की कमी के कारण खत्म हो गई थी वह पूरी होती दीख रही है। मैं अब बी.ए. प्राईवेट करूंगी। हां मैंने एक बात तय की है कि मैं शादी के बाद भी नौकरी करना चाहती हूं। मैं जानती हूं कि घर और काम की जिम्मेदारियां साथ साथ निभाना कठिन है फिर भी मैं काम करना चाहूंगी। अब अपने पांव पर खड़े होकर देख लिया है और उसका आनन्द भी उठा रही हूं सो फिर से जीवन में मायूस नहीं होना चाहती। मैं खूब काम करके अपनी बहनों को अध्यापिका बनाना चाहती हूं।

हम गांव की लड़कियों ने कभी एअर कंडीशनर नहीं देखे। बस खुली हवा में सांस ली। पहले पहल तो यहां मेरा दम घुटा पर अब आदत हो गई है। गांव में हम डरे डरे से रहते थे पर अब मैं निडर हो गई हूं। यहां आकर बात करने का सलीका, लोगों से मिलना जुलना और उठने बैठने का सलीका भी आ गया है। मैं अब बहुत खुल कर किसी से भी बात कर लेती हूं। काम करते करते इन 6-7 महीनों में खुद पर भरोसा हो गया है। पुष्पा बहुत ही ठहरे और गंभीर व्यक्तित्व की धनी लड़की है। वह बहुत कम और सोच विचार कर बोलती है। पुष्पा बोलती है कि इससे अच्छा मौका मुझे कभी मिला नहीं और अब जो मिला है उस पर क्या चीर फाड़ करनी है? यह भी एक सुंदर अवसर है। अब इसे ही पहला कदम मानकर आगे बढ़ने का तय किया है। इंसान के जीवन वह सब तो नहीं होता जो कुछ वह चाहता है। मुझे एक मौका मिला और मैंने उसका फायदा उठाया। जिस दिन इससे अच्छा अवसर हाथ आयेगा उसका भी उपयोग करूंगी अब यह नौकरी करके इतना तो जांचना परखना आ ही गया है कि मेरे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा? वह थोड़ी देर चुप रहकर बोली कि कुल मिलाकर मैं अपने पांव पर खड़े होकर बहुत खुश हूं!

पुष्पा के बारे में उसके प्रशिक्षकों का कहना है कि जब पुष्पा को पहली बार देखा था तो यह आम पहाड़ी लड़कियों की तरह बेहद संकोची, शर्मीली और डरी सहमी सी रहती थी। कुछ पूछने पर वह बहुत मुश्किल से जवाब देती थी। अचानक से गांव के वातावरण से निकलकर शहरों के वातावरण में एक अन्तर्राष्ट्रीय होटल चेन के साथ काम करने के दौरान हमारी कई प्रशिणार्थियों के हौसले टूटे, मनोबल टूटा, लड़कियां फोन कर अपनी शिकायतों को रोना रोती थीं, कुछ ने काम भी छोड़ा पर पुष्पा ने कभी शिकायत नहीं की। जब हमने इससे बात की इसने हमेशा कितनी भी परेशानी रही हो बड़े प्रेम से संयत होकर ही बात की। आज पुष्पा सहजता और शांति से काम कर रही है। इसको देखकर ही इतना अच्छा लग रहा है कि ना तो कुछ पूछने का मन करता है और ना बात करने का बस इसे चुपचाप काम करते देख यह ख्याल आता है कि इसने अपनी परिस्थितियों को कितनी सहजता से नियंत्रण में ले लिया है। पुष्पा इस बात की मिसाल है कि शांत होकर परिस्थितियों पर नियंत्रण कैसे पाया जाता है?

पुष्पा से बात करना अपने आप में एक शांत, साफ सुथरी और ठहरी झील में पत्थर फेंकने जैसा है कि एक प्रश्न से थोड़ी देर के लिए पानी में हलचल होती है पर अचानक से पानी फिर ठहरा प्रतीत

होता है। वह वास्तव में एक ध्यानमग्न तपस्वी की तरह लगती है जिसने अपने काम में रचना बसना सीख लिया है और अपने और अपने परिवार की भविष्य की योजनाओं का ताना बाना भी पीजा हट में बैठकर पीजा बनाते बनाते चुपचाप बुन लिया है। वह अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती है, अपनी दोनों बहनों को सरकारी टीचर बनाना चाहती है, मां जो दिन रात इस परिवार के लिए खटती रहती है उसको अपने साथ रखकर आराम देना चाहती है। वह पिता को आराम के साथ साथ गांव में सम्मान दिलाना चाहती है कि इनकी लड़कियां बहुत लायक है और खुद यहीं पर एक कुशल और सफल प्रबन्धक बनकर देहरादून में सबके बीच अपनी पहचान बनाना चाहती है....इन सुंदर सपनों को बताते बताते सुघड़ पुष्पा बहुत भावुक हो उठी। पुष्पा बहुत बात करना नहीं चाह रही थी पर उस शांत झील की गहराई की थाह महसूस कर एक बात जरूर कही जा सकती है कि पुष्पा लम्बी रेस का घोड़ा है! कुदरत उसके सुंदर और सुलझे सपनों में वह सुंदर रंग भरे जिसकी उसे चाहत है..।

केदारनाथ आपदा से उभरा रोहित

रोहित कुमार 08951535138
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

रोहित कुमार उत्तराखंड के सुदूर जनपद चमोली के थराली ब्लॉक के चौंडा गांव का रहने वाला है। रोहित की उम्र 19 साल है। रोहित एक साधारण किसान परिवार से है। उसके माता पिता खेती बाड़ी और मेहनत मजदूरी करके परिवार का पालन करते हैं। रोहित के परिवार के पास नियमित आजीविका का कोई साधन ना होने के कारण रोहित को बहुत आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ा। जीवन की कठिनाईयों के बीच ही रोहित ने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय चौंडा से पूरी की। प्राइमरी पास करने के बाद रोहित ने जूनियर हाईस्कूल की परीक्षा राजकीय जूनियर पब्लिक स्कूल पिंडर थराली से पास की। घर परिवार की कठिनाईयों के बावजूद रोहित के पिता ने उसे आगे की पढ़ाई पूरी करने के लिए राजकीय इंटर कालेज थराली में भर्ती किया। परिवार की परेशानियों को देखते हुए रोहित आगे नहीं पढ़ना चाहता था। उसके मन में यही ख्याल आता था कि किसी तरह उसे कोई नौकरी मिल जाये जिससे वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने में पिता की थोड़ी मदद कर सके।

रोहित बताता है कि मैं इंटर के बाद आगे नहीं पढ़ना चाहता था। वह कोई कोर्स करके अपने पांवों पर खड़े होना चाहता था इसलिए उसने आई.टी.आई. करने की सोची। उसका ख्याल था कि यह कोर्स करके उसे तुरंत नौकरी मिल जायेगी पर ऐसा नहीं हुआ। रोहित ने जोशीमठ से 1 साल का आई.टी.आई. किया पर उसे नौकरी नहीं मिल सकी। रोहित घर में परेशान हो गया क्योंकि उसके घर में सिर्फ पिता ही कमाने वाले सदस्य थे। रोहित बताता है कि हमारा बड़ा परिवार है और एक पिताजी की कमाई पर ही घर का सारा खर्चा चलना मुश्किल होता जा रहा था। परिवार में पैसों के अभाव में बहुत दिक्कतें आने लगी थीं।

यह सब चल ही रहा था कि अचानक जून 2013 में केदारनाथ में हुए जल प्रलय के कारण यह क्षेत्र आपदा के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ। आपदा के कारण लोग बहुत परेशान थे। रोहित के

परिवार का भी आपदा में बहुत नुकसान हुआ। तीर्थ यात्रा से चलने वाले सारे रोजगार खत्म हो गये थे। इस आपदा ने ना केवल रोहित के परिवार के खेतों को नुकसान पहुंचाया बल्कि रोजगार के सारे साधनों पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिया था। पूरे क्षेत्र में हताशा व निराशा का माहौल था। लोग बहुत डर गये थे। इन्हीं हालतों में अचानक एक दिन रोहित को पता चला कि देहरादून की एक कम्पनी आई. एल.एफ.एस. उत्तराखंड सरकार की ओर से आतिथ्य सत्कार ट्रेड में एक नि:शुल्क कोर्स करना करवा रही है। यह कोर्स आवासीय होगा। इस कोर्स हेतु चमोली जिले के 12वीं पास युवाओं को साक्षात्कार हेतु बुलाया गया था। रोहित यह जानकर साक्षात्कार हेतु गया। लोग इस बात पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे कि कोई कोर्स क्या सच में नि:शुल्क होगा ?

रोहित ने सोचा चलो घूम कर आते हैं और वहां जाने से सच का पता भी चल जायेगा। रोहित का चयन हो गया और वह एक माह के प्रशिक्षण हेतु अप्रैल 2014 में देहरादून आ गया। प्रशिक्षण के दौरान जगदीश कड़ाकोटी नामक युवा रोहित का दोस्त बन गया था। वह हमेशा उसका हौसला बढ़ाता और धीरे धीरे उसके बैच के और लड़के भी उसके मित्र बनते गये। दोस्तों का सहारा पाकर रोहित के मन से आपदा का भय और भविष्य की चिंता के बादल धीरे धीरे छंटते गये। शुरू में उसे अंग्रेजी से बहुत डर लगता था पर कोर्स के दौरान सॉफ्ट स्किल की ट्रेनिंग के सत्रों की मदद से उसका यह भय भी जाता रहा और उसका भाषा पर भी नियंत्रण होने लगा था। रोहित आपदा के बाद जिस पीड़ा, भय और भविष्य के प्रति अनिश्चिंतता के भाव से भरा प्रशिक्षण में आया था ऐसे में उसका टूटना स्वाभाविक ही था। ऐसे में रोहित के हौसले को दाद देनी होगी कि वह अपने बदले माहौल और जिंदादिल दोस्त जगदीश कड़ाकोटी की मदद से इस पीड़ा से बाहर निकलकर आया।

रोहित हमेशा शांत रहता था। रोहित के प्रशिक्षक बताते हैं कि उसको देखकर उसकी परेशानियों का अंदाजा नहीं लगता था। वह बड़ी नम्रता से बताता है कि प्रशिक्षण के बदले माहौल, दोस्तों की मदद और भविष्य में रोजगार मिलने की संभावना ने मुझमें एक नई उम्मीद का संचार किया। मुझे यह भरोसा होने लगा था कि अब मैं अपने और अपने परिवार को जरूर सहारा दे सकूंगा। यही भरोसा मुझे इतने कठिन हालातों में भी शांत और संयमित रखता था। रोहित का प्रशिक्षण पूरा होने पर उसका चयन दिल्ली में बारबीक्यू नेशंस बंगलूर नामक कम्पनी हेतु हुआ। बार बी क्यू नेशंस बंगलूर एवं देश के कई महानगरों में स्थित एक प्रतिष्ठित आउटडोर केटरिंग कम्पनी है। रोहित के माता पिता दूर होने के कारण घबरा रहे थे। रोहित भी जाने का मन नहीं बना पा रहा था पर प्रशिक्षकों ने उसे हौसला दिया कि तुम अकेले नहीं हो। हम हमेशा फोन पर संपर्क में रहेंगे। कोई दिक्कत नहीं होगी और कभी ऐसा लगे तो हमें फोन करना। इस भरोसे ने रोहित को सहारा दिया और वह यह सोचकर जाने को तैयार हो गया कि यदि नहीं समझ में आयेगा तो वापस आ जाऊंगा। रोहित इस प्रशिक्षण के दौरान देहरादून में रहते हुए काफी आत्मविश्वासी हो गया था। उसे खुद पर भी भरोसा हो गया था। उसका यह विचार पक्का होता जा रहा था कि अब उसे अपने परिवार के लिए कुछ ना कुछ करना ही है। रोहित ने बारबीक्यू नेशंस, बंगलूर में एल.-1 स्तर पर अपनी नौकरी की शुरूआत

की। यह एक विश्व स्तरीय फूड चेन है। नई जगह पर रोहित को काफी दिक्कतें हुई पर वह धीरे धीरे काम सीख गया। रोहित के प्रशिक्षकों का कहना है कि रोहित बहुत ही जिम्मेदार और चुपचाप काम करने वाला लड़का है। वह खतरे लेना जानता है और उन खतरों में से अपने लिए मौके खोजने में भी उसे महारत हासिल है। यह काम के प्रति बहुत समर्पित है और कम्पनी से बहुत कम छुट्टी लेता है लेकिन अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए वह नियमित रूप से फोन पर उनके सम्पर्क में रहता है और घर भी पैसा भेजता है।

रोहित को पहला वेतन रू. 10338 मिला। कुछ काम सीखने के बाद रोहित का प्रमोशन 10 महीनों के बाद एल.-2 स्तर पर हो गया। अब वह कम्पनी का नियमित कर्मचारी है। आज रोहित बेकरीमैन रैंच शैफ के तौर पर अपनी कम्पनी में काम कर रहा है। अब रोहित की तनख्वाह भी बढ़ गई थी। रोहित को आज पी.एफ., ग्रेच्युटी और ई.आई.एस. और अन्य पैसा कटने के बाद लगभग 11000 रू. हाथ में मिल जाता है। उसकी कुल तनख्वाह 13,290 रू. है। पैसा बढ़ने के साथ साथ उसके परिवार की दिक्कतें भी कम होने लगी थीं। रोहित के लिए पहला वेतन मिलना अविस्मरणीय पल था। रोहित की खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब उसने अपने पहले वेतन से माता पिता के लिए पैसा घर भेजा। रोहित नियमित रूप से घर पैसा भेजता है। उसके पैसे से माता पिता को बहुत सहारा मिला है। आपदा के कारण टूटे परिवार में बेटे की नौकरी से एक भरोसा और उम्मीद जगी। परिवार के लिए यह पैसे से कहीं ज्यादा अंधेरी में चमकती एक किरण थी। रोहित की योजना है कि वह धीरे धीरे पैसा जमा करके अपनी छोटी बहन की शादी करेगा। वह कम्पनी में ही मेहनत करके आगे बढ़ना चाहता है। रोहित का ध्यान इस वक्त अपनी आगे की पढ़ाई से ज्यादा अपने परिवार की जिम्मेदारियों को पूरा करने पर केन्द्रित है। एक साल बंगलूर में रहने से रोहित ने बहुत कुछ देखा और समझा है। वह अब बहुत समझदार और जिम्मेदार हो गया है। उसके मन से भविष्य की सभी आशंकाए खत्म हो चुकी हैं। वह समझ गया है कि वह जितना मेहनत करेगा वह और उसका परिवार उतना ही आगे बढ़ेंगे। वह दिन रात मेहनत करता है। रोहित और उसका परिवार इस नौकरी से बहुत खुश है।

रोहित ने बेकरीमैन शैफ बनकर बारबीक्यू नेशंस में बनने वाले सभी बेकरी की चीजों को बनाने में महारत हासिल कर ली है और वह पूरी बेकरी की चीजों को बखूबी बनाता है। रोहित का सपना है कि वह आतिथ्य सत्कार क्षेत्र में एक्जक्यूटिव शैफ के तौर पर काम कर सके और देश विदेश में खूब नाम कमाये। थराली क्षेत्र के युवाओं और अपने दोस्तों के बीच रोहित को एक बहुत ही जिम्मेदार युवा समझा जाता है। अपने क्षेत्र के लोगों के लिए रोहित का यही संदेश है कि वह भी मेरी तरह आई.एल.एफ.एस. और आजीविका कार्यक्रम के प्रशिक्षण प्राप्त करें और बिना पैसे के प्रशिक्षित होकर अपने परिवार का सहारा बनें। रोहित कहता है कि मैं इस बात के लिए आजीविका कार्यक्रम का बहुत आभारी हूं कि उसके दिए प्रशिक्षण से मुझे और मेरे परिवार को आपदा की विपदा से ना केवल आर्थिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से उभरने में भी बल मिला।

तारा हूं मैं और तारा बनूंगी!

तारा मनराल 07579220951
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

हां मैं तारा हूं... और 'तारा' बनूंगी! और तारा बनकर अपने उन जाने अनजाने दोस्तों का सहारा बनूंगी जिनकी आंखें मेरी ही तरह किसी भरोसेमंद साथी की तलाश में अंधेरों में भटक रही हैं और वह इंतजार में हैं कि उनकी जिंदगी में भी कभी ना कभी तो कोई UGVS नाम का कोई 'तारा' उभरकर जरूर उसे जरूर रोशन करेगा। मेरी जिंदगी में यह UGVS नाम का तारा ऐसे ही नहीं चमका बल्कि मैंने अपनी इस छोटी सी नौकरी को पाने के लिए सर्दी की रातों में अल्मोड़ा से देहरादून तक अकेले सफर किया है। मैंने वह पूरी रात भविष्य के अनजाने डर और कड़ी ठंड का सामना करते निकाली है। यह बात मैं कभी नहीं भूलूंगी कि मैंने यहां तक पहुंचने के लिए कितनी मुश्किलें झेली हैं पर आज मैं UGVS की वजह से ना केवल अपने पांव पर खड़ी हूं बल्कि मेरे बिखरते परिवार को भी एक भरोसा हो गया है कि तारा की नौकरी के साथ हमारे भी अच्छे दिनों की शुरूआत हो गई है। यह दिल को छूने वाले शब्द 22 साल की तारा मनराल के हैं जो उत्तराखंड के सीमांत जिले अल्मोड़ा के उदयपुर गांव, तहसील भिकियासैंण की रहने वाली है।

तारा के इन्हीं शब्दों में उसकी पूरी जीवन यात्रा की पीड़ा और सुनहरे भविष्य का सार महसूस किया जा सकता है कि वह किन कठिन हालतों में वह छोटे से गांव उदयपुर से अपने सपनों की पोटली बांधकर भय, दुविधा और संशय में चली थी और कैसे एक मजबूत और भरोसेमंद संस्थान उसकी और उसकी जिंदगी का सहारा बनकर तब तक साथ साथ चलता रहा जब तक वह मजबूती से नए रास्ते पर खड़ा होना नहीं सीखी। तारा मनराल के परिवार में उसके माता पिता के अलावा उसकी बूढ़ी दादी, दो छोटे भाई और एक बहन है। तारा घर की सबसे बड़ी लड़की है। तारा के पिता का रोजगार का कोई साधन नहीं है। मां अक्सर बीमार रहती है। हां एक बात है कि गांव में खेती बाड़ी

पानी वाली होने के कारण थोड़ा उत्पादक है। दादी की देख रेख में तारा और उसकी बहन पूरी खेती किसानी करके साल भर का राशन किसी तरह से जुटा ही लेते हैं पर सब्जी भाजी, नमक, तेल और अन्य खर्चों के लिए पैसों की समस्या परिवार की सबसे बड़ी चिंता है। गांव में बंदरों की समस्या बढ़ने से गांव वाले अब सब्जी नहीं उगाते हैं। परिवार में किसी तरह से पिता ने कर्ज लेकर गाय और भैंस का इंतजाम किया। परिवार की आजीविका का मुख्य साधन रोज 5-6 किलो दूध बेचकर अपना गुजारा करना है। उसी पैसे से बच्चों की पढ़ाई और दुख बीमारी आदि का खर्चा चलता है। गांव में रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की दिक्कतों के कारण अब ज्यादातर परिवार गांव से पलायन करने का मन बना चुके हैं। कुछ लोग तो काम धन्धों की तलाश में गांव छोड़ चुके हैं। तारा से इस बारे में बात करने पर वह बेबाक कहती है कि किसके भरोसे लोग यहां रूकेंगे ? आखिर हम सबने पेट तो पालना ही है। काम की तलाश में बाहर तो जाना ही पड़ेगा। अगर गांवों में रोजगार का साधन होता तो हम कभी भी अपने गांवों से बाहर नहीं निकलते। परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने के साथ ही साथ तारा ने अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी और वह दोनों बहनें बारी बारी से एक दिन स्कूल जाते और एक दिन घर का काम करते। ऐसी विकट हालत में भी तारा 7-8 किमी. दूर राजकीय कन्या इंटर कालेज स्यालदेह में पढ़ने जाती। किसी तरह उसने 12वीं कक्षा पास की। तारा छोटे कद काठी की मगर बहुत फुर्ती से काम को खत्म करने वाली लड़की है। तारा को एक बार देखकर वह बाहर से बहुत बिंदास और लापरवाह दिखती है और अपनी बातचीत और शारीरिक भाषा से भी वह यही सब जाहिर करने की कोशिश करती है पर उसकी मासूम आंखों में झांककर आप उसमें तारा से 'तारा' बनकर टिमटिमाने की कहानी का संघर्ष, सत्य, पीड़ा और जज्बा स्वयं महसूस कर सकते हैं। तारा को मिलकर उसकी कहानी का मर्म जानकर कौशल वृद्धि की दिशा में किए जा रहे इन छोटे छोटे प्रयासों की सार्थकता साबित होती है।

तारा से यह पूछने पर कि वह एक पहाड़ी गांव के खेत खलिहानों से देहरादून तक कैसे पहुंची ? वह सुपर फास्ट रेलगाड़ी की रफ्तार से बोली कि हमारे गांव के प्रधान जी ने मेरे पिताजी को जून 2014 में UGVS और उसके द्वारा 12वीं पास बच्चों के लिए दिए जाने वाले प्रशिक्षणों के बारे में बताया। पिताजी ने सारी जानकारी लेकर घर में बताया पर दादी ने साफ मना कर दिया कि अकेले लड़की अनजान लोगों व शहर में कैसे रहेगी ? वह बोली कि हम कम खा पी लेंगे पर लड़की की जात है कैसे भेज सकते हैं ? पर यहां मां और पिताजी मेरे पक्ष में मजबूती से खड़े नजर आये। उन्होंने बोला कि जब यह एक बार घर से बाहर जायेगी तभी तो सीखेगी। बड़ी कशमकश के बाद मेरे ट्रेनिंग में जाने की बात तय हुई। घर में सहमति बनने के बाद मैंने ILFS संस्था में इंटरव्यू दिया। मेरा तो खुशी का ठिकाना ना रहा जब गिरीश सर ने फोन पर बताया कि तुम हल्द्वानी में एक माह की ट्रेनिंग के लिए आ जाओ।

मैं घर से हल्द्वानी पहुंची और मन लगाकर अपने सबक सीखती थी क्योंकि मेरे लिए इस प्रशिक्षण के बहुत मायने थे। मैंने अपने जीवन में बहुत उतार चढ़ाव छोटी ही उम्र से देखे हैं इसलिए चाहती थी कि किसी तरह कोई काम हाथ में मिल जाये। सच बताऊं मुझे यह भी पता नहीं था कि हमें क्या

नौकरी मिलने वाली है और वह कैसे होगी ? पर नौकरी मिलेगी यह गारंटी हमको बार बार दी जा रही थी। इसी बात ने हमको प्रशिक्षण में आने के लिए प्रेरित किया। हमने प्रशिक्षण में थोड़ी बहुत अंग्रेजी के शब्द बोलने सीखे, कम्प्यूटर भी हल्का फुल्का चलाना सीखा। घर से बाहर निकलते हुए जो एक अनजाना डर मेरे मन में भर गया था उससे मैं धीरे धीरे मुक्त हो गई। अब अपने सहपाठियों और प्रशिक्षकों से मिले प्रेम भरे व्यवहार ने मुझे मेरी कुंठाओं से मुक्त करने में मेरी बड़ी मदद की। अभी तक मुझे लगता था कि दुनिया में सिर्फ मेरे लिए ही मुसीबतों का पहाड़ रखा हुआ है पर यहां आकर मैंने सबके बारे में जानकर समझा कि हम सब तो एक जैसे ही हैं। हर कोई किसी ना किसी मुसीबत में घिरा है और सबकी बातें जानकर मुझे बड़ा हौसला मिला और मैंने यह तय किया कि मुझे अपनी परेशानियों को अपने पर हावी नहीं होने देना है और इन्हीं हालतों में अपना रास्ता खुद तय करना है। मां ने भी घर से चलते समय यह कहा था कि बेटी तू घर से बाहर जा रही है। ध्यान से जाना और हमेशा खुश रहना।

मेरी मां को मुझ पर भरोसा था कि हमारी बेटी कुछ कर सकती है। मैं पहले बहुत डरती थी पर फूड एंड बीवरेज प्रशिक्षण के बाद मेरा डर खत्म हो गया और अब मैं अकेले सब जगह चले जाती हूं। मैंने गाड़ी पकड़ना सीख लिया है, शाम होते ही अब डर नहीं लगता है कि घर कैसे पहुंचूगी। सड़क पार करना मेरे लिए हिमालय की चढ़ाई से भी कठिन काम था पर अब बड़ा भरोसा है गया है मुझे खुद पर और शहर में रहने का भी अंदाज आ गया है। मैंने अपना बायोडाटा बनाना सीखा, टाइपिंग सीखी और होटल के तौर तरीकों के साथ साथ यह भी सीखा कि समूह में कैसे रहा जाता है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं होटल लाईन में आऊंगी पर प्रशिक्षण के बाद कॉफी कैफे डे में टीम सदस्य के रूप में मेरा चयन हो गया। ILFS को छोड़ते हुए मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि अब तक इस संस्थान व इन लोगों से कुछ लगाव सा हो गया था। इन लोगों ने हमें घर जैसा माहौल दिया, प्यार दिया, अभी भी यह हमारी खोज खबर लेते रहते हैं। यह बात बहुत अच्छी लगती है। जब सब कुछ इन्होंने ही सिखाया तो इनकी ही तो जिम्मेदारी बनती है हमारे पास आने की।

तारा की यह छोटी छोटी बातें प्रशिक्षण के बहुत सारे आयामों को दिखाते हुए यह बताने को काफी है कि यह प्रशिक्षण अपने उद्देश्यों में काफी हद तक सफल हुआ है। तारा के बारे में उसके ट्रेनर विकास बताते हैं कि यह पहले एक छोटी सी कुमांऊनी बालिका लगती थी। शर्मीली, सकुचाई हुई बिलकुल चुप चुप पर अब तो देहरादून के रेसकोर्स के कॉफी कैफे डे में उसे 'पी' कैप लगाये हुए और करीने से ड्रैस अप देखकर तो हम पहचान ही नहीं सके कि यह वही तारा है जिसे शुरू में प्रशिक्षण में रोकना मुश्किल लग रहा था। अब तो यह देखने, पहनावे, बोलचाल और अपने काम करने के अंदाज से महानगर की लड़की लगती है। तारा को बहुत दिन बाद देखकर सच में खुशी हो रही है। अपने इंटरव्यू की याद कर तारा कुछ रूक रूक कर बताती है कि पहले तो रिज्यूम बनाया। फिर खुद राजपुर रोड़ के कैफे डे में अकेले इंटरव्यू देने गई। बहुत डर लग रहा था कि क्या पूछेंगे और हम कैसे बोलेंगे ? पर मेरा चयन हो गया। राजपुर रोड़ के कॉफी डे में हमें इस क्षेत्र की सारी

बारीकियों से अवगत कराया गया। रेस्टोरेंट में ग्राहकों से कैसे पेश आया जाता है उन सभी तौर तरीकों के बारे में बताया गया। यहां आकर मैंने यह भी सीखा कि व्यवहारिक जीवन में कैसे पेश आया जाता है? अब तो कोई कितना भी बड़ा ग्राहक आये मुझे कतई डर नहीं लगता है। मेरी पहली नौकरी दिसम्बर 2014 में मॉल रोड़ कैफे कॉफी डे मसूरी में लगी थी। मैं अकेले गांव से देहरादून और वहां से सिर्फ कैफे डे के पते के सहारे पहली बार मसूरी पहुंची थी। कौन आता हमें गांव से यहां छोड़ने? बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। मसूरी में निशा कठैत मैडम मैनेजर थीं। उन्होंने मेरी बहुत मदद की। पहले तो सब कुछ बहुत कठिन लग रहा था पर अब सब कुछ बहुत आसान सा लगने लगा है। नौकरी पर आकर सबसे बड़ी बात हुई कि मेरा डर बिलकुल खत्म हो गया है। मेरी पहली तनख्वाह रू. 6000 थी। बहुत कुछ सोचा था कि इन पैसों से यह करूंगी और वह करूंगी पर पहले महीने खर्चा ज्यादा हो गया और सब कुछ खत्म हो गया है।

नौकरी के कुछ समय बाद मेरे दादा जी देखने आये कि हमारी बेटी कहां रहती है? कैसे रहती है? दादा जी के साथ हमने कैम्पटी फॉल आदि घूमा। बहुत अच्छा लगा। पहली बार जीवन में मौज मस्ती करने का मौका मिला था। मौज मस्ती वह भी अपनी कमाई से एक गांव की लड़की के लिए इससे अच्छी क्या बात हो सकती है? तीन महीनों की नौकरी के बाद मेरी हिचकिचाहट खत्म हो गई है। हमारे कैफे में बड़ी भीड़ होती है। सुबह की शिफ्ट में उसको अकेले थामना शुरू में एक चुनौती होती थी पर अब तो सब सामान्य सा लगने लगा है। वहां ज्यादातर अंग्रेज ही कॉफी पीने आते हैं। मेरे मैनेजर कहते थे कि किसी भड़कते ग्राहक को कैसे शांत करना है यह तो कोई तारा से सीखे। जब कभी मुझसे गलती हुई तो मैंने बड़ी शांति से क्षमा मांगना सीखा। बाद में यह नम्रता मेरे स्वभाव में आ गई। वह हंसते हुए बोलती है कि अब तो तारा समझदार हो गई है। मुझे हालतों ने समय से पहले ही परिपक्व बना दिया है। तारा को कोई बात कहने में बिलकुल हिचकिचाहट नहीं होती है। वह बड़ी सहजता से अपनी हर बात कह देती है।

तारा से यह पूछने पर कि वह कैसे काम के दबाव को झेल लेती है उसने हंसकर एक दिन की घटना बताई कि उस दिन हमें 10000 रू. की बिक्री का लक्ष्य मिला था। मैंने अपने व्यवहार से वह लक्ष्य भी बिना दबाव में आये पूरा किया। जब मेरा लक्ष्य पूरा हो गया तो मुझे खुद पर बड़ी हंसी आ रही थी कि अरे तारा तू तो बड़ी बहादुर है। तूने तो आज असंभव काम कर दिया कि एक अनजान शहर में अंग्रेजी बोलने वाले लोगों से 10000 रू. निकलवाना कोई आसान बात तो नहीं है और जब तू यह कर सकती है तो अब तू सब कुछ कर सकती है! हां यहां एक अच्छी बात है कि हमें कैफे डे की क्लोजिंग बहुत सावधानी से करनी पड़ती है। कभी कभी रात के 10-11 बज जाते है। एक एक स्टॉक मिलाना पड़ता है, कैश मिलान करना पड़ता है, कौन सामान कहां रखना है, पूरे कैफे की रात को ही सफाई, सामान की पूरी स्थिति दिखानी होती है, क्या टूटा और कितना सब रिकार्ड करना होता है। मार्च फाइनल की तरह हमारी क्लोजिंग होती है। मैं तो एक ही दिन में थक गई थी। मैंने एक दिन की क्लोंजिग से चौकन्ने रहने का जो सबक सीखा वह मेरे लिए जीवन का बहुत बड़ा पाठ था। यहां एक अच्छी बात सीखी कि हमें कैफे डे के अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार आदर्श स्थिति

को बनाये रखने के लिए काम करना है। यह बात आपको जीवन में उन्हीं मानकों के अनुसार चलने की एक प्रेरणा देते हैं। मई 2014 में ही तारा को मसूरी से रेसकोर्स कैफे डे में ट्रांसफर मिल गया। वह देहरादून आकर खुश है कि थोड़ा घर के नजदीक आ गई है। वह अब ब्रू मास्टर बन गई है। वह अपने फौजी मामा को देखकर सोचती थी कि काश वह भी घर से बाहर जा सकती। अभी भी तारा को जब मौका मिलेगा वह पुलिस में जाऐगी ऐसा उसका पक्का इरादा है। बचपन में उसकी ख्वाहिश थी कि वह पुलिस में जाए पर घर के हालत ऐसे नहीं थे कि वह अपने सपने पूरे कर सके। बचपन की बात करते समय तारा थोड़ा भावुक होकर बताती है कि मेरी मां बहुत बीमार रहती है। मुझे ही घर में सब कुछ काम करना पड़ता है। मैं और मेरी बहन दोनों मिलकर किसी तरह अपने घर की गाड़ी खींच रहे हैं। हम दोनों स्कूल बारी बारी से जाते हैं। एक दिन वह पढ़ने जाती है और दूसरे दिन मैं जाती हूं। स्कूल वाले भी हमें सहयोग करते हैं। ऐसा करके मैंने खेती बाड़ी भी की, इंटर तक की पढ़ाई की, बीमार मां की देखभाल और भाई बहनों को भी आगे बढ़ाया। जब से मैं नौकरी के लिए घर से बाहर आई हूं तब से सारा बोझ दादी और बहन पर आ गया है। कक्षा 6 से 12 तक तो मेरी यही दिनचर्या थी और ऐसे करके ही मैंने पूरा घर संभाला।

तारा बताती है कि हमारे घर की स्थिति बहुत कमजोर है। मेरी आधी तनख्वाह घर जाती है और मैं कोशिश करती हूं कि किसी भी तरह रू. 3000 में अपना काम चला लूं और बाकी रू. 3000 घर भेज दूं। इससे मेरे पिता को बहुत सहारा हो गया है। वह गांव में सबसे कहते हैं कि हमारा लड़का कमा रहा है। मेरी बहन सबसे बोलती है कि जब मेरी दीदी जिम्मेदारी निभा रही है तो मुझे भी तो निभानी ही होगी। सारे घर की जिम्मेदारी मेरे ही सिर पर है। मुझे अपने भाईयों को भी पढ़ाना है, बहन को बी.ए. कराकर उसकी शादी भी करनी है, मां की देखभाल सभी कुछ तो करना ही होगा ना। तारा घर के बारे में बोलते बोलते अचानक खुश होकर बोली कि जिम्मेदारियां तो निभानी ही होती हैं। अच्छी बात है कि मैंने छोटी उम्र में ही घर व कैफे डे में धैर्य से जिम्मेदारियां निभाना सीख लिया है। बाद में परेशानियों में परेशान नहीं होना पड़ेगा। मैं तब तक के लिए मजबूत हो जाऊंगी। मेरी इच्छा है कि यहां काम करते हुए पुलिस की सरकारी नौकरी में चले जाऊं। मेरी पक्की नौकरी होगी तो सारा घर संभल जायेगा। मैं इसके लिए कोशिश कर रही हूं। अब यहां काम करते करते मुझे खुद पर बहुत भरोसा हो चुका है कि कुछ भी कठिन नहीं है।

मैंने अपने जीवन में बहुत मुसीबतें उठाई हैं। मेरे पिता जी को बवासीर की बीमारी हो गई थी। तब मैं 10वीं कक्षा में थी। मैं पिताजी को अकेले गांव से रामनगर ले गई। मैंने मामा को फोन किया और वहां से पूछते पुछाते उन्हें दिल्ली ले गई। एक महीना वहां रखा पर पिताजी ठीक नहीं हुए। आखिर में ताऊ जी के पास बम्बई ले गई। वहां तीन महीने रखने के बाद हम घर लौटे। पूरे 6 माह पापा की सेवा की। जिस दिन पिताजी की बीमारी की खबर आई उस दिन मेरा 10 वीं का इम्तहान था। मैं तीन घंटे का पेपर एक घंटे में पूरा करके सीधे रामनगर आ गई थी। मैं द्वितीय श्रेणी में पास हुई पर मेरे उस पेपर में 75 प्रतिशत नम्बर आये। मुझे तो पास होने की उम्मीद ही नहीं थी। उसकी

मासूमियत भरी बातें और घर के तनावों के बीच आये नम्बरों को देख लगता है कि यदि तारा को सही हालत मिले होते तो यह कहां से कहां पहुंच चुकी होती।

ऐसी ही एक और घटना वह बताती है कि 11वीं कक्षा में मेरी मां की तबियत खराब हो गई। उसके पेट में बहुत दर्द हो गया था। उसके बचने की हालत नहीं थी। मैं उसको वैसे ही हालत में दिल्ली ले गई। वह एक साल दिल्ली किसी रिश्तेदार के घर रही। उस समय मैंने और दादी ने घर संभाला। खेती बाड़ी की। मेरी मां अभी भी बीमार है और हरिद्वार में भर्ती है। अगले महीने मैं उसे लेकर घर जाऊंगी। यह पूछने पर कि तारा तुम इतनी छोटी हो और इतनी छोटी उम्र से इतनी बड़ी बड़ी जिम्मेदारियां कैसे निभा रही हो और इतनी परेशानियों के बीच भी इतना खुश कैसे रह लेती हो? वह मायूस होकर बोली कि घर वालों के लिए मुस्कराना पड़ता है। यदि मुस्कराएंगे नहीं तो काम कैसे करेंगे? जीने का हौसला और परिस्थितियों से जूझने का जज्बा खुद से खुद को ही बटोरना पड़ता है। उस समय जब कुछ भी सामने नहीं था और हमने हिम्मत से काम लिया पर अब तो मेरे हाथ में नौकरी है। अपने पर भरोसा हो गया है। मैं दुनिया को देख चुकी हूं। दस लोगों को जान चुकी हूं ऐसे में तो मैं मजबूत हो गई हूं कुछ भी झेलने के लिए। यह नौकरी पाने के लिए मैंने क्या क्या नहीं झेला है? पर मैं यह पाकर खुश हूं । यह मेरी और मेरे परिवार की समाज में साख है। अब लोग हमें इज्जत की नजर से देखते हैं। क्या यह बड़ी बात नहीं है? एक बेचारगी का भाव झेलने वाली लड़की तारा और उसके परिवार के लिए।

थोड़ी देर चुप रहकर वह बोली कि मैंने अपनी कई सहेलियों को इस बारे में बताया पर वह काम नहीं करना चाहती क्योंकि वह घर से खुश हैं पर मेरी तो मजबूरी है काम करना.... । हां एक बात है कि मजबूरी में उठाया पहला कदम आज मेरी खुशी का कारण बन चुका है। मेरी पहले और आज की जिंदगी में बहुत अंतर आ चुका है। अब मैं बहुत कुछ सीख गई हूं। मुझे यहीं पर इतना भरोसा अपने पर हो गया है कि मैं डेढ़ साल में ही कैफे मैनेजर बन जाऊंगी। मैं मैनेजर बनकर कहीं भी जाने को तैयार हूं और किसी भी शहर में काम की जिम्मेदारियां निभा सकती हूं। इतना तो मैंने सीख ही लिया है।

तारा के उगने से टिमटिमाने के रहस्य के बारे में उसके प्रशिक्षकों का कहना है कि यह शुरू में बहुत हिचकती थी पर अब यह हमारे लिए सुखद अनुभव है कि कैसे तारा ने अपने जीवन की मुसीबतों को जीवन में हावी नहीं होने दिया और मुस्कराते हुए ही आगे बढ़ती रही। हमें भी तारा के बारे में जानकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि इसका संघर्ष इतना ज्यादा, लम्बा और कठिन है। इसकी जगह कोई और होता तो टूट ही जाता। तारा को देखकर हमें बहुत खुशी होती है। हलद्वानी प्रशिक्षण के दौरान तारा की आवाज भी नहीं निकलती थी आज इसको बिना रूके रेलगाड़ी की तरह बोलते देखना और वह भी सारगर्भित और यथार्थ! बड़ी खुशी हो रही है। अपनी परेशानियों को पीछे धकेलकर तारा को मुस्कराते देखना और इतनी छोटी उम्र में इतनी जिम्मेदारियों को शान से निभाते देखकर लगता है इस प्रशिक्षण का उद्देश्य सफल हो गया है।

मुझे बहुत दूर जाना है

प्रदीप कुमार 09917041820
(आतिथ्य सत्कार कौशल में प्रशिक्षित)

हां मुझे बहुत दूर जाना है! यह मेरा पहला कदम है पर मेरे पांव जमीन पर हैं। मैंने मजबूती से अपने पांव जमीन पर टिकाना सीख लिया है। मेरी मंजिल बहुत कठिन है लेकिन मैं वहां तक जरूर पहुंचूंगा। मैंने नहीं सोचा था कि मैं यहां तक भी पहुंच सकता हूं। मैं आज एक विश्वस्तरीय खाद्य श्रृंखला 'बरिस्ता' के कॉफी कैफे डे का सदस्य हूं। मेरी अपनी एक पहचान है। मुझे यहां तक पहुंचने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। जिन हाथों ने मुझे यहां तक पहुंचने में सहारा दिया मैं उन सभी का दिल से आभारी हूं। मैं सोचता हूं कि क्या मेरी ही तरह मेरे गांवों के और बच्चों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा? क्या उनको भी कोई इसी तरह रास्ता दिखाकर मदद के लिए सामने आएगा? मेरी गुजारिश है उन लोगों से कि ऐसे लोगों को उत्तराखंड के दूर दराज गांवों के बच्चों को भविष्य की राह दिखाने के अपने मिशन में उन दुर्गम व बीहड़ इलाकों तक पहुंचना होगा जहां आज विकास की रोशनी नहीं पहुंची है। मुझे यहां तक पहुंचाने हेतु आई. एल. एफ.एस. और यू.जी.वी.एस. का शुक्रिया!

यह शब्द अल्मोड़ा जिले के तेरागांव गांव, पोस्ट आफिस गोडी गनाई, ब्लॉक चौखुटिया के 24 साल के नवयुवक प्रदीप कुमार के हैं। प्रदीप के पिता रमेश चंद्र एक साधारण किसान हैं। प्रदीप तीन बहनों का अकेला भाई है। सब बहनें उससे छोटी हैं और पढ़ रही हैं। गांव में थोड़ी बहुत खेती बाड़ी है जिससे साल के कुछ महीनों का राशन निकल जाता है। बाकी के दिनों के राशन हेतु कंट्रोल की दुकान पर ही निर्भरता है। परिवार की आजीविका की तलाश में प्रदीप के पिता को पूना जाना पड़ा। वहां पर वह किसी प्राईवेट फर्म में काम करके वह अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं। प्रदीप के परिवार के लिए जीवन बहुत सरल नहीं था। परिवार को कदम कदम पर आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता। प्रदीप ने सन् 2010 में अपनी 12वीं कक्षा का इम्तहान राजकीय इंटर

कालेज अल्मोड़ा से उत्तीर्ण किया। उसे पढ़ने के लिए अपने गांव से 10 किमी. दूर पैदल चलना पड़ता था। उसके गांव में एक प्राइमरी स्कूल है। गांव से अस्पताल भी 4 किमी. दूर है। इंटर के बाद उसने बी.ए. की पढ़ाई शुरू की पर कुछ आर्थिक दिक्कतों के चलते वह अपने अंतिम वर्ष के पेपर नहीं दे सका।

प्रदीप फौज में भर्ती होकर परिवार की दिक्कतों को कम करना चाहता था पर वह सफल नहीं हुआ। भर्ती होने के लिए वह बाहर की दुनिया देख चुका था। प्रदीप एक मेहनती लड़का था। वह अपने जीवन में कुछ करना चाहता था पर उसे बिलकुल भी अंदाजा नहीं था कि वह क्या करे? वह अपने पांवों पर खड़े होना चाहता था। प्रदीप को नौकरी की तलाश सिर्फ अपना कैरियर बनाने के लिए नहीं थी बल्कि वह अपने पांवों पर खड़े होकर अपने परिवार की मदद भी करना चाहता था। अपनी इन्हीं शंकाओं और आशंकाओं के बीच प्रदीप भविष्य का रास्ता खोजने हेतु प्रयत्न करता रहा। साल 2014 में अचानक प्रदीप को यू.जी.वी.एस. और आई.एल.एफ.एस. द्वारा आतिथ्य सत्कार ट्रेड हेतु ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करने के बारे में पता चला। उसने अपने ब्लॉक में आये कुछ पम्पलेट पढ़े। उनके क्षेत्र में इन संस्थानों द्वारा इस व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु एक जन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा था। प्रदीप को कोर्स के बारे में ज्यादा कुछ तो समझ में नहीं आया पर एक बात उसे अच्छी लगी कि कोर्स के बाद उसे नौकरी मिलेगी और कोर्स फ्री में है। उसने इस कोर्स हेतु साक्षात्कार दिया और प्रशिक्षण हेतु उसका चयन हो गया।

अगस्त 2014 में प्रदीप देहरादून पहुंचा। आतिथ्य सत्कार का यह आवासीय प्रशिक्षण एक माह का था। गांव से निकलते हुए प्रदीप के मन में एक ही बात थी कि अब चाहे कुछ भी हो मुझे एक मौका मिला है और इसी ट्रैनिंग से मुझे अपना कैरियर बनाना है। यह प्रशिक्षण एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के सौजन्य से आई.एल.एफ.एस. नामक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दिया जा रहा था। प्रदीप को उस समय आतिथ्य सत्कार ट्रेड व इस प्रशिक्षण के बाद मिलने वाले नौकरी के मौकों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। प्रदीप बहुत ही समझदार लड़का है। प्रशिक्षण में कुछ दिनों बाद ही प्रदीप ने अपनी प्रतिभा दिखानी शुरू कर दी और वह नेतृत्व की भूमिका में उभरने लगा। प्रशिक्षण के दौरान समय समय पर वह प्रत्येक विषय पर अपनी परिपक्वता दिखाकर कठिन से कठिन परिस्थिति को संभाल लेता था। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षकों की बात और उनके सिखाये पाठों और कौशल को बहुत जल्दी समझ लेता था। वह बहुत उत्साह से प्रशिक्षण के सभी सत्रों और गतिविधियों में भागेदारी निभाता था। उसके सभी प्रशिक्षक उसकी प्रतिभा और क्षमताओं की बहुत तारीफ करते थे। उसका व्यवहार बहुत ही शांत एंव संयत होता था और वह बड़ी से बड़ी बातों को भुला देने में विश्वास रखता था। प्रशिक्षण के दौरान प्रदीप ने आतिथ्य सत्कार इंडस्ट्री की बारीकियों के साथ कम्प्यूटर चलाना व अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी सीखा। वह संस्थान द्वारा आयोजित खेल कूद प्रतियोगिताओं में भी उत्साह से भाग लेता था और अपने साथियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित

करता था। प्रदीप बताता है कि प्रशिक्षण में उसे बहुत आनन्द आया। उसने लोगों से मिलना जुलना सीखा। बातचीत के तौर तरीके सीखे। इससे मेरे अंदर आत्मविश्वास आया। मैं पहले बहुत ही झिझकता था पर अब खुल कर बात करने लगा हूं। लोगों को देखकर मेरे अंदर दुनियादारी की समझ आने लगी थी। मुझे नए नए दोस्त मिले। मैं लड़कों और साथ काम करने वाली लड़कियों से बातचीत करने में पहले शर्माता था पर धीरे धीरे मेरी झिझक खत्म हो गई। उनसे बातचीत करके मैंने उनके गांवों के बारे में, खान पान, रहन सहन और इलाके की दिक्कतों के बारे में बहुत कुछ समझा। मैंने यह भी समझा कि लोग अपने जीवन में जीने के लिए कैसे कैसे संघर्ष करते हैं? उन लोगों के बारे में जानकर मुझे बड़ी दिलासा मिली कि मैं तो सोचता था कि एक मैं ही परेशान घूम रहा हूं पर यहां तो लोग मेरे से भी कठिन हालतों का सामना कर रहे हैं इसलिए मुझे संघर्ष करके अपना रास्ता बनाना चाहिए ना कि अपने अंदर हीन भावना पनपने देनी चाहिए।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद प्रदीप ने कॉफी कैफे डे में काम हेतु साक्षात्कार दिया। सितम्बर 2014 में वह नौकरी हेतु चुना गया। उसकी पहली तनख्वाह रू. 6000 थी। प्रदीप ने काम के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखने का फैसला लिया। कॉफी कैफे डे में प्रदीप के काम को बहुत पंसद किया गया। कॉफी कैफे डे एक राष्ट्र स्तरीय फूड चेन है। अपनी मेहनत, लगन और जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने की वजह से उसे कॉफी डे का स्टाफ बहुत पसंद करता है। शालीनता से नौकरी करने के अपने इन्हीं गुणों के कारण प्रदीप की आज अपने गांव के युवाओं के बीच एक आदर्श युवा के तौर पर पहचान बनी है। उसने यहां चार महीने काम किया पर परिवार की कुछ दिक्कतों के कारण उसे काम छोड़ना पड़ा। जनवरी में उसके प्रशिक्षण संस्थान ने उसे फिर से बरिस्ता कॉफी डे में साक्षात्कार हेतु बुलाया और वह साक्षात्कार में सफल हुआ।

जनवरी 2015 से प्रदीप राजपुर रोड़ स्थित पैसिफिक मॉल बरिस्ता कॉफी कम्पनी लिमिटेड में टीम मेम्बर की हैसियत से काम कर रहा है। अब प्रदीप की ब्रू मास्टर के तौर पर प्रमोशन हो गई है। उसको पी.एफ. और इंश्योरेंस धनराशि की कटौती के बाद 6600 रू. मिल रहे हैं। बरिस्ता एक विश्वस्तरीय फूड चेन है। प्रदीप यहां पर टीम का नियमित सदस्य बन चुका है। यहां पर हर छः महीने में नियमित तौर पर प्रमोशन हेतु स्टाफ की परीक्षाएं होती हैं। प्रदीप के मैनेजर प्रदीप के काम से संतुष्ट हैं। उनका कहना है कि यदि प्रदीप ने अपने सभी टेस्ट पास किये और इसी तरह मेहनत करता रहा तो आने वाले तीन सालों में वह एक स्वतंत्र यूनिट का मैनेजर बन जाएगा। प्रदीप के व्यक्तित्व में आये बदलावों के बारे में मैनेजर ने बताया कि जब वह पहली बार यहां आया था तो काम नहीं जानता था। यह बहुत शर्माता था और डरता भी था। इसके अंदर बहुत हिचक थी कि कहीं वह कुछ गलत ना बोल दे पर अब ऐसा नहीं है। इसके काम एवं व्यवहार में बहुत अंतर आया है। प्रदीप सुबह से रात तक अपने काम में लगा रहता है। वह कभी काम के लिए ना नहीं बोलता है। उसे काम सीखने में थोड़ा समय लगता है पर जब वह एक बार काम सीख लेता है तो फिर वह

खूबसूरती से काम करना पसंद करता है। यह बहुत बढ़िया लड़का है तथा बरिस्ता काफी कैफे डे में मैनेजर बनने लायक है। मैं इसके काम से खुश हूं। प्रदीप को सब लोग पंसद करते हैं। स्टॉफ और ग्राहकों के बीच वह लोकप्रिय है। ग्राहक अक्सर उसे यह कहकर बुलाते हैं कि 'तुम बहुत क्यूट हो प्रदीप! और जितने क्यूट हो उतने ही सौम्य और व्यवहार कुशल हो और जितने खुशमिजाज हो उतनी ही अच्छी कॉफी बनाते हो और उससे भी बढ़कर तुम प्रेम से कॉफी सर्व कर सबको खुश कर देते हो। तुम्हारे हाथ की कॉफी पीकर मन खुश हो जाता है।'

प्रदीप अपनी इस नौकरी से बहुत खुश है। वह नियमित रूप से घर पैसा भेजता है। बहनों की फीस आदि भी वह स्वयं जमा करता है। वह चाहता है कि उसकी बहनें कुछ लायक बन जाएं। वह बहनों की शादी करके ही खुद की शादी के बारे में सोचेगा। प्रदीप के दोस्त भी उसकी सफलता से खुश हैं। वह कहते हैं कि प्रदीप बहुत बदल गया है। प्रदीप अब बहुत बोलने भी लगा है। वह प्रदीप को कहते हैं कि तुम नौकरी करने से बहुत सुंदर भी हो गये हो। तुमने बहुत अच्छे से कपड़े पहनना भी सीख लिया है। अंग्रेजी बोलना भी सीख लिया है। तुम बहुत जिम्मेदार भी हो गये हो। ऐसी ही कुछ राय उसकी मां और बहनों की भी है। यह बताते बताते प्रदीप शर्माने लगा।

प्रदीप के प्रशिक्षक विकास की उसके बारे में राय है कि जब यह प्रशिक्षण के लिए आया था तब से आज तक में यह बहुत आगे बढ़ा है। प्रदीप की इस यात्रा में इस बात को देखना बहुत जरूरी है कि वह किस पृष्ठभूमि से यहां आया है। यदि गांव का एक सीधा साधा लड़का जो कभी अपने जिले से बाहर ना आया हो और आज वह एक विश्वस्तरीय खाद्य श्रृंखला की टीम का भरोसेमंद सदस्य बन चुका है और उसकी कम्पनी के लोग उसमें आगे बढ़ने की क्षमताएं देखने लगे हों तो यही अपने आप में उसकी और हमारे प्रशिक्षण की सफलता का महत्वपूर्ण मानक है। प्रदीप यहीं रहकर मैनेजर बनना चाहता है। वह बताता है कि उसके बाद ही वह किसी दूसरी नौकरी के बारे में सोचेगा। मैं अब अपने पांवों पर खड़ा हो चुका हूं। मैं सरकारी नौकरी में जाना चाहता हूं। मैंने अपनी पढ़ाई भी शुरू कर दी है। इस साल मैंने पुलिस कांस्टेबिल के लिए होने वाली शारीरिक परीक्षा पास कर ली है और अब लिखित परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं। इसके साथ ही स्टॉफ सलैक्शन बोर्ड में भी लोवर डिवीजनल क्लर्क का फार्म भरा है। मैं पूरी मेहनत करूंगा तो एक ना एक दिन सफल हो जाऊंगा। अब अपने पांव पर खड़े होकर इतना भरोसा तो मुझे खुद पर हो ही गया है।

भरोसेमंद कम्प्यूटर लीडर !

अरविंद कुमार 07895721438
(डिप्लोमा इन इनफौरमेशन टैक्नोलॉजी)

उत्तरकाशी जिले का एक दूरस्थ क्षेत्र है पुरोला। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून से पुरोला तक जाना अपने आप में एक सुंदर और रोमांच भरी यात्रा है। देहरादून से पुरोला तक पंहुचने के लिए 4 से 5 घंटे की यात्रा करनी पड़ती है। पुरोला एक छोटा सा पहाड़ी कस्बा है। जहां मन को लुभाने वाले खेत खलिहान, पहाड़ी स्लेट के सुंदर छोटे छोटे घर और चारों ओर प्रकृति द्वारा उदारता से दी गई सुंदरता किसी को भी मदमस्त करने को काफी है पर इसका दूसरा पहलू भी है कि यहां के निवासियों की जिंदगी बहुत कठिन है। यहां जीवन की बुनियादी सुविधाओं और आजीविका के अवसरों की कमी यहां के लोगों की जिंदगी को कठिन बना देती है। आज भी पर्यटन और ट्रैकिंग के लिहाज से यह इलाका बहुत समृद्ध है। दुनिया भर के सैलानी यहां सैर सपाटे के लिए आते हैं पर यहां का नवयुवक रोजगार की तलाश में शहरों की ओर दौड़ रहा है। इस दौड़ को रोकने के लिए यहां युवाओं को आज की जरूरत के अनुसार तकनीकी शिक्षा के मौके देने होंगे और आज की अर्थव्यस्था की मांग के अनुसार उनके लिए कौशल वृद्धि के मौके तलाशने होंगे। स्थानीय युवाओं की यह परेशानी समझते हुए एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना ने वर्ष 2014-15 में अपने व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की दिशा में की गई पायलट स्टडी के अर्न्तगत उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के माध्यम से यहां के युवाओं हेतु आज की मांग के अनुसार डिप्लोमा इन इनफौरमेशन टैक्नोलॉजी में कम्प्यूटर कोर्स करवाने का फैसला लिया।

आजीविका परियोजना हेतु यह एक शुरूआती कदम था और इस काम हेतु आजीविका ने देहरादून की एक स्थानीय संस्था एसेट्स इन्फोटेक लिमिटेड का चयन प्रशिक्षण संस्थान के रूप में किया। उत्तरकाशी क्षेत्र में इस सम्बध में युवाओं से सम्पर्क किया गया। योग्य एवं जरूरतमंद अभ्यिर्थियों की तलाशा गया। इनमें एक युवा पुरोला का ही 25 साल का अरविंद कुमार भी था। अरविंद पुरोला के एक गांव मठ का रहने वाला है। उसका गांव पुरोला बाजार से लगभग 3-4 किमी. की दूरी पर है। वह साधारण परिवार का लड़का है। घर में दो भाई हैं। अरविंद के पिता ठेकेदारी के सिलसिले में अक्सर गांव से बाहर रहते हैं। अरविंद के घर में ठीक ठाक खेती बाड़ी है पर मां गांव में अकेली

रहती हैं। गांव में सेब के बगीचे भी हैं पर उनकी देखरेख के लिए कोई खास प्रबन्ध परिवार नहीं कर सका जिस वजह से अब वह बहुत उत्पादक नहीं हैं। अरविंद स्थानीय सन राइज पब्लिक स्कूल पुरोला में टीचर है। वह वहां पर सांइस पढ़ाता है। अरविंद ने गढ़वाल यूनिवर्सिटी से बी.ए. की परीक्षा पास की है। अरविंद बच्चों को पढ़ाता तो था पर उसे कम्प्यूटर का ज्ञान नहीं था। अरविंद को यह कहने में बहुत झिझक नहीं होती कि पहले उसे सिर्फ कम्प्यूटर बंद करना और खोलना ही आता है। अरविंद बताता है कि मुझे कम्प्यूटर सीखने का बहुत मन था पर ऐसा कोई मौका मेरे सामने नहीं आया। अचानक एक दिन मुझे अपने किसी दोस्त सुमित से पता चला कि आजीविका कार्यक्रम स्थानीय युवकों हेतु एक कम्प्यूटर कोर्स करवाना चाहता है। यह कोर्स बिना किसी फीस के होगा। यह एक साल का कोर्स उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के द्वारा संचालित होगा। अरविंद का यह पुराना दबा हुआ सपना था कि वह भी कम्प्यूटर चलाना सीखे और कम्प्यूटर की उन सब तकनीकी बारीकियों को सीखे जो आज की अर्थव्यस्था में रोजगार पाने के लिए जरूरी हैं पर दिक्कत यह थी कि वह सीखेगा कहां से?

अपने दोस्त से इस बात का पता चलते ही अरविंद की मानो लाटरी लग गई और उसने इस कोर्स हेतु दिसम्बर 2013 में आवेदन किया। अरविंद का चयन हुआ और एसेट्स इंस्टीटयूट में उसका प्रशिक्षण शुरू हुआ। इस बीच में अरविंद की नौकरी भी जारी रही क्योंकि यह प्रशिक्षण पुरोला में ही हुआ था। सही समय पर अरविंद का प्रशिक्षण पूरा हुआ। अरविंद ने बड़ी शालीनता से अपने प्रशिक्षण के बारे में बताया कि इस प्रशिक्षण को पूरा करने के बाद मेरे अंदर एक अजीब सा आत्मविश्वास आया। मैंने ना सिर्फ कम्प्यूटर की बारीकियां सीखीं बल्कि इससे मेरे व्यक्तित्व में भी बहुत निखार आया। मुझे खुद पर भरोसा हो गया कि मैं अब आज की दुनिया के हिसाब से चलने लायक काम सीख चुका हूं। मेरे अंदर का डर, झिझक और संकोच गायब होता गया।

अरविंद ने बड़े आत्मविश्वास से बताया कि मैं अब कम्प्यूटर नेटवर्किंग और कम्पयूटर के सभी बेसिक कोर्स सीख चुका हूं। मैं हिंदी और अंग्रेजी दोनों में टाइपिंग कर लेता हूं। मुझे सभी साफ्टवेयर के बारे में गहरी जानकारी हो गई है। मुझे जो कुछ समझ में नहीं आता है वह मैं आज भी अपने प्रशिक्षक रमन वालिया सर से पूछता रहता हूं। मेरे को इस प्रशिक्षण करने का यह फायदा हुआ कि पहले मैं अपने स्कूल में सिर्फ सांइस पढ़ाता था पर अब मैं बच्चों को कम्प्यूटर भी सिखाता हूं। पहले मैंने कभी प्रोजेक्टर देखा भी नहीं था और अब मैं प्रोजेक्टर से पढ़ाता हूं। बच्चों को पढ़ाने से मेरे अंदर का आत्मविश्वास बढ़ता गया। हमारे दो प्रैक्टिकल देहरादून में हुए। मैंने पहला सैमिस्टर पास कर लिया है और दूसरा सैमिस्टर छूटने के कारण मैं उसका इम्तहान जुलाई में दूंगा। मुझे इस कोर्स को करने का यह फायदा मिला कि इस डिप्लोमा की बहुत मान्यता है। अब मेरे हाथ में डिप्लोमा होने से मैं कहीं भी आवेदन कर सकता हूं क्योंकि मैं काम भी सीख गया हूं और मेरे हाथ में उचित सार्टिफिकेट भी है। अरविंद बड़ी संजीदगी से बताता है कि पहले मुझे 8000 रू. तनख्वाह

मिलती थी पर अब मुझे 10500 रू. तनख्वाह मिलती है। मैं अपनी इस छोटी सी प्रगति से बहुत खुश हूं। मेरे लिए पैसे से ज्यादा मेरे अंदर तकनीकी सीखने के बाद जो खुद पर भरोसा बढ़ा है उसकी कोई कीमत नहीं है। मैं एक अच्छी नौकरी की तलाश में हूं। जब तक नहीं मिलेगी मुझे बच्चों को पढ़ाने में आनंद आ रहा है। मेरे खुद के सीखने के बाद मैं उन्हें भी कम्प्यूटर सिखा रहा हूं। मैं उन्हें नई तकनीकी से पढ़ा रहा हूं। तकनीकी रोज बदल रही है और अब कम्प्यूटर के मूलभूत बातें सीखने के बाद मैं बच्चों व तकनीकी दोनों से दोस्ती के मूड में रहता हूं। तकनीकी के प्रति जो अनजाना भय दिल दिमाग में रहता था वह बिलकुल खत्म हो गया है।

अरविंद अपने जीवन में आये इस बदलाव हेतु आजीविका सहित उन सभी जाने अनजाने लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता है जिन्होंने उसे कम्प्यूटर से दोस्ती करना सिखाया। वह अपने मां पिता और भाई को याद करते हुए कहता है कि उन्होंने मुझ पर भरोसा करके मुझे मेरे मन का काम करने दिया यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। वह बड़े विनम्र भाव से कहता है कि मेरे हिसाब से इनफौरमेशन टैक्नोलॉजी की कीमत बिजनेस प्रक्रियाओं को और गतिमान करने के लिए है, अपने निर्णयों का त्वरित गति से क्रियान्वयन करने में है, अपने ग्राहकों तक पहुंच बनाने में है और साथ ही अपने काम में उत्पादकता बढ़ाने के लिए है। मेरे लिए मेरा बिजनेस मेरा स्कूल और मेरे ग्राहक मेरे बच्चे हैं और मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि मैंने अपने स्कूल, अपने बच्चों और साथी अध्यापकों के साथ इस तकनीक का बहुत अच्छा उपयोग स्कूल के हित में किया है। मैं अब अपने आफिस के कामों को बहुत व्यवस्थित तरीके से कर पाता हूं। मैं अब जीवन में एक खूबसूरत मुकाम की ओर बढ़ रहा हूं। मैं सबको यही सुझाव दूंगा कि वह भी तकनीकी हवा के नए झोंकों को अपने जीवन में आने दें। अपनी सफलता का वह प्रशिक्षक रमन वालिया को पूरा श्रेय देता है।

अरविंद के बारे में उसके प्रशिक्षक रमन वालिया जो स्वयं एक संजीदा युवक और बहुत ही योग्य प्रशिक्षक हैं, का कहना है कि वह आज भी फोन पर अरविंद सरीखे कई युवाओं को कम्प्यूटर की बारीकियां सिखाते रहते हैं। रमन का कहना है कि अरविंद पहले सांइस का अध्यापक था पर अब वह कम्प्यूटर भी पढ़ाता है। इससे उसकी तनख्वाह के साथ साथ उसकी कीमत स्कूल में बढ़ गई है। पहले वह उपकरणों को प्रयोग करने में डरता था पर अब वह प्रोजेक्टर की मदद से कुशलता से पढ़ाता है। इससे बच्चों की रूचि भी पढ़ाई में बढ़ी है। अब अरविंद को कम्प्यूटर में गहरी जानकारी है। उसके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ा है और बातचीत करने में तो उसमें बहुत बदलाव मैंने देखा है। इसकी हिचक ना जाने कहां गायब हो गई और वह बहुत निडर हो गया है। वह अब खुद भी उत्साही हो गया है और सबमें उत्साह भरने के लिए प्रयत्नशील रहता है। बच्चे अरविंद के बदले रूप के कारण इसके साथ बहुत खुश रहते हैं। यह अब कहीं भी नौकरी के लिए आवेदन कर सकता है क्योंकि इसके हाथ में अब डिप्लोमा आ चुका है। यह पहले बहुत शरमाता था अब तो बोलने से चूकता नहीं है। अचानक कम्प्यूटर सीखने के बाद यह बहुत महत्वाकांक्षी हो गया है। इसमें बहुत

ज्यादा आगे बढ़ने की ललक आ गई है।

रमन बताते हैं कि एक बड़ी बात जो मैंने इसके स्कूल में जाकर महसूस की कि अरविंद अब स्कूल को लीड करता है। इसमें लीडरशिप के गुण आ गये हैं। यह कम्पयूटर सीखने के बाद नेतृत्व की भूमिका में आ चुका है क्योंकि इसे कम्प्यूटर में पूरी जानकारी हो चुकी है। इसी कारण स्कूल में और स्कूल से बाहर भी लोग इसके पीछे अपने कामों को कराने के लिए दौड़ते रहते हैं। अब हमारा अरविंद नेतृत्व की भूमिका में है। यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। किसी भी संस्थान के लिए इससे ज्यादा खुशी की क्या बात हो सकती है कि उसके पढ़ाए बच्चे समाज में अपनी दक्षता के कारण सम्मान पायें। बहुत भावुक होकर रमन वालिया ने अरविंद के बारे में यह सब बताया। रमन के ये शब्द अरविंद को प्रशिक्षण से मिले फायदे को जानने हेतु काफी हैं क्योंकि इस प्रशिक्षण से सिर्फ रमन को ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल के बच्चों, अध्यापकों और पुरोला बाजार के लोगों को हुआ है।

मैं और अच्छा करूंगा!

मनोज कुमार 09557865029
(डिप्लोमा इन इनफौरमेशन टैक्नोलॉजी)

मेरा नाम मनोज कुमार है। मैं नन्दप्रयाग, जिला चमोली गढ़वाल का रहने वाला है। मेरी उम्र 26 साल है। हम मूलतः नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। कई पीढ़ी पहले मेरे पूर्वज रोजगार की तलाश में नन्दप्रयाग आ गये थे। तब से हम लोग यहीं पर रह रहे हैं। हमारे पास खेती बाड़ी नहीं है। मेरे माता पिता राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में काम करते हैं। हम लोग तीन भाई हैं। मेरा सबसे बड़ा भाई सन् 2007 से लापता है। एक भाई मुझसे छोटा है। हमारा संयुक्त परिवार है। मेरी सारी पढ़ाई लिखाई नन्दप्रयाग में हुई है। मैंने हाईस्कूल, इंटरमीडिएट और बी.ए. द्वितीय श्रेणी में पास किया। मैंने बी.एड. प्रथम श्रेणी में पास किया। मैंने बहुत कोशिश की पर मुझे कहीं नौकरी नहीं मिली। इस बीच में मेरी शादी मां बाप ने कर दी। संयुक्त परिवार में होने से मेरी जिंदगी की गाड़ी तो चल रही थी पर यह मेरे लिए बहुत कठिन समय था। मेरे अंदर काम करने की बिलकुल भी शर्म नहीं है। मैंने कभी यह नहीं सोचा कि कौन सा काम छोटा है और कौन काम बड़ा? सबसे बड़ी बात है कि काम करने में यदि पूरी ईमानदारी और सच्चाई हो तो काम करने में कैसी शर्म और क्यों? यह विनम्र, निर्भीक और लाख टके के शब्द हैं एक उच्च शिक्षित नवयुवक के जो अपने आप में अपनी मेहनत, काम और व्यवहार के कारण अपने इलाके में एक मिसाल है।

आज के दिखावे के जमाने में जब युवा हाथ का काम करने में शर्म महसूस करते हैं ऐसे में इस मेहनती और आत्मसम्मान से कूट कूट कर भरे नौजवान मनोज कुमार की कहानी और उसके ये शब्द नई पीढ़ी को दिशा देने हेतु एक रडार की तरह काम कर सकते हैं। आवश्यकता है उसके शब्दों एवं व्यक्तित्व में छिपी गहराई को महसूस करने की। मनोज सहज भाव से बताता है कि जब मुझे मेरी शैक्षिक योग्यता के अनुसार कहीं नौकरी नहीं मिली तो मैंने बद्रीनाथ टैम्पिल कमेटी में सफाईकर्मी की नौकरी करनी शुरू कर ली। इस बीच मैंने जहां भी नौकरी के लिए परीक्षाएं दीं कहीं पर भी मैं पास नहीं हो पाया। सब लोग कहते मनोज तुम तो बहुत पढ़े लिखे हो यह सफाईकर्मी

की नौकरी क्यों करते हो? मैं एक ही जवाब देता कि जब घर में पैसा नहीं होगा और बच्चे रोटी मांगेगे तो मैं क्या करूंगा? ऐसे में काम करने में क्या शर्म? मैं चोरी तो नहीं कर रहा हूं। मैं मेहनत से अपने बच्चों को रोटी खिलाना चाहता हूं। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। लापता बड़े भाई के बच्चे को पालना भी परिवार की जिम्मेदारी थी इसलिए मैंने बिना किसी संकोच के छोटा काम करने का निर्णय लिया। इस बीच एक छोटी सी बच्ची भी मनोज के परिवार का हिस्सा बन चुकी थी। मनोज इस बीच में प्रथम श्रेणी में टूरिज्म में डिप्लोमा भी कर चुका था पर मनोज की परिपक्व सोच पर उसकी कोई डिग्री हावी नहीं हो सकी और वह पूर्ण तल्लीनता के साथ अपने काम में व्यस्त रहा।

यह एक सुखद संयोग था कि बद्रीनाथ टैम्पिल कमेटी के जिस गेस्ट हॉउस में वह सफाई का काम कर रहा था वहां पर सन् 2012 में देहरादून की एसेट्स इन्फोटेक लिमिटेड का एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण हुआ। प्रशिक्षण के दौरान सफाई करते वक्त मनोज का प्रशिक्षकों के साथ सम्पर्क हुआ। प्रशिक्षकों में एक नौजवान प्रशिक्षक रमन वालिया भी थे। मनोज अपना काम निपटाने के बाद पीछे की सीट पर बैठकर कम्प्यूटर की बारीकियां समझने की कोशिश करता। रमन वालिया और मनोज के बीच धीरे धीरे बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। मनोज बहुत समझदार, सुलझा हुआ और महत्वाकांक्षी युवक था। कुछ ही मुलाकातों में दोनों अच्छे मित्र बन गये। दोनों के बीच मुलाकात का यह सिलसिला कम्प्यूटर ज्ञान के आदान प्रदान के साथ गहराता गया। मनोज अपनी जिज्ञासा रखता और रमन उसकी शंकाओं को खत्म करने की कोशिश करते। प्रशिक्षण समाप्त हुआ पर मनोज फोन पर रमन के सम्पर्क में रहा। उसने फोन पर ही रमन से अपनी कम्प्यूटर की पढ़ाई जारी रखी।

जून 2013 में केदारनाथ आपदा के समय मनोज का घर बह गया। उस समय मनोज की ड्यूटी बद्रीनाथ में थी। वह बहुत मुश्किल से 3-4 दिन में पदैल घर पहुंचा। घर में किसी ने कोई मुआवजे की कार्यवाही नहीं की थी। वापस आकर उसने कुछ कागजी कार्यवाही शुरू की तो कुछ मुआवजा मिला। हम उस वक्त से डर के साये में रहते हैं और अब यहां नहीं रहना चाहते हैं। हमने अपनी सारी जमा पूंजी जमाकर हरिद्वार में मकान बनाना शुरू किया। जब मकान पूरा हो जाऐगा तो हम यहां से चले जायेंगे। यद्यपि यहां से जाना हमें अच्छा नहीं लग रहा है पर आपदा के बाद रोजगार की संभावनाएं बहुत कम दिख रही हैं। पहाड़ों का सारा रोजगार टूरिज्म पर ही निर्भर है और पूरी यात्रा आपदा के बाद लड़खड़ा सी गई है। मनोज बताता है कि मेरा जीवन वैसे ही मुश्किल हालतों में चल रहा था पर केदारनाथ आपदा ने मुझे और मेरे परिवार की मुश्किलों को और बढ़ा दिया था।

अचानक जून 2014 की दोपहरी में एक फोन कॉल ने मनोज को नई रोशनी दिखाई। यह फोन कॉल मनोज के प्रशिक्षक रमन वालिया की थी। रमन ने मनोज को बताया कि एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के द्वारा क्षेत्रीय युवाओं को कम्प्यूटर में उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी से

प्रशिक्षण दिलाने हेतु स्थानीय स्तर पर एक प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। चमोली में यह जिम्मेदारी रमन के इंस्टीट्यूट एसेट्स इन्फोटेक को दी गई है। मनोज ने इस डिप्लोमा कोर्स हेतु आवेदन किया और उसका चयन हो गया। मनोज ने पूरी मेहनत और समर्पण से डी.आई.टी कोर्स किया और वह पास भी हो गया है। मनोज बताता है कि यह कोर्स करने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया है। मेरी जानकारी का स्तर भी काफी बढ़ गया है। कोर्स करने के दौरान मुझे बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। मेरा घर प्रशिक्षण स्थल से बहुत दूर था और सुबह आने जाने के लिए गाड़ी भी नहीं मिलती थी। मेरे सामने आर्थिक व मानसिक परेशानियां भी आईं पर मैंने किसी तरह से यह कोर्स पूरा किया। मैं अपने डिप्लोमा मिलने का इंतजार कर रहा हूं पर इससे पहले ही मुझे इस कम्पयूटर डिप्लोमा के कारण एक सम्मानजनक नौकरी मिल चुकी है।

डिप्लोमा करते ही मेरी बाजार में कीमत बढ़ गयी है क्योंकि यह एक सरकारी डिप्लोमा है। मैंने सुना कि गढ़वाल मंडल विकास निगम में एक कम्प्यूटर आपरेटर का पद खाली है। मैंने वहां पर टेस्ट दिया और मैं पास हो गया। मेरी यहां पर तनख्वाह 12000 रू. तय हुई। मैं यहां पर संविदा पर काम कर रहा हूं। मेरी नौकरी अच्छी पर है पर एक भय रहता है कि यात्रा पर टिके इन गेस्ट हाउसों का काम कभी भी मंदा पड़ सकता है और हमारी नौकरी जा सकती है। इस अनजाने भय के बावजूद मेरे मन में एक आत्मविश्वास जाग चुका है कि मैं जीवन में धक्के नहीं खा सकता क्योंकि मुझे कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के साथ साथ हार्डवेयर की जानकारी भी हो चुकी है। मैं आज किसी के भी खराब कम्पयूटर ठीक कर सकता हूं। जहां मुझे कहीं भी परेशानी होती है वहां मैं रमन सर से फोन पर पूछकर कम्प्यूटर ठीक कर लेता हूं। मेरे जीवन में यह एक नया मोड़ है। मैं एक सम्मानजनक जीवन जीने की शुरूआत कर चुका हूं और अब कुछ और अच्छा करना चाहता हूं। यही मेरी भविष्य की योजना है।

केदारनाथ आपदा के बाद इस क्षेत्र के ज्यादातर परिवार देहरादून चले गये हैं। अलकनन्दा नदी का रूख बहुत बदल गया है। कभी भी किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा का भय बना रहता है। यहां के ज्यादातर परिवार देहरादून और ऋषिकेश की ओर पलायन करते ही जा रहे हैं। कई स्थानीय लोगों ने अपने होटल व दुकानें बंद कर दिये हैं। यह बहुत पीड़ादायक स्थिति है। यहां खेती बाड़ी नहीं है। सब कुछ पर्यटन पर ही निर्भर है और अब वही खत्म हो रहा है। हमें इस दिशा में बहुत संवेदनशील होकर सोचना होगा कि इन प्राकृतिक आपदाओं का कारण क्या है? और उसका हल खोजना होगा और उसके लिए जमीन पर ईमानदार प्रयास करने होंगे। मनोज ने यद्यपि अभी जीवन में वह मुकाम नहीं पाया है जिसका वह सही मायने में हकदार है पर उसका पूरा व्यक्तित्व, काम के प्रति सम्मान, संजीदगी, ईमानदारी और समर्पण देखकर कोई भी कह सकता है कि वह अपने जीवन की सड़क पर संतुष्टि के साथ चलते हुए सफलता के बहुत नजदीक खड़ा है। मनोज बताता है कि कभी कभी यात्रा सीजन कम होने से थोड़ा मन में तनाव हो जाता है पर एक बात सुकून देती है कि अब मैं काम

सीख चुका हूं। अब कोई ना कोई काम तो मिल ही जायेगा। मेरे हाथ में डिप्लोमा आने के बाद मेरी मान्यता एवं प्रमाणिकता बढ़ जायेगी। अब मैं अन्य जगहों पर भी काम तलाशना शुरू कर दूंगा। मेरे डिप्लोमा करके नौकरी में आने से अच्छी बात हुई कि मेरे परिवार में भी एक नए उत्साह और खुशी का संचार हुआ है। मेरी पत्नी मुझे पढ़ाई करने और परीक्षाओं की तैयारी करने हेतु प्रोत्साहित करती है।

अब हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति में बहुत अंतर आ चुका है। मनोज बड़ी संजीदगी से बताता है कि मैं अपनी बेटी को खूब पढ़ाना चाहता हूं। मैं उसे टीचर बनाना चाहता हूं। वह पढ़ने में बहुत तेज है। वह खूब अंग्रेजी बोल लेती है। मैं उसे अपनी भाषा गढ़वाली भी सिखाना चाहता हूं। हम सब लोग बहुत अच्छे से गढ़वाली भाषा बोल लेते हैं। मैं भी सोचता हूं कि कभी ना कभी मुझे जरूर टीचर की नौकरी मिलेगी। मैं बैंक की तैयारी भी कर रहा हूं। अपने परिवार के लिए एक अच्छी नौकरी पाना मेरा सुंदर सपना है। मैं जीवन में कुछ अच्छा करना चाहता हूं। अपने और अपने लोगों के लिए!

नौकरी मेरी मां को श्रृद्धांजली!

ऊषा रावत 07895846442
(डिप्लोमा इन आफिस मैनेजमेंट)

उत्तराखंड के सुदूर पहाड़ी जिले टिहरी का आखिरी रोड़ हैड घुत्तु नामक एक छोटा सा कस्बा है। इस कस्बे की महत्ता है कि यहां से टिहरी के सीमांत गांव गंगी के लिए पैदल रास्ता शुरू होता है जो कि प्रसिद्ध खतलिंग ग्लेशियर की ओर जाता है। खतलिंग ग्लेशियर से ही भागीरथी की सहायक भिलंगना नदी निकलती है। इस कस्बे की एक और खासियत है कि इस अंतिम कस्बे के बाद गंगी गांव तक कोई और गांव नहीं है और गंगी इलाके के बाद चाईना बार्डर शुरू हो जाता है। गंगी के पुराने लोग घुत्तु को भारत कहते थे और उनके लिए बार्डर के पार का इलाका चाइना देश है। इस कस्बे तक पहुंचने के लिए नई टिहरी से घनसाली होकर आना होता है। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध यह इलाका आज भी बहुत हरा भरा है। घनसाली से घुत्तु का पूरा रास्ता सुकून देने वाला है। यहां के लोगों ने अपने इस कीमती सौंदर्य एवं सम्पदा को आज भी बचाकर रखा है और उसी के साथ ही अभी भी यहां के लोगों के अंदर सहजता, सरलता, भोलापन और सादगी मौजूद है। इस क्षेत्र में अभी भी विकास की लहर अपेक्षित है और यहां के लोगों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती है।

एक आम धारणा है कि यदि यहां के लोगों को विकास की मुख्य धारा से नहीं जोड़ा गया तो एक दिन रोजगार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी कई बुनियादी सुविधाओं के अभाव में इस क्षेत्र के लोग शहरों की ओर पलायन करते जायेंगे और सीमांत महत्ता का यह क्षेत्र एकदम खाली हो जायेगा। जो इस क्षेत्र के साथ साथ देश के लिए भी असहज स्थिति पैदा करेगा। प्राकृतिक आपदाएं स्थानीय लोगों को और भयभीत कर उनको यहां से पलायन हेतु उकसा रही हैं। ऐसे हालतों में जरूरी है कि इन इलाकों के नौजवानों हेतु रोजगार के सुगम साधन खोजे जायें। इसी सोच के साथ इस दुर्गम क्षेत्र के युवाओं को रोजगार एवं नई तकनीकी से जोड़ने के उद्देश्य से एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना ने वर्ष 2012 में यहां कम्प्यूटर शिक्षा के प्रशिक्षण कराये थे। उसी श्रृंखला को जारी रखते हुए वर्ष

2014–15 में ILSP ने अपने पायलट व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अर्न्तगत ऐसेट इन्फोटेक लिमिटेड के द्वारा उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के माध्यम से 125 युवाओं को कम्पयूटर शिक्षा का प्रशिक्षण करवाने हेतु इस दुर्गम क्षेत्र से युवाओं को जोड़ने का प्रयास किया। ILSP के इन्हीं जमीनी प्रयासों से घुत्तु के नजदीकी गांव मैडुसैंदुवाल गांव की 20 साल की लड़की ऊषा रावत भी अपने गांव से बाहर आई है। ऊषा ने 12 वीं कक्षा पास करने तक घुत्तु कस्बे से बाहर नहीं देखा था कि दुनिया कैसी और कितनी बड़ी है। आज ऊषा के व्यक्तित्व में आये बदलावों का देखकर विश्वास नहीं होता कि यह वही लड़की है जो पहले कभी गांव से बाहर नहीं आई थी और ना ही उसने कभी कम्प्यूटर को देखा था। आज वह आत्मविश्वास के साथ ऋषिकेश के एक कम्प्यूटर संस्थान में काम कर रही है ।

ऊषा ने 10 साल की छोटी उम्र में अपनी मां को खो दिया था। वह साधारण परिवार से संबंध रखती है। उनके पास अच्छी खेती बाड़ी है पर उसने कभी खेती बाड़ी नहीं की है। वह अपने गांव के ही स्कूल में पढ़ी लिखी है। वह दो भाई बहन हैं। उसका बड़ा भाई अपने परिवार के साथ देहरादून में रहता है। पिता ने उसे कभी मां की याद नहीं आने दी। वह पढ़ने लिखने में होशियार थी। उसने स्थानीय राजकीय इंटर कालेज से द्वितीय श्रेणी में हाईस्कूल एवं इंटर पास किया। वह स्कूल की मॉनीटर भी रही है। उसका व्यक्तित्व देखकर लगता है कि उसमें प्राकृतिक रूप से नेतृत्व के गुण मौजूद हैं पर सही मौका ना मिलने के कारण वह पूरी तरह फले फूले नहीं। ऊषा बताती है कि स्कूल के बच्चे जैसा चाहते थे मैं उसी के अनुसार उनकी सुविधा के लिए काम करती थी। बच्चे उससे पूछकर ही सब काम करते थे। वह सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेती थी। उसके पिता उससे बहुत खुश रहते थे। टीचर उसकी तारीफ करते थे। उसके पिता ने उसे बहुत सहारा दिया। किसी काम के लिए कभी रोका टोका नहीं। ऊषा कहती है मैंने भी पूरी कोशिश की कि उनके विश्वास को कभी नहीं तोड़ूं। वह बताती है कि उसने गांव से ही इंटर करने के बाद ऋषिकेश आकर किसी कम्प्यूटर संस्थान से कम्प्यूटर कोर्स तो किया पर वह अपने को खाली का खाली ही महसूस करती थी। मुझे कुछ समझ में नहीं आया पूरा कोर्स करने के बाद भी। वह बताती है कि कम्पयूटर में मेरी रूचि है। मैंने इसलिए सोचा कि फिर से कम्प्यूटर कोर्स करूं। मुझे अभी तक कम्प्यूटर खोलना बंद करना भी नहीं आता था जबकि मैं पहले ऋषिकेश में कम्प्यूटर का प्रशिक्षण ले चुकी थी। पूरा प्रशिक्षण लेने के बाद मुझे कुछ नहीं आया तो मैं वापस गांव चली गई।

ऊषा बताती है कि उसके पिता आजीविका परियोजना से परिचित हैं और स्थानीय खतलिंग फैडरेशन के अध्यक्ष हैं। उन्होंने ही बताया कि ऐसेट् कम्पनी देहरादून के लोग 12वीं पास बच्चों को कम्प्यूटर कोर्स कराऐंगे। हमारे क्षेत्र से कई बच्चों ने मई 2014 में फार्म भरा। मैंने भी फार्म भरा और प्रशिक्षण हेतु साक्षात्कार दिया। मैं पास होकर ट्रेनिंग के लिए चयनित हुई। हमारा प्रशिक्षण 6 माह का था। हमने चम्बा में प्रैक्टिकल और थ्योरी पढ़ी। प्रशिक्षण के दौरान मुझे काफी चीजें जानने का

मौका मिला और मैंने बहुत कुछ सीखा। मैंने अपने प्रशिक्षण के दौरान आफिस मैनेजमेंट ट्रेड में यह सीखा कि किसी ऑफिस को कैसे चलाया जाता है और कैसे कार्यालय को व्यवस्थित किया जाता है। किसी कार्यालय को संभालने के लिए क्या क्या जरूरी बातें है? हमें अंग्रेजी बोलना भी सिखाया गया। पहले मैं किसी इंटरव्यू को देने में कतराती और घबराती थी पर आफिस मैनेजमेंट का यह डिप्लोमा करने के कारण मेरे अंदर आत्मविश्वास आ गया है। वह कहती है कि हमारे गंवाणा गांव के 10 लड़के और लड़कियां इस प्रशिक्षण हेतु आये थे पर दो ही पास हुए। पास होने वाले बच्चों में मैं और संतोष सिंह हैं, जो आजीविका परियोजना की खतलिंग फैडरेशन घुत्तु में कम्प्यूटर आपरेटर का काम करता है।

ऊषा की सहेलियां उसकी सफलता से बहुत खुश हैं। वह भी यह कोर्स कर नौकरी करना चाहती हैं। मैं अपनी सहेलियों को कम्प्यूटर कोर्स हेतु प्रेरित कर पाई हूं यह बात मुझे बहुत संतुष्टि देती है। उसके प्रशिक्षक रमन वालिया बताते हैं कि जब यह संस्थान में आई थी तो यह डरती थी और किसी से बोलती नहीं थी। उसने एक कम्प्यूटर कोर्स किया था पर वह कुछ जानती नहीं थी। वह कम्प्यूटर को खोलना और बंद करना भी नहीं जानती थी। एक टीचर और संस्थान के लिए यह खुशी की ही बात होगी ना कि वही कल की ऊषा अपने प्रोफेशनल काम कम्प्यूटर कोर्स में इन्टरनेट व वैबसाइट आदि पर आराम से काम कर लेती है। कम्पयूटर में वह एम.एस. ऑफिस, एक्सैल, पावर प्वांइट आदि सब कुछ आराम से हैंडिल कर लेती है। इस प्रशिक्षण को करने के बाद ऊषा के व्यक्तित्व में बहुत अंतर आया है। इसका डर और हिचक जाता रहा। यह बहुत आत्मविश्वास के साथ कहीं भी इंटरव्यू देने चली जाती है। यह पहली बार आफिस मैनेजमेंट का प्रशिक्षण लेने के लिए अकेले घर से बाहर निकली थी। पहली बार अकेले बस में बैठकर आई थी पर अब तो यह देहरादून और ऋषिकेश में सब जगह आराम से अकेले आती जाती है। ऋषिकेश में अकेले रहती भी है। इसको देखकर खुशी होती है कि इसके अंदर लगन आ गई है। सच में इस लड़की में बहुत अंतर आया है। आप इसका प्रशिक्षण से पहले का फोटो देखिए व आज की ऊषा को मिलिए तो खुद ही समझ जायेंगे कि इसने क्या खोया और पाया है।

ऊषा आफिस मैनेजमेंट का डिप्लोमा करने के बाद ए.सी.टी.सी सेंटर ऋषिकेश में काम कर रही है। वह बताती है कि मेरी जॉब रू. 8000 से शुरू हुई थी और आज मुझे 10000 रू. मिलते हैं। वहां पर मेरा काम आफिस की व्यवस्था देखना है। मेरा काम सेंटर में आने वाले बच्चों की फीस जमा करना, उनके फार्म भरवाना और अन्य कार्यालय काम करना है। ऊषा कहती है कि सेंटर में आकर पहले दिन मुझे बहुत डर लगा जबकि मैं अपने स्कूल की मानीटर रही हूं पर एक बड़े शहर में आकर मेरी सारी मॉनीटरी एक कोने में चुपचाप जाकर खड़ी हो गई। कुछ दिनों में सब कुछ ठीक हो गया और मैं सारा काम सीख गई।

मैं आज अपने पांवों पर खड़े होकर बहुत खुश हूं। मेरे पर घर की कोई जिम्मेदारी नहीं है और मैं

अपना पैसा अपने पर ही खर्च कर रही हूं। ऊषा बताती है कि मैं पहले सीधी साधी लड़की थी जो आगे और सिर्फ आगे आना चाहती थी पर मुझे पता नहीं था कि करना क्या है। अब यह प्रशिक्षण करके मुझे अपना रास्ता मिल गया है। मैं अभी देहरादून से ग्रेजुएशन करना चाहती हूं और वह करने के बाद मैं एम.बी.ए. करूंगी। मेरी नौकरी का परिवार की स्थिति पर बहुत असर नहीं है लेकिन मैं अपने पांवों पर खड़ी हूं यही मेरे लिए बहुत है। मैं अपनी इस छोटी सी सफलता से बहुत खुश हूं।

ऊषा नम आंखों से बोली कि मैं बहुत आगे जाना चाहती हूं और अपनी मां को बताना चाहती हूं कि तेरे जाने के बाद भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। वह बड़ी नम्रता और भीगी आंखों से बोली कि हां मुझे जब पता चला कि हमारा प्रशिक्षण आजीविका कार्यक्रम ने कराया तो मुझे खुशी हुई कि आजीविका ने मुझे एक मौका देकर मेरे पिता के सपने और उनका भरोसा बनाए रखने में मेरी मदद की। मेरे पिता ने मुझे मां की तरह ही पाला इसलिए मेरा अपने पांवों पर खड़ा होना ही मेरी मां को मेरी श्रृद्धांजली है। आप विश्वास रखो मेरे कदम यहीं नहीं रूकेंगे। मैं बहुत आगे बढ़ूंगी! और सब जगह मॉनीटर ही रहूंगी!

परिवार के निर्णयों में मेरी भूमिका बढ़ी!

भावना नैलवाल 08556886203
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

अल्मोड़ा जिले के भिकियासैंण ब्लॉक के मनीला क्षेत्र के कोलीधार गांव की भावना नैलवाल ग्रामीण परिवेश से आने वाली आम लड़कियों की तरह ही सीधी, सरल और सहज है जिसने बचपन में छोटे छोटे सपने देखे थे और उनको पूरा करने के लिए वह सही समय का इंतजार कर रही थी। भावना का गांव अल्मोड़ा से लगभग 80 किमी. दूर है। भावना की उम्र 20 साल है। भावना ने दसवीं व बारहवीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। भावना के पिता रामनगर में कुछ प्राईवेट काम करते हैं। घर में मां, दादी और एक छोटा भाई है जो बी. फार्मा कर रहा है। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ठीक नहीं है। परिवार खेती बाड़ी से गुजर बसर करता है। पहाड़ की खेती इतनी उत्पादक नहीं है कि उससे परिवार हेतु 12 महीने का राशन मिल सके। भावना की 19 साल की उम्र में शादी हो गई थी। उसका पति बी.ए. पास है। पहाड़ों में परिवार के पालन हेतु गांव के युवा रोजगार की तलाश में मैदानों की ओर पलायन कर जाते हैं। भावना के पति भी दिल्ली में किसी होटल में प्राईवेट नौकरी करते हैं। भावना के परिवार में अभी कोई बच्चा नहीं है। उसके ससुराल में थोड़ी बहुत खेती है पर वह बहुत उत्पादक नहीं है।

भावना को गांवों में चलने वाले किसी स्वयं सहायता समूह या अन्य संस्थाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। पहाड़ों में आधे पर जमीन लेकर खेती करने की प्रथा है पर भावना के परिवार ने इस तरह से कोई जमीन कभी आधे पर नहीं ली। भावना के परिवार में गाय भैंस या अन्य कोई पशु भी नहीं पाले जा रहे हैं और ना ही परिवार में मुर्गी पालन आदि की कोई गतिविधि रोजगार बढ़ाने के लिए की गई। भावना का परिवार पक्के मकान में रह रहा है। गांव में चूंकि खेती बाड़ी बहुत कम हो रही है और उत्पादकता भी कम है इसलिए पूरा परिवार अपनी रोजमर्रा की खाद्य सुरक्षा एवं अन्य

जरूरतों के लिए बाजार पर ही निर्भर है। परिवार में किसी भी सदस्य ने किसी भी तरह की कोई बीमा पालिसी नहीं ले रखी है। भावना का परिवार गांव के बहुत साधारण परिवारों में है। भावना अपनी साधारण सामाजिक व आर्थिक स्थिति के कारण आगे बढ़ने के लिए लगातार कोशिश करती रही है पर बिना किसी दक्षता के कोई रोजगार खोजना मुश्किल था। गांवों में रहकर कोई ऐसा मौका उसके सामने नहीं था जिससे वह अपने परिवार की आजीविका बढ़ा सके।

भावना से बात करने पर वह आत्मविश्वास से भरी समझदार युवती प्रतीत होती है लेकिन इस प्रशिक्षण में आने से पहले वह ऐसी नहीं थी। वह बहुत डरी, सहमी और चुप रहने वाली लड़की थी। ऐसा क्या हुआ कि कल की शांत और शर्मीली भावना आज की समझदार, संतुलित और अपने काम की जानकार नर्सिंग असिस्टेंट बन गई है। भावना के गांव से बाहर निकलकर चंडीगढ़ तक पहुंचने की कहानी बड़ी दिलचस्प है। भावना रोजगार हेतु किसी अवसर की तलाश में थी। अचानक अप्रैल 2014 में उसकी सहेली कविता नेगी ने बताया कि आजीविका प्रोजेक्ट और चंडीगढ़ की संस्था जी एंड जी के साथ मिलकर गांव के 12वीं पास युवाओं को नर्सिंग क्षेत्र में उनकी क्षमता के अनुसार प्रशिक्षण दे रही है। प्रशिक्षण के बाद उनको रोजगार भी मिलेगा। गांव की सीधी साधी लड़की भावना को इस सम्बध में बहुत कुछ तो समझ नहीं आया पर एक बात उसके मन में बैठ गई कि यह अच्छा मौका है और इसका फायदा आगे बढ़ने के लिए किया जा सकता है। भावना ने यह तो सोच लिया कि मैं इस प्रशिक्षण में जाऊं पर वह इतनी डरी और सहमी थी कि उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस इंटरव्यू में पास होगी भी या नहीं ?उसकी सहेली ने भावना के परिवार में बात की कि हम प्रशिक्षण में भाग लेने देहरादून जाना चाहते हैं। पिता जी घर से बाहर रहते हैं इसलिए उनकी सोच गांव वालों से थोड़ा हटकर है। उन्होंने भावना की मां और उसके पति को भी समझाया। इस तरह भावना के प्रशिक्षण में आने का रास्ता खुला। उसने इंटरव्यू दिया और वह पास हो गई। अब परेशानी थी कि भावना कभी गांव से बाहर नहीं आई थी। उसके जीवन के 19 साल यूं ही गांव में सहेलियों के साथ निकल गये थे। उसे यह भी पता नहीं था कि देहरादून कैसे जाते हैं। कहां से बस मिलती है ? वह और उसकी सहेली डरी हुई थीं।

भावना से यह पूछने पर वह क्यों इस कौशल वृद्धि कार्यक्रम से जुड़ी ? वह तुरंत बोली कि मैं हमेशा से अपने जीवन में कुछ करना चाहती थी और ज्यादा से ज्यादा सीखना चाहती थी। मैंने सोचा यह प्रशिक्षण मेरे जीवन में नया मोड़ ला सकता है। 28 अप्रैल 2014 से उनका प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्रशिक्षण के दौरान भावना को मानो अपने मन की मुराद मिल गई। गांव की यह शर्मीली लड़की नर्सिंग की बारीकियां जानने को उत्सुक थी पर उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। प्रशिक्षण में उसे स्वास्थ्य और एक स्वास्थ्यकर्त्ता के बारे में जानकारी दी गई। मानव शरीर विज्ञान, शरीर के ढ़ांचे, शरीर के विभिन्न अंगों व तंत्रों, फर्स्ट एड, दवाओं, इंजेक्शन, साफ सफाई, यौन हिंसा और चिकित्सा विज्ञान के जरूरी उपकरणों के बारे में किताबी व व्यवहारिक ज्ञान दिया गया। थोड़ा बहुत

कम्प्यूटर व अंग्रेजी भी सिखाई गई। हमें ब्लॅड प्रैशर, बुखार नापना, इंजैक्शन लगाना भी सिखाया गया। प्रभावी संचार कौशल के बारे में बताया गया कि कैसे इन जानकारियों का प्रयोग आप एक कुशल नर्सिंग असिस्टेंट बनने में कर सकते हो। यह एक आवासीय कोर्स था। प्रशिक्षकों के लिए तो प्रशिक्षण देना आसान था पर गांव की सीधी लड़की जो हमेशा अपनी पहाड़ी भाषा में ही बातचीत की अभ्यस्त थी और हिंदी भी ढंग से नहीं बोल पाती थी वह कैसे चिकित्सा विज्ञान के अंग्रेजी के शब्दों से दोस्ती कर पाती ? उसके लिए यह समय बड़ा कठिन था फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और सीखने की कोशिश करती रही। प्रशिक्षण के दौरान चिकित्सा विज्ञान की व्यवहारिक जानकारियां लेकर भावना का आत्मविश्वास बढ़ गया था। उसे जितना भी और जैसे भी समझ आया पर वह इन जानकारियों को पाकर खुश थी। इस प्रशिक्षण ने उसको जीवन का एक नया रास्ता दिया लेकिन उसका डर, सहमापन और भविष्य की आशंकाएं उसे परेशान कर रही थीं। भावना बताती है कि प्रशिक्षण तो पूरा हो गया था पर मुझे बहुत कुछ समझ ही नहीं आ रहा था कि आगे क्या करना है ? मानव शरीर की संरचना कठिन लग रही थी कि कैसे यह सब होगा ?

भावना का प्रशिक्षण मई 2014 में पूरा हुआ। उसका साक्षात्कार हुआ और उसे बालाजी मेडी सेंटर चंडीगढ़ में हॉस्पिटल असिस्टेंट के तौर पर काम करने का मौका मिला। भावना घर से दूर चंडीगढ़ नहीं जाना चाहती थी पर उसने इसे एक चुनौती के रूप में लिया। वह बताती है कि हम कभी गांव से बाहर नहीं आये थे और अब चंडीगढ़ जाने की बात ने मेरे अंदर अनजाना डर भर दिया था। हमें तो यह भी पता नहीं था कि कैसे इतने बड़े शहर में जाना है, कैसे वहां रहना है, क्या करना है, हम तो उस शहर के हिसाब से बिलकुल अनजान और फिट नहीं थे पर जी.एंड जी. की पायल मैडम ने अपने प्यार और देखभाल से हमें इस शहर में रहने लायक बनाया। उन्होंने एक बड़े अस्पताल में काम करने लायक बातें हमें सिखाई। वह हमें लेने स्वयं चंडीगढ़ बस स्टैंड पर आई थीं। आज भावना बहुत आत्मविश्वास से अंग्रेजी के शब्द बोलती है। उसको देखकर, उसके रहन सहन व बातचीत के अंदाज से कोई नहीं कह सकता कि यह वही एक साल पुरानी भावना है जो बहुत डरी, सहमी और खामोश थी।

भावना बताती है कि तीन महीने तक पायल मैडम ने हमको अस्पलाल से छुट्टी के बाद रोज अंग्रेजी पढ़ाई। शहर में रहने के तौर तरीके, कपड़े पहनने और लोगों के साथ व्यवहार करने का सलीका भी सिखाया। शुरू में तो हम बस भी नहीं पकड़ पाते थे। सड़क पर ऑटो वाले को रोकने में भी डर लगता था पर अब तो हम अकेले अपने गांव आ जा सकते हैं। भावना ने अपनी नई नौकरी जून 2014 में रू. 6500 पर शुरू की। वह हर महीने रू. 3000 बचा लेती है। इस प्रशिक्षण में पारंगत होने के बाद भावना की टिप्पणी थी कि इस प्रशिक्षण ने मुझे जीवन में कुछ करने और अपने समय को उत्पादक कामों में लगाने का मौका दिया। मैं अपने पांवों पर खड़े होकर बहुत खुश हूं। मुझे नर्सिंग काम के साथ साथ जीने का एक नया आत्मविश्वास और सलीका इस एक साल में मिला।

एक बात मेरे मन में बैठ गई है कि मुझे अब आगे कुछ करना है। यह एक बहुत बड़ा मौका मेरे सामने आया और मैंने उसे जिंदगी में बदलाव की चुनौती के तौर पर लिया। मैं दो बार अकेले चंडीगढ़ से गांव गई हूं। मुझे अपनी नौकरी का पैसा घर में नहीं देना पड़ता। परिवार वालों ने कहा है कि अपने पैसे को बचाकर अपनी आगे की पढ़ाई कर लो।

मेरी नौकरी के बाद पूरा परिवार मुझे सम्मान से देखने लगा है और गांव वालों को लगता है कि यदि यह सीधी साधी लड़की इतनी तेज हो सकती है तो हमें भी ऐसे ट्रेनिंग के लिए जाना चाहिए। मेरे को देखकर गांव वालों के मन में लड़कियों के लिए सम्मान की भावना जागी है। यह पूछने पर कि यदि यह प्रशिक्षण नहीं होता तो तुम क्या करती ? वह तपाक से बोली अपनी सहेलियों की तरह गांव में घास काटती और खेती बाड़ी करती पर अब तो मेरी जिंदगी ही बदल गई है। मेरे अरमानों को पंख लग गये हैं। अब मैं बहुत दूर तक उड़ सकती हूं। भावना बताती है कि उसकी मां उसकी जिंदगी में आए इस बदलाव से बहुत खुश है। वह सबसे बोलती है कि भावना अब पहाड़ी लड़की नहीं रही। वह तो अब एकदम देशी लड़की हो गई है। मां गांव वालों से कहती है कि मेरी भावना अब बहुत समझदार हो गई है। बहुत सोचने विचारने लगी है। मैं अब गांव की और लड़कियों को भी ऐसे प्रशिक्षण करने को कहूंगी जिससे उनकी जिंदगी भी मेरी बेटी की तरह बदल सके। भावना बताती है कि अब वह परिवार की जरूरतों को पूरा करते हुए लगभग 3000 रू. प्रतिमाह बचा लेती है। घर में पति के अलावा एक और आय का स्त्रोत आने से मेरे पति भी बहुत खुश हैं। हम दोनों मिलकर ज्यादा बचत कर लेते हैं जिससे हमारा परिवार मजबूत हो रहा है। आय का स्त्रोत बढ़ने से हमारे खान पान का स्तर सुधरा है। परिवार आर्थिक असुरक्षा के भाव से बाहर निकला है। हमारे सामाजिक जीवन स्तर में भी अंतर आया है। गांव के लोग हमें सम्मान की दृष्टि से देखने लगे है। भावना बहुत संजीदगी से कहती है कि एक बड़ा फर्क मेरे जीवन में आया कि मेरी नौकरी के बाद परिवार में निर्णय प्रक्रिया में मेरी भागीदारी बढ़ी है। मेरे पति परिवार की जरूरतों को पूरा करने और अन्य निर्णय लेने में अब मेरी राय लेने लगे हैं। मैं अब परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई हूं।

भावना जीवन में आए बदलाव का श्रेय अपनी प्रशिक्षक पायल टंडन को देती है। पायल भावना के बारे में बताती है कि यह तो एक साल में बिलकुल बदल गई है। इसके अंदर आत्मविश्वास आ गया है। इसका पूरा व्यक्तित्व निखर गया है। यह बहुत मेहनती है और अपनी ईमानदारी के बल पर बहुत आगे बढ़ेगी। भावना को देखकर अब गांव की लड़कियां भी प्रशिक्षण हेतु आना चाहती हैं। भावना जब भी गांव जाती है तब वह गांव में छोटी मोटी बीमारियों के बारे में बताकर समझाने की कोशिश करती है कि इन छोटी बातों को नहीं नकारना चाहिए। गांव के लोग उसकी सलाह मानते हैं। भावना पुरानी बातें याद कर कहती है कि प्रशिक्षण के दिनों में गांव वालों ने हमें बहुत डराया कि लड़कियों को कहां भेज रहे हो ? आजकल दुनिया का कुछ भरोसा नहीं है पर मेरे पिता ने समझदारी से सब कुछ थामा और परिणाम आज आपके सामने है। भविष्य की योजना के बारे में वह बताती है कि मैं

इस छोटे से कोर्स से शुरू हुए अपने कैरियर को आगे बढ़ाना चाहती हूं। मैंने परिवार में सलाह की है और मैं ए.एन.एम. का कोर्स करके अपने पति के साथ दिल्ली में नौकरी करना चाहती हूं। हम दोनों साथ रह कर जीवन यापन करना चाहते हैं यह मेरी भविष्य की योजना है। भावना के पति ने उसके लिए दिल्ली के मूलचंद हास्पिटल में नौकरी की बात कर ली है। वहां भावना को 12000 रू. मिलेंगे। यह कहकर भावना चुप हो गई लेकिन भावना के चेहरे पर एक गहरा संतोष व आत्मविश्वास का भाव साफ साफ दीख रहा था जिसे देखकर यह कहा जा सकता है कि वह बहुत खुश और संतुष्ट है।

वह अब जीवन में नए रास्ते खोलने की तैयारी में लगी है और इसके लिए योजना बना रही है। भावना आखिर में बड़ी मासूमियत से कहती है कि UGVS ने हमारी जैसी गांव की लड़कियों के लिए प्रशिक्षण के ये छोटे छोटे रास्ते खोले हैं। मैंने UGVS को कभी देखा नहीं है पर उससे मिलने की बहुत इच्छा है। वह बड़ी नम्रता से बोली कि UGVS तुमने हमारी जिंदगी बदल दी है क्या हम कभी तुमसे मिल सकते हैं? हम तुमसे मिलकर तुम्हें ट्रीट देना चाहते हैं। उसके यह शब्द किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता को बताने के लिए काफी हैं।

आखिर मुझे ठहराव मिला!

हिमांशु मसंत 07830721204
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

मेरा नाम हिमांशु मंसत है। मैं अल्मोड़ा जिले के भिकियासैंण ब्लॉक के रवाल्टा गांव का रहने वाला हूं। मैं 15 साल की उम्र में ही घर से निकल गया था। आज मैं 18 साल का हूं। मेरी कहानी मेरी ही तरह सीधी साधी और सरल दीखती है पर मैं छोटी उम्र में ही बहुत घुमावदार मोड़ों से गुजरा हूं। कभी कभी लगता था कि मेरे साथ यह सब क्या हो रहा है? मैं अपने रास्ते में आने वाली मुश्किलों से बहुत घबराता था, डरता भी था पर फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और आखिरी में बड़े बड़े सपनों के पीछे दौड़ते दौड़ते जब मैं हार गया तो अचानक आजीविका कार्यक्रम के व्यवसायिक प्रशिक्षण की एक छोटी सी उम्मीद की किरण ने मेरी भटकती जिंदगी को ठहराव दिया!

मैं आज भी संघर्ष कर रहा हूं पर मुझे अब अपना रास्ता साफ साफ दिख रहा है कि आखिर मुझे कहां जाना है और कैसे जाना है? यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। मैं जीवन में आये इस ठहराव के लिए आजीविका कार्यक्रम का धन्यवाद देना चाहता हूं कि उसने एक रास्ता तय करने में मेरी मदद की। मैं आपको अपनी कहानी इसलिए सुनाना चाहता हूं कि जिससे मेरे जैसे बच्चे कुछ सबक ले सकें जिनके माता पिता अपना पेट काटकर उनको आगे बढ़ाने के लिए सब कुछ करते हैं पर वह कैरियर के मामले में सही जानकारियों के अभाव में बार बार धक्के खाते हैं और अंत में निराश हो जाते हैं।

हिमांशु बहुत ही सरल, सौम्य, मृदुभाषी और अपने सत्य को बेबाकी से रखने वाला लड़का है। उसे देखकर ही लगता है कि वह बहुत संस्कारित परिवार से आया है। हिमांशु की कहानी बहुत से मायनों में आज के युवाओं को झकझोरने वाली है कि उन्हें बहुत ही सतर्कता से समाज में आगे बढ़ने की जरूरत है। हिमांशु अपने बारे में बताता है कि मेरे परिवार में मेरे माता पिता और दादा दादी हैं।

मेरे दो बड़े भाई और एक दीदी है। दीदी की शादी हो गई है और दोनों भाई दिल्ली में प्राईवेट में नौकरी करते हैं। एक भाई एक अस्पताल में टैक्नीशियन है और दूसरा योगा पढ़ाता है। मेरे पिता राजकीय इंटर कालेज नैलवालपाती में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं। मैंने सन् 2012 में उसी कालेज से हाईस्कूल व इंटर द्वितीय श्रेणी में पास किया है। हमारे पास थोड़ा बहुत खेती बाड़ी है पर उसमें कुछ होता नहीं है। मेरे पिता की नौकरी ही परिवार के रोजगार का सहारा है। मैंने इंटर करते ही घर छोड़ दिया था और ऋषिकेश में एक निजी पॉलीटैकनिक में दाखिला लिया। मैंने वहां दो साल पढ़ाई की पर उन्होंने अचानक एक दिन कुछ बच्चों पर बिना किसी कारण के झूठा आरोप लगाते हुए कि हमने कालेज में तोड़ फोड़ की हमें बैक पेपर में डाल दिया गया। बैक पेपर देने से मेरा एक साल खराब होता और मेरी समझ में ही नहीं आया कि मैंने कब और कहां तोड़ फोड़ की है? यह उस कालेज में बच्चों के साथ होता ही रहता है। इससे कालेज वालों को एक बार की फीस और मिल जाती है। मैं अपने घर वालों को क्या जवाब देता? मैंने एक दिन निराश होकर वह कालेज बीच में ही छोड़ दिया पर यहां रहकर मुझे प्राईवेट शिक्षण संस्थानों में होने वाले शोषण और मोटी फीस वसूलने का खेल समझ आ गया था।

मैंने वहां तो छोड़ दिया पर अब मैं क्या करता? इसी उधेड़बुन में मुझे किसी रिश्तेदार ने कानपुर में किसी कम्पनी के शोरूम में काम करने को कहा। उसके लिए मुझसे 15000 रू. मांगे और हमने विश्वास पर दे दिये। कानपुर जाकर मुझे पता चला कि वहां ना तो कोई कम्पनी है और ना ही कोई शोरूम वहां पर मुझे किसी चिट फंड टाईप कम्पनी के लिए पैसा जमा करने का काम करना था। मेरी तो आंखों के सामने अंधेरा छा गया। मैं बहुत डर गया था और वह लोग धमकाने भी लगे और ना ही वहां से बाहर आने दे रहे थे कि यह तो गांव में सबको बता देगा। एक बार मैंने बाहर निकलने की कोशिश की तो सबने मुझे घेर दिया। मैं किसी तरह से वहां से बाहर आ सका।

मैं निराश होकर ऋषिकेश अपने भाई के पास चला गया। वहां मैंने एक दिन हरिहर ज्ञान पीठ आश्रम में भागवत गीता सुनी तो मुझे लगा यह तो पढ़ना चाहिए। मैंने गीता के कुछ अध्याय पढ़े और थोड़ा बहुत यर्जुवेद भी सुना पर अचानक मुझे महसूस हुआ कि यह पढ़ना लिखना तो मुझे अच्छा लग रहा है पर मैं कब तक अपने परिवार पर बोझ बनूंगा और मैंने तय किया पहले रोजगार खोजना होगा। मैं वापस गांव आ गया पर मेरे मन में एक बात बैठ गई है कि मुझे वेदों की पढ़ाई करनी ही है। मैं पहले परिवार की जिम्मेदारियां निभाना चाहता हूं! पर कैसे? मैं यही सोचकर परेशान होता रहता था।

अचानक जुलाई 2014 में मेरे पिता को किसी ने बताया कि जी.एंड जी. संस्थान देहरादून के लोग 12वीं पास बच्चों को नर्सिंग असिस्टेंट का कोर्स करवा रहे हैं। मैंने भी फार्म भरा और मैं देहरादून प्रशिक्षण में चला आया। मैं कई जगह धक्के खा चुका था इसलिए मुझे डर तो नहीं लगा पर इस बात का भरोसा नहीं था कि यह कोई असली प्रशिक्षण है भी या नहीं? फिर मैंने खुद को ही जवाब दिया कि चलो एक ही महीने की बात तो है और हमसे कोई पैसा भी तो नहीं ले रहे हैं। इसे भी देख लेते हैं।

हमारा प्रशिक्षण हुआ और हमें इंजेक्शन देना, ड्रेसिंग करना, पट्टियां बांधना, दवाईयों व बीमारियों के बारे में मोटी मोटी जानकारियां दी गई। मेरा प्रशिक्षण पूरा हुआ और मैंने मैक्स अस्पताल में साक्षात्कार दिया। मुझे वार्ड एटेन्डेंट की नौकरी मिली और मेरी तनख्वाह 5400 रू. तय हुई। मेरा काम मरीजों को इधर से उधर ले जाना था। यहां मेरे को घर से बहुत दूर पड़ता था इसलिए मैंने यहां छोड़ दिया और मैं महंत इन्द्रेश अस्पताल में काम करने लगा।

मंहत इंद्रेश में काम करने वालों को सरकार के कर्मचारियों की तरह छुट्टियों की सुविधा है। हमसे वही काम लिया जाता है जो कहा गया है। तनख्वाह बहुत कम है। मैं अपने ताऊ जी के साथ रहता हूं इसलिए मुझे किराया और खाने का पैसा नहीं देना पड़ता। मेरा गुजारा किसी तरह से चल जाता है पर जिनका कोई सहारा नहीं है उन लड़कों के लिए बहुत मुश्किल है। इसी वजह से ज्यादातर बच्चे छोड़ कर वापस चले जाते हैं। मुझे एक बात और समझ में आई कि एक महीने का प्रशिक्षण अस्पताल में काम करने वालों के लिए काफी नहीं है। इस प्रशिक्षण से हमें नर्सिंग के काम में नहीं लिया जाता बल्कि हमसे हैल्पर जैसे काम करवाये जाते हैं क्योंकि नर्सिंग बहुत खास ट्रेड है और वह लोगों के जीवन से सीधे सीधे जुड़ा है। यह सीखने में तो बहुत वक्त लगता है इसलिए मेरा सुझाव है कि हमको ज्यादा समय का नर्सिंग कोर्स करवाया जाये तो अच्छा होगा क्योंकि एक अच्छे नर्सिंग स्टाफ की मरीज की देखभाल में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चिकित्सा क्षेत्र में 8-9 महीने गुजारने के बाद मुझे लगता है कि यह बहुत ही अच्छा फील्ड है। इसमें नौकरी के साथ सेवा करने का मौका मिलता है। जब कोई बीमार ठीक होता है तो लोग खुश होते हैं। वह दिल से दुआएं देते हैं। यह लोगों के सच्चे दिल से दी गई दुआओं का ही तो प्रतिफल है कि हम लोग सुरक्षित हैं। हिमांशु भावुक होकर कहता है कि आज के अनिश्चितता के दौर में जहां जीवन में एक पल का भरोसा नहीं है कि अगले पल क्या हो जाये वहां हम लोग सिर्फ लोगों की दुआओं की ही तो बदौलत जिंदा हैं। मैं सोचता हूं कि यदि पैसा ही कमाना जीवन का उद्देश्य हो तो कहीं भी कमा सकते हैं पर यहां दोनों ही बातें हैं। मैंने अब इसी क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना तय किया है।

मैं इस समय अस्पताल में नौकरी के साथ साथ जी.एन.एम. का कोर्स कर रहा हूं। उस कोर्स की फीस बहुत ज्यादा है और वह परिवार वालों ने भरी है। यह कोर्स करने के बाद मैं नर्सिंग क्षेत्र में ही एक प्रशिक्षित नर्सिंग असिस्टेंट की तरह काम कर सकूंगा। मुझे अच्छी तनख्वाह भी मिलेगी और मेरा स्तर भी बढ़ जायेगा। मैं भविष्य में अपनी पढ़ाई भी जारी रखूंगा। मैं सोचता हूं कि उसके बाद मैं बी.एस.सी और एम.एस.सी. करूंगा। एम.एस.सी. करने के बाद मेरा मन न्यूरो में पी.एच.डी. करने का है क्योंकि मैंने अभी तक मैक्स और इन्द्रेश अस्पताल दोनों जगह न्यूरो सैक्शन में आई.सी.यू. यूनिट में ही काम किया है। मैंने यह बहुत बारीकी से देखा और समझा है कि न्यूरो पेशेंट कैसे व्यवहार करते हैं और जब वह ऐसा व्यवहार करते हैं तो डाक्टर उनके साथ कैसे पेश आते हैं? मेरे अस्पताल में देहरादून के नामी न्यूरो सर्जन डाक्टर अरोड़ा काम करते हैं। मैं उनके साथ रांउड पर

जाता हूं। अपना काम करने के साथ साथ उनको देखकर मैंने यह समझा कि जब यह इतने बड़े डाक्टर होकर भी इतने सौम्य और व्यवहार कुशल हैं तो मुझे भी ऐसा ही बनना चाहिए और अपने मरीजों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। वह कभी कितनी भी बड़ी गलती हो जाये तो डांटते नहीं हैं बल्कि प्यार से समझाते हैं कि ऐसा नहीं ऐसा करो। एक बात मैंने और देखी कि वह किसी को कभी गलत राय नहीं देते। वह हमेशा हम सबको कहते हैं कि कभी किसी को दुख नहीं देना चाहिए। जब कभी किसी मानसिक रोगी के हाथ पांव नर्सिंग स्टाफ को मजबूरी में बांधने पड़ते हैं तो वह उस बात पर भी हमें समझाते हैं कि इन्हें बांधो मत। इन्हें खुला ही रखो क्योंकि यह हमारे प्यार और दया के पात्र हैं ना कि हमारी तरफ से किसी भी तरह की हिंसा के अधिकारी हैं। मैंने डा. अरोड़ा से मानवता की शिक्षा सीखी और मेरी कोशिश है कि मैं उसको अपने जीवन में उतार सकूं। डा. अरोड़ा से मैंने यह भी सीखा कि हमको हर काम समय पर करना चाहिए। डाक्टर साहब कहते हैं कि हमारी एक छोटी सी लापरवाही किसी मरीज की जिंदगी ले सकती है इसलिए मैंने यह बात गांठ बांध ली है कि कभी भी डाक्टर की बात को अनसुनी नहीं करना है। डाक्टर को देख देखकर मेरे मन में यही ख्याल आता है कि मैं भी इनकी ही तरह हंसमुख और अपने काम में कुशल बन सकूं।

हिमांशु अस्पताल के नर्सिंग स्टाफ के बारे में बताता है कि मैं अक्सर इन लोगों को देखकर सोचता हूं कि इन लोगों को इतनी तनख्वाह भी नहीं मिलती है फिर भी यह दिन रात लोगों की सेवा में लगे रहते हैं। इसके बावजूद भी लोग कहते हैं कि स्टॉफ काम नहीं करता। जब कभी सरकारी अस्पताल में किसी काम से गया या लोगों के अनुभव सुनता हूं तो वहां दूसरी ही स्थिति है। स्टॉफ को बहुत अच्छी तनख्वाहें मिलती हैं पर वह लोग काम से जी चुराते हैं। मेरा यह सोचना है कि चिकित्सा बहुत ही पवित्र पेशा है उसकी बारीकियां उस पेशे से जुड़े लोग ही जान सकते हैं कि कितने दबाव में हम लोग काम करते हैं। जानते हुए भी कोई मरने वाला है और हमारे पास अब सुविधाएं नहीं हैं तब भी हम चुपचाप लगे रहते हैं। मैं सोचता हूं कि इसलिए बिना गहराई जाने कभी भी लोगों को ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए कि डाक्टर ने लापरवाही करके फलां मरीज को मार दिया। क्या कभी ऐसा हो सकता है कि कोई डाक्टर यह चाहेगा कि उसके हाथ से किसी की मौत हो ? मेरा यह अपना अनुभव है कि जब मरीज इतना सीरियस हो जाता है कि उसके बाद की सुविधाएं अस्पताल में नहीं होती हैं तो डाक्टर क्या कर सकता है? दूसरा एक बात और है कि आजकल निजी अस्पतालों में कम पैसा मिलने के कारण ट्रेंड स्टाफ नहीं रहता उससे भी रिस्क फैक्टर बना रहता है। मैं सोचता हूं कि अस्पतालों में बहुत ही सर्तकता से सिर्फ प्रशिक्षित स्टॉफ को ही रखा जाना चाहिए। यदि स्टॉफ ट्रेंड हो और सुविधाएं अच्छी हों तो कई लोगों की जान बचाई जा सकती है। एक बार की घटना मुझे बहुत दुखी करती है और मैं सोचता हूं कि कई बार प्रशिक्षित नर्सिंग स्टॉफ की देखभाल और संवेदनशीलता लोगों की जान भी बचा सकती है। एक बार हमारे किसी मरीज को जिसके पास पैसा नहीं था कि वह वैंटीलेटर की सुविधा ले सकते। मैंने उसे सी.पी.आर. याने चेस्ट प्रैशर

रैस्पीरेशन दिया और वह डेढ़ घंटे तक जीवित रहा। मैंने यह कहीं सीखा था। उनके पास पैसा नहीं था और वह सुविधा के अभाव में मर गया। मुझे अपने पर बड़ी लाचारी हुई कि यदि मैं इस अस्पताल में नर्सिंग स्टॉफ में होता तो मैं जाकर अस्पताल प्रशासन से बात करता और निश्चित तौर पर वह लोग उसकी मदद करते। उसी दिन मैंने तय किया कि मुझे अब जी.एन.एम. का कोर्स करना है जिससे मैं भी अस्पताल में किसी आपात काल में सीधे अस्पताल प्रशासन के दरवाजे तक जा सकूं कि फलां मरीज सुविधा के अभाव में मर रहा है इसे बचा लीजिए। दूसरा एक बात मैंने समझी कि जिस बात पर आपको पूरी तरह अपने पर भरोसा ना हो वहां रिस्क नहीं लेना चाहिए और यह भरोसा तभी आ सकता है जब हम लोग पूरी तरह ट्रेंड होंगे क्योंकि यहां सवाल किसी की जिंदगी और मौत का होता है।

हिमांशु बताता है कि मैं अभी यहां ब्लॅड सैंपल लेना, ड्रेसिंग करना, ड्रिप लगाना, यूरिन कैथेटर लगाना, डाक्टर के बताए अनुसार दवा देना सीख गया हूं। मेरे अंदर बहुत आत्मविश्वास आ गया है। अब मेरा डर खत्म हो गया है और मेरी एक पहचान इस क्षेत्र में सब अस्पतालों में हो गई है। अब मैं धक्के नहीं खा सकता हूं। सबसे बड़ी बात मैंने यह सीखी कि अस्पताल की व्यवस्था कैसे चलती है और यहां किसकी क्या भूमिका है? मैं अपने मां बाप की बहुत इज्जत करता हूं कि वह कितनी मुश्किल से हमको पढ़ा रहे हैं इसलिए मैं अपने पांव पर खड़ा होना चाहता हूं। मेरे ताऊ जी ने मुझे समय की कीमत करना सिखाया कि तुमको अपना हर काम समय पर करना चाहिए, जब किसी को समय देते हो तो वहां समय पर जाओ और हर किसी से प्यार से बातें करो। मेरे ताऊ जी यहीं सरकार में एक बड़े अधिकारी हैं। मां हमेशा फोन पर बोलती है कि कभी किसी को धोखा मत देना और दूसरा अपना स्वास्थ्य बनाओ। मेरे भाईयों के अंदर कोई व्यसन नहीं है और उन्होंने यही समझाया कि हिमांशु तू कभी बुरी संगत में मत पड़ना।

हिमांशु बहुत ही मुक्त स्वभाव का लड़का है। उसके मन में हर किसी से कुछ ना कुछ सीखने की चाह है। उसके प्रशिक्षक उत्तम रावत का कहना है कि हमारे द्वारा प्रशिक्षित 85 बच्चों में से सिर्फ यही एक लड़का है जो हर वक्त हमारे सम्पर्क में रहता है और अपनी अच्छी बुरी खबर हमें बताता रहता है कि जीवन में क्या चल रहा है? यह बहुत ही निर्दोष और सरल स्वभाव का लड़का है जिसे प्रकृति से बहुत प्यार है। यह हर शनिवार को ऋषिकेश जाकर गंगा जी के किनारे बैठकर योगा सीखता है। यह आज भी फालतू नहीं घूमता और इसे हर वक्त अपने पारिवारिक दायित्वों और रिश्तों का अहसास रहता है कि मुझसे कभी किसी तरह की गलती ना हो जाये। जब हमारे पास यह प्रशिक्षण हेतु आया था तो उसमें यह गंभीरता नहीं थी। यह सिर्फ मां बाप का मन रखने के लिए यहां आया था पर अब हिमांशु वास्तव में बदल गया है। इसने एक महीने के प्रशिक्षण से यद्यपि काम की बारीकियां नहीं सीखीं पर अस्पताल के माहौल और एक बेहद भले डाक्टर के सानिध्य ने इसे 18 साल की उम्र में ही एक गंभीर और परिपक्व इंसान बना दिया है। मैं सोचता हूं यही इसके लिए

सबसे बड़ा इस प्रशिक्षण का उपहार है कि इसके जीवन में ठहराव आ गया है।

हिमांशु भी बहुत सहजता से मानता है कि वह इस क्षेत्र में अपने मन से नहीं आया था। वह सिर्फ मां बाप के दबाव में आया था पर यहां के माहौल ने मेरा मन बदल दिया और मैंने तय किया कि काम करना है तो अब इसी क्षेत्र में करना है। हिमांशु कहता है कि इस एक महीने के प्रशिक्षण का एक फायदा मेरे जीवन में हुआ कि मैंने अपने भविष्य की दिशा तय कर ली है और मेरे मन में दुख और पीड़ा में डूबे मरीजों के प्रति दया का भाव जिंदा हो गया है। मैं 15 साल की उम्र से जगह जगह भटका हूं। यहां वहां भटकते भटकते अचानक मेरे जीवन में ठहराव सा आ गया है। जीवन में आये इस सुखद बदलाव और ठहराव के लिए जिम्मेदार सभी लोगों और आजीविका संस्था का मैं धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने अचानक मुझे इस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है।

मैंने खूबसूरत दुनिया देखी

कविता नेगी 08556806687
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

पहाड़ों के दूर दराज गांवों की लड़कियां जो गांव के स्वछंद वातावरण में रहने की आदी हों, खुले आकाश के नीचे तितलियों के तरह पंख फैलाकर खेत खलिहानों, पानी के धारों और जंगलों के बीच विचरण करके जीवन की छोटी छोटी खुशियों में आनन्द खोजना जानती हों और यह मान चुकी हों कि हमारे हिस्से का आकाश वही है जिसके नीचे हम जिन्दगी के हिसाब किताब में व्यस्त हैं। वह जब अपनी छोटी सी मगर दिलचस्प दुनिया में अपना ताना बाना बुनने में व्यस्त हों और अचानक उनको पता चले कि अरे! इस दुनिया की सीमाएं मेरे गांव और मुल्क की सीमाओं तक ही नहीं हैं बल्कि दुनिया इससे भी कहीं बहुत बहुत बड़ी, विलक्षण और भांति भांति के रंगों से सजी है तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। ऐसे में विस्मय से भरे उनके होंठ चुपचाप उन हाथों को धन्यवाद देने के लिए बुदबुदा उठते हैं जो उनको गांव से शहरों की दूसरी ही दुनिया में पहुंचाने हेतु जिम्मेदार हैं। ऐसी ही विस्मय की स्थिति हुई अल्मोड़ा जिले के भिकियासैंण ब्लॉक के मनीला गांव की 19 साल की लड़की कविता नेगी की जब वह मनीला क्षेत्र के कोलीधार गांव से अचानक नियति के बुलावे पर UGVS द्वारा आयोजित कौशल वृद्धि प्रशिक्षणों के अन्तर्गत आयोजित हास्पिटल एंड ट्रेनिंग असिस्टेंट ट्रेड में प्रशिक्षण लेने देहरादून पहुंची। गांव से देहरादून और देहरादून से चंडीगढ़ नौकरी के लिए पहुंचना कविता के लिए एक सुन्दर यात्रा जैसा था जिसका उसने खूब आनन्द उठाया।

कविता का गांव अल्मोड़ा से 72 किमी. दूर है। गांव तक पहुंचने के लिए एक घंटा पैदल चलना पड़ता है। कविता के पिता भुवन नेगी इंटर पास हैं और फरीदाबाद में एक प्राइवेट नौकरी करते हैं। कविता के परिवार में 2 भाई व तीन बहनें हैं। अपने भाई बहनों में वह सबसे छोटी है। कविता ने

आर्टस विषय में गांव के ही राजकीय कन्या इंटर कालेज मनीला से इंटर पास किया है। कविता के हाईस्कूल एवं इंटर में द्वितीय श्रेणी के नम्बर आये हैं। कविता के भाईयों में एक प्राइवेट जॉब कर रहा है और दूसरा पढ़ाई कर रहा है। पहाड़ों की खेती पूरी तरह बारिश पर निर्भर होती है। इस वजह से खेती बाड़ी भी बहुत उत्पादक नहीं है। पिता व भाई प्राईवेट नौकरी व खेती बाड़ी कर परिवार की जिम्मेदारियां उठा रहे हैं। भाई बहनों ने अपनी स्कूली शिक्षा गांव से ही पूरी की। इस तरह से परिवार का जीवन यापन चल रहा है।

कविता बताती है कि अचानक उसे अपने भैया के किसी दोस्त से मार्च 2014 में पता चला कि चंडीगढ़ की जी एंड जी एजूकेशनल संस्था देहरादून में नर्स का प्रशिक्षण करा रही है। प्रशिक्षण में 12वीं पास बच्चे इंटरव्यू दे सकते हैं। यह प्रशिक्षण फ्री में होगा। कविता ने यह सुना तो खुशी की लहर उसके दिल में उठी कि क्या मैं भी इस प्रशिक्षण में भाग लेने जा सकती हूं। वह 12वीं कक्षा पास कर चुकी थी। कविता की क्षणिक खुशी को ब्रेक लगा कि क्या उसके पिता श्री भुवन सिंह नेगी उसे गांव से बाहर अकेले प्रशिक्षण में जाने देंगे या नहीं ? वह अपने से ही सवाल जवाब करती रही और उसने हिम्मत करके मां और पिता के सामने अपनी बात धीरे से रखी। इस प्रशिक्षण का कोई शुल्क नहीं है और रहना खाना भी फ्री में ही होगा। यह जानकर मां बाप शंकित थे कि ऐसा कौन सा प्रशिक्षण है जो बिना पैसों के फ्री में करवाया जा रहा है ? इसकी क्या गारंटी है कि यह लोग सही लोग हैं और हमारी लड़की किसी गलत जगह या गलत हाथों में तो नहीं जा रही है ? मां बाप की चिंता अपनी जगह बिलकुल सही थी। आखिर लड़की की सुरक्षा के बारे में पूरी जानकारी तो होनी ही चाहिए। पहले तो हर शंकित मां बाप की तरह उन्होंने भी मना कर दिया कि क्या करेगी ? कैसे करेगी ? कहां जायेगी ? किसके साथ जायेगी ? पर कविता की जिद और उसकी आंखों में तैरते सपनों को पढ़कर उन लोगों ने उसे प्रशिक्षण के लिए होने वाले साक्षात्कार में बैठने की इजाजत दे दी। कविता ने खुश होकर साक्षात्कार दिया और वह पास भी हो गई।

कविता ने कभी स्वयंसेवी संस्थाओं और सामाजिक कामों के बारे में नहीं सुना था। वह एक दुर्गम क्षेत्र से आती है पर उसकी सहेलियों ने एक दूसरे की हिम्मत पर यह चुनौती स्वीकार की। गांव में जमीन भी कोई बहुत ज्यादा नहीं है। परिवार के पास जो थोड़ी बहुत खेती है उससे गेंहूं, मसाले, हल्दी आदि उगा लेते हैं। परिवार के पास एक भैंस है। खेती बाड़ी से मुश्किल से दो तीन महीने का राशन भी नहीं निकल पाता है। पूरे परिवार को अपनी जरूरतों को बाजार से ही पूरा करना पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य है। परिवार के पास आम पहाड़ी परिवारों की तरह बहुत ही कम अवसर हैं जिनसे वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकें। यह पहला मौका था जब कविता अपने घर और गांव से बाहर निकली। वह बहुत नर्वस थी। उसके मन में एक ही बात थी कि पहली बार घर से बाहर जाना है वह भी इतनी दूर फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। वह बताती है कि उसने एक बात तो मन में ठान ली थी कि यदि आज मेरे चेहरे पर माता पिता ने डर देखा तो मेरा डर उनको

और डरा देगा इसलिए अपने डर को छिपाकर ही मेरे को नया रास्ता मिलेगा। कविता के क्षेत्र से चार लड़कियों ने प्रशिक्षण लिया। कविता बताती है कि हम चार लड़कियां डरते डरते 23 जून 2014 को देहरादून पहुंची।

प्रशिक्षण के शुरूआती दिन बहुत कठिन थे। हमें कुछ भी समझ नहीं आता था कि यह क्या पढ़ा रहे हैं? हमें थोड़ा वक्त लगा सब कुछ समझने में गांव की लड़कियां तो शहरों में आकर वैसे ही चकरा जाती हैं। प्रशिक्षकों ने हमारा हौसला बढ़ाया और धीरे धीरे सब सामान्य हो गया। प्रशिक्षण के दौरान हमें खून के नमूने लेना, ब्लॅड प्रैशर नापना, सिरिंज भरना, स्टेथिस्कोप का प्रयोग करना जैसी बहुत सी चीजें सिखाई। पहले दिन तो बहुत अजीब लगा कि हम यह क्या पढ़ रहे हैं और किस लाईन पर जा रहे हैं। हमें तो ढंग से हिन्दी भी नहीं आती थी और यहां तो सारे शब्द अंग्रेजी के होते है। ऐसी हालत में हमारी प्रशिक्षक मैडम ने हमें विज्ञान की यह सारी कठिन बातें शुरू में हिन्दी में समझाई। हमें घर की बहुत याद आती थी पर फिर मैं यह सोचकर अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करती कि आगे बढ़ने के लिए थोड़ा कष्ट तो सहना ही पड़ेगा।

हमारा प्रशिक्षण खत्म हुआ और हमने अपनी नौकरी के लिए साक्षात्कार दिया। साक्षात्कार के बाद हम 25 लड़कियों को चंडीगढ़ के बालाजी मेडीकेयर सेंटर में नौकरी मिली। जिसमें से सिर्फ चार लड़कियों ने ही काम करना स्वीकारा। बाकी लड़कियों को उत्तराखंड से बाहर जाने की इजाजत उनके घरवालों से नहीं मिली। आज शीला बिष्ट, कविता नेगी और भावना नैलवाल चंडीगढ़ के बाला जी मेडीकेयर प्राइवेट अस्पताल में हास्पिटल असिस्टेंट की तरह काम कर रही हैं। एक अन्य लड़की हेमा को चंडीगढ़ का माहौल अच्छा नहीं लगा और वह काम छोड़कर गांव चली गई।

कविता बताती है कि हम चंडीगढ़ के नाम पर डरे हुए थे। हम किसी तरह जून 2014 में चंडीगढ़ आये। जी.एंड जी. की पायल टंडन मैडम ने हमें अनजान शहर में बहुत सहारा दिया। उन्होंने बहुत हिम्मत बढ़ाई। वह गलती पर समझाती कि डरो मत। तुम पूरी मेहनत और ईमानदारी से काम करो। हमारे को बहुत शर्म लगती थी कि यहां सब ज्यादा पढ़े लिखे व आधुनिक किस्म के लोग हैं। हमें तो इनके जैसे शहरों में रहने, बोलने और काम के तौर तरीके भी पता नहीं है। हमारी तनख्वाह 6500 रू. तय हुई। हमें 4000 रू. ही मिलते हैं। हमसे 2500 रू. आवास, बिजली, पानी आदि के काटे जाते हैं। अभी हमारी तनख्वाह में बढ़ोत्तरी नहीं हुई पर एक बात कहने में हमें संकोच नहीं है कि हमने इस एक साल में बहुत कुछ सीखा। हमने यहां पर डिलीवरी कराना सीखा। हम सीजेरियन में डाक्टर की मदद करते हैं, हमने गर्भपात की प्रक्रिया भी सीख ली है। हम ड्रेसिंग और अन्य चिकित्सीय परीक्षण भी करना सीख चुके हैं।

कविता से यह पूछने पर कि पहाड़ों में बहुत आपदा आती हैं तो क्या तुम उस समय अपने गांवों में चिकित्सीय मदद देने में मददगार हो सकती हो? वह बड़े आत्मविश्वास से कहती है कि हां जी! पर हमें लगता है कि हमें एक महीने के बजाय तीन महीने के प्रशिक्षण करवाने चाहिए क्योंकि हम काम

करते करते सारे कामों को व्यवहारिक तौर पर तो कर लेते हैं पर जब उनकी थ्योरी हमसे कोई पूछता है तो हम चुप हो जाते हैं। किसी काम में सफल होने के लिए हमको थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों आने चाहिए। कविता बताती है कि मैं साधारण परिवार से हूं। पिता की बहुत छोटी नौकरी है। पिता और भाई दोनों के काम में नियमितता नहीं है। परिवार की आर्थिक स्थिति डोलती रहती है। ऐसे में मेरी यह छोटी सी नौकरी परिवार के लिए एक वरदान की तरह आई है। मैं परिवार की मदद करना चाहती हूं। मेरे परिवार ने जितना कष्ट मेरे लिए उठाया है मैं उनकी मददगार बनना चाहती हूं। मेरे परिवार ने मुझ पर भरोसा किया है और मैं उनका भरोसा नहीं तोड़ना चाहती। मेरे माता पिता मुझे टीचर बनाना चाहते थे पर हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह मुझे पढ़ा सकते। अभी बड़ी बहन की शादी नहीं हुई है। हमारा परिवार अब पहले से बेहतर स्थिति में है। मां बाप कहते हैं कि हमें पैसे देने की जरूरत नहीं है अपने पांवों पर खड़े हो जाओ तो यही बहुत है। यह नौकरी करके मुझे पैसे की कीमत पता चल गई है। मैंने मेहनत की कमाई का मोल जान लिया है। अब मैं पैसे या किसी और चीज को बरबाद करने के बारे में सोच भी नहीं सकती हूं।

इस नौकरी में आने के बाद मैं किसी से भी बिना डरे, हिचके और शर्माए हुए बात कर लेती हूं। मैं डाक्टर जी से बात करने में घबराती थी कि कहीं गलत तो नहीं बोल रही हूं। बड़ा अजीब लगता था मुझे यहां पर लेकिन अब तो मैं निडर हो गई हूं। पहले अकेले कहीं जा नहीं सकते थे पर अब घर भी दो बार चली गई हूं पूछते-पूछते। गांव और परिवार वाले तो पहचान ही नहीं पाये मुझे। मैं सच में बहुत बदल गई हूं हर तरह से पर मेरी यह यात्रा अब यहीं खत्म नहीं होगी और मैं ए.एन.एम. का कोर्स करके सरकारी नौकरी करना चाहती हूं। उसमें तनख्वाह भी बहुत अच्छी है और सुरक्षा भी रहती है। प्राईवेट में बहुत डर डर कर काम करना पड़ता है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी चंडीगढ़ देखूंगी और वहां रहूंगी। यहां ना कोई रिश्तेदार है और ना ही कोई जानने वाला पर एक सही मौके ने मेरी तो जिंदगी ही बदल दी। यह भगवान का भेजा सुंदर उपहार है मेरे और मेरे परिवार के लिए। मैं उस उपहार के पीछे छिपे चेहरों की दिल से आभारी हूं जिनके कारण मैं यहां तक पहुंच पाई हूं।

मैं चाहती हूं ऐसे मौके हर उस जरूरतमंद बच्चे को मिलें जो अपने जीवन में कुछ करना चाहता है पर अपनी आर्थिक स्थिति के कारण आगे नहीं ना बढ़ पाते हैं। हमारे जैसे बच्चों को फीस, ड्रैस, किताबें कापी नहीं मिल पाती हैं। ऐसे बच्चों की मदद के लिए सबको आगे आना चाहिए। मैं दिल की गहराईयों से UGVS को धन्यवाद करना चाहती हूं हम जैसे बच्चों की मदद के लिए। हम UGVS को ट्रीट देंगे। थैंक्यू वैरी मच UGVS ! आपने हमारे सपनों को पूरा किया। मैं तो बहुत पिछड़े क्षेत्र से हूं। आपने हमको दुनिया दिखाई कि दुनिया बहुत बड़ी, सुंदर और खूबसूरत है।

मैं यह भी जान पाई कि दुनिया की सरहदें हमारे गांव तक नहीं हैं बल्कि कहीं और आगे भी हैं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं अपने गांव की पगडंडियों से चलकर चंडीगढ़ के राजमार्गों पर भी

बिना गिरे, लड़खड़ाए और मुस्कराकर चल सकूंगी। कविता के बारे में उसकी प्रशिक्षक पायल बताती है कि इसमें बहुत आत्मविश्वास आ गया है। यह अब ना झिझकती है, ना डरती है और ना चुप रहती है। यह एक सकुचाई ही गांव की लड़की की तरह यहां आई थी और आज यह नर्सिंग जानकारियों से लैस एक कुशल नर्सिंग असिस्टेंट बन चुकी है। हमने कविता को जो कुछ सिखाया उसे इसने बहुत प्रेम से सीखा। इसे देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। मैं इनकी एक साल की यात्रा देखकर बहुत ही संतुष्ट हूं। सच में इसकी तो जिंदगी ही बदल गई है।

पायल एक ऐसी प्रशिक्षक है जिसने पूरे साल भर व्यक्तिगत तौर पर बालाजी मेडीकेयर सेंटर में काम करने वाली लड़कियों के काम और व्यक्तिगत जीवन को लगातार फालोअप किया। पायल बताती है कि कई बार इनको घर बुलाया कि यह अपने घरों से बहुत दूर हैं और कहीं यह घर की याद और नये शहर की चकाचौंध में गलत रास्ते पर ना पड़ जायें। यही कारण था मैंने इनके हास्पिटल में आना जाना रखा और तीन महीने तक इनको इनकी डयूटी खत्म होने के बाद अंग्रेजी और अन्य चीजें सिखाई। इनको घर जैसा प्यार देने की कोशिश की। यह ध्यान रखा कि यह क्या कर रही हैं? क्या खा रही हैं? किन लोगों से मिल रही हैं? मैंने इनको घर जैसा प्यार देने की पूरी कोशिश की जो हमारे काम का हिस्सा नहीं था पर पहाड़ की इन भोली भाली लड़कियों के बारे में मुझे यह अपनी नैतिक जिम्मेदारी लगती थी और मैंने वही किया। यह तीनों बहुत अच्छी लड़कियां हैं। इनके व्यक्तित्व में बहुत निखार आया है। हम सब लोग इन तीन सहेलियों कविता नेगी, भावना नैलवाल और शीला बिष्ट के व्यक्तिव में आए आमूल चूल बदलाव से बहुत खुश हैं और उससे भी ज्यादा खुशी इस बात की है कि इन तीनों ने यह तय किया है कि यह ए.एन.एम. का कोर्स करके सरकारी नौकरी में जाने का सपना देखने लगी हैं। यह हमारे संस्थान के सुंदर प्रशिणार्थियों में से एक हैं और हमें इन पर गर्व है!

मैं अपने पांवों पर खड़ी हूं!

किरन बिष्ट 09675115736
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

जिला अल्मोड़ा, ब्लॉक स्यालदे के सडोली गांव की रहने वाली किरन बिष्ट की कहानी बहुत ही सरल है। किरन की कहानी और व्यक्तित्व में गुंथे सत्य पहाड़ों और पहाड़ी महिला के बारे में उस सुखद आश्चर्य की ओर इशारा करते हैं कि उनकी जिंदगी पहाड़ों की ही तरह सख्त और उबड़ खाबड होने के बावजूद भी वह खिली खिली और अलमस्त है। किरन का व्यक्तित्व बहुत ही सुंदर और आकर्षक है। किरन उस खिलखिलाती और छलछलाती नदी की तरह है जो किसी भी हालत में अपना रास्ता पहाड़ों के बीच से निकाल ही लेती है। प्रतिभाशाली किरन और उसके चट्टानी इरादों का रास्ता घर परिवार की परेशानियां और विपरीत परिस्थितियां नहीं रोक सकीं और किरन ने अपनी पूरी ताकत से अपने इरादों के दम पर अपना रास्ता खुद बनाया। वह अपने मार्ग में आने वाली किसी भी तूफानी हवा से डरी नहीं और अंत में उसने वही पाया जो वह चाहती थी। एक कठिन जीवन जीने के बावजूद भी किरन में पहाड़ जैसा सौंदर्यबोध और आत्मविश्वास भरा है, वह पहाड़ों जैसे इरादों वाली जरूर है पर साथ ही बच्चों जैसी बाल सुलभता भी साथ में लिए है। उसमें हरे भरे पेड़ों की जीवंतता है तो उन चहकते पक्षियों जैसी स्वाभाविकता भी है जो हर पल अपने डैने फैलाए उड़ान भरने को तैयार रहते हैं। किरन पहाड़ों के उन बच्चों के लिए एक सुंदर उदारहण है जो अपनी पारिवारिक परिस्थितियों को कभी अपने सपनों पर हावी नहीं होने देते और घर परिवार की जिम्मेदारियां निभाते हुए अपने कैरियर को भी आगे बढ़ाते हैं। कोई किरन से सीखे कि निजी जिंदगी और काम में संतुलन कैसे बिठाया जाता है।

22 साल की किरन का गांव अल्मोड़ा से 12-13 किमी. दूर है। गांव में बिजली और पानी की सुविधा है। गांव में एक प्राईवेट डाक्टर है। गांव वाले जब ज्यादा बीमार होते हैं तभी वह अस्पताल जाते हैं। किरन के परिवार में उसके माता पिता, 5 बहनें और एक छोटा भाई है। उसके पिता गन्ना

विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के तौर पर मेरठ में नौकरी करते थे। पिता अब रिटायर हो चुके हैं। किरन की मां बीमार रहती है। एक बार जानवरों के लिए घास लाते समय उसकी मां गिर पड़ी थी और उसके दोनों हाथों में चोट लगी तब से मां के हाथों में दर्द ही रहता है और वह कोई काम नहीं कर सकती है। किरन के पिता नौकरी के सिलसिले में मेरठ ही रहे। उसकी चारों बहनों ने बी.ए. तक की पढ़ाई पिता के साथ रह कर की। अब सबकी शादी हो चुकी है। किरन की मां अकेली गांव में रहती हैं। मां की तबियत हमेशा खराब रहने के कारण छोटी सी लड़की किरन ने तय किया कि वह मेरठ जाकर पढ़ने के बजाय मां के साथ ही गांव में रहेगी। आखिर मां के साथ भी तो कोई घर में चाहिए था। यह एक कठिन फैसला था पर किरन ने अपनी मां के साथ खेती बाड़ी और पशुओं की देखरेख का काम करना स्वीकार कर उसको निभाया।

किरन बचपन से ही मेधावी छात्रा रही है। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आई और स्कूल के अन्य कामों में भी सक्रिय रही है। किरन ने खेती बाड़ी, पशुओं की जिम्मेदारियों और बीमार मां की देखभाल के साथ अपनी पढ़ाई को जारी रखा। किरन की प्रतिभा का पता इस बात से चलता है कि उसने हाईस्कूल की परीक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चित्रकूट सडोली से 75 प्रतिशत अंकों व इंटर की परीक्षा सन् 2012 में 60 प्रतिशत अंकों के साथ पास की। वह हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आती रही है। उसके टीचर उससे कहते थे कि भविष्य में क्या करोगी? वह जवाब देती थी कि डाक्टर बनूंगी। किरन बताती है कि मैं हमारे स्कूल में सांइस के टीचर नहीं थे इस वजह से उसने सांइस छोड़कर आर्टस के विषय लिये। उसे इस बात का अफसोस है कि वह सांइस नहीं पढ़ पाई है नहीं तो वह बहुत आगे जा सकती थी। पिता के नौकरी में होने और गांव में खेती बाड़ी ठीक ठाक होने से यद्यपि उसने कोई परेशानी तो नहीं देखी पर मां के साथ रहने के फैसले ने मेधावी किरन को उसके उस हक से वंचित रखा जिसकी वह सही मायने में हकदार है। किरन को इस बात का कतई भी मलाल नहीं है कि वह पिताजी के साथ रहकर पढ़ाई नहीं कर रह पाई क्योंकि उसकी स्पष्ट सोच है कि मां तो मां ही होती है उसके साथ रहने से बड़ा ना तो कोई सुख है और ना ही कोई कैरियर होता है। किरन कहती है कि गांव में रहना मेरा अपना फैसला था और मैंने वही किया जो मेरे दिल ने कहा। मैं घर का पूरा काम जानती हूं और पढ़ाई में भी तेज हूं। मेरी मां को मैं थोड़ा सुख दे सकी इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है?

किरन इंटर करने के बाद दो महीने का ब्यूटीशियन कोर्स मेरठ में करके गांव वापस आ गई। वह आस पास के गांवों में अपना मोबाइल ब्यूटी पार्लर चला रही थी कि अचानक उसे जुलाई 2014 में अपने मामा से पता चला कि उनकी बहू पूजा ने किसी जी.एंड जी. संस्थान देहरादून में नर्सिंग असिस्टेंट का फार्म भरा है। उसकी देखादेखी किरन ने भी फार्म भर दिया। मां बाप बहुत नाराज हुए कि कहां जायेगी? कैसे जायेगी? अकेले किसके साथ रहेगी? पूजा ने भी बाद में मना कर दिया। किरन ने बहुत मुश्किल से उनको तैयार किया कि पास के गांव की सुशीला भी साथ जा रही है।

दोनों सुबह 8 बजे अल्मोड़ा से चले और शाम को 6 बजे जी.एंड जी. कार्यालय पहुंचे। बस में अकेले आने में बहुत डर लग रहा था कि पता नहीं कहां पहुंचेगे ? फिर भी हिम्मत कर हम पहुंच ही गये। प्रशिक्षण में पहले बड़ी हिचक हो रही थी पर धीरे धीरे सब सामान्य हो गया। हमें मरीजों की देखभाल जैसी बहुत सी बातें बताई गई और एक माह बाद हम लड़कियां एक दूसरे के भरोसे घर चली गई। हां रास्ते में रात तीन बजे रामनगर में बस बदलनी थी तो बहुत डर लगा फिर भी हमने हिम्मत की। घर पहुंचे तो मां समेत गांव वालों को शंका थी कि पता नहीं क्या कोर्स किया है ? इनको नौकरी मिलेगी भी या नहीं पर एक हफ्ते बाद साक्षात्कार हेतु बुलावा आया। हमने साक्षात्कार दिया और हमें देहरादून की विंडलास फार्मास्यूटिकल कम्पनी में काम मिल गया।

सितम्बर 2014 में नौकरी के पहले दिन किरन को लगा कि मैं यहां इतनी बड़ी फैक्टरी में क्या काम कर सकती हूं ? फिर उसने खुद को खुद ही समझाया कि अरे सब कुछ प्रैक्टिस से ही तो आता है। दो चार दिन में हमने दवाओं की पैकिंग व चैकिंग का काम समझा कि कैसे दवा के रैपर पर बैच नम्बर, एक्सपायरी डेट, एम.आर.पी. और अन्य जानकारियां डाली जाती हैं। हमने यह भी सीखा कि कार्टन में दवा ज्यादा तो पैक नहीं हो रही है। हमें कार्टन में अन्तिम पैकिंग तक का काम सिखाया गया और वह हम अच्छे से सीख गये हैं। पहले महीने की तनख्वाह मिली तो किरन मंदिर गई। कुछ जरूरत की चीजें खरीदी और खुश होकर घर फोन किया। किरन को 6000 रू. तनख्वाह मिलती है तथा ओवर टाईम करके 2600 रू. अतिरिक्त मिलता है। उसका प्रोविडेंट फंड और इंश्योरेंस भी कटता है। यद्यपि उसकी इस नौकरी का उसके परिवार की आर्थिक स्थिति पर कोई बहुत असर नहीं पड़ा फिर भी वह हर दूसरे महीने एक महीने की तनख्वाह घर भेजती है। पैसा मेरे खाते में ही रहता है। मैंने मां को ए.टी.एम. दिया है। मां ने अभी तक कभी पैसा निकाला तो नहीं है पर वह बहुत खुश है कि मेरी बेटी अपने पांवों पर खड़ी है। किरन बी.ए. करना चाहती है। वह कहती है कि मुझे देख गांव वालों को भरोसा हो गया है कि वह अपनी लड़कियों को यहां भेज सकते हैं।

किरन बताती है कि मैं चाहती हूं कि जो लड़कियां गांवों में हैं वह इसी तरह कोर्स करके अपने पांवों पर खड़ी हों। थोड़ा पैसा रहेगा तो उनकी पढ़ाई नहीं छूटेगी। आजकल खेती में कुछ होता नहीं है तो कम से कम मां बाप पर बोझ तो कम होगा। बाहर आकर थोड़ा जानकारियां बढ़ जाती हैं। हमने यहां आकर अंग्रेजी के कुछ अच्छे शब्द सीखे हैं, हमारे बातचीत का लहजा और लिहाज बदला है। रहने और पहनने का सलीका सीखा है। हमारा डर भाग गया है, हम अकेले कहीं भी आ जा सकते हैं। पहले बस में बैठते हुए डर लगता था पर अब अपने पर भरोसा हो गया है। मां बाप हम पर भरोसा करने लगे हैं। किरन कहती है कि अब मैं बहुत बदल गई हूं। घर से आर्थिक रूप से ठीक होने के बाद भी अपने पांवों पर खड़े होने की खुशी किरन के सुंदर चेहरे पर देखते ही बनती है।

किरन बताती है कि दवाओं की पैकिंग का काम करते हुए हमें यह लगता है कि हम एक नेक काम से जुड़े हैं क्योंकि दवाओं से लोगों की जिंदगियां बचती हैं इसलिए हम अपनी साफ सफाई का बहुत

ख्याल रखते हैं। हम कभी नाखून बड़े नहीं रखते और नेल पालिस नहीं लगाते। हमारी कोशिश रहती है कि पैकिंग के समय किसी चीज की गलती ना हो। हमारा पूरा ध्यान पैकिंग में ही रहता है क्योंकि हमारी छोटी सी लापरवाही किसी की जान ले सकती है। वह कहती है कि जब तक मेरी शादी नहीं होती तब तक तो यहां काम करना चाहूंगी पर उसके बाद काम नहीं करना चाहती। मैं अपनी आगे की पढ़ाई करना चाहती हूं। मेरा एक सपना था कि मैं अपने पांवों पर खड़ी हूं जो पूरा हो गया है।

वह संतुष्टि के भाव से कहती है कि मैं बहुत होशियार थी और यदि मैं चाहती तो अपने पिताजी के साथ मेरठ जाकर अपने सपने पूरे करती पर मैंने गांव में बीमार मां के साथ रहना तय किया। अपनी पढ़ाई भी बहुत अच्छे से की और मां और घर की जिम्मेदारियां भी उठाई। मैं इन सबके बीच बहुत खुश थी पर एक बात मन में जरूर आती थी कि मुझे अपने पांवों पर खड़े होना है। आजीविका कार्यक्रम के इस नर्सिंग असिस्टेंट प्रशिक्षण के बाद मिली इस छोटी सी नौकरी ने मेरे अपने पांव पर खड़े होने के सपने को पूरा करने की शुरूआत कर दी है। अब मेरे पिता रिटायर हो गये हैं वह मां के साथ रहते हैं तो मैं अब अपने कैरियर पर पूरा ध्यान दे रही हूं। मेरी शुरूआत कराने वाले सभी लोगों की मैं आभारी हूं।

मेरी तो दुनिया ही बदल गई!

ममता मनराल 08650405033
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में मसूरी डायर्वजन रोड़ पर स्थित मैक्स सुपर स्पैशियलिटी अस्पताल का रिसेप्शन हॉल 1 जून 2006 को मरीजों एवं उनके तीमारदारों से खचाखच भरा था। डाक्टर, नर्स, हास्पिटल स्टाफ और मरीजों की उस भीड़ के बीच में हास्पिटल में काम करने वाली 20 साल की एक छोटे कद काठी की दुबली पतली लेकिन सौम्य नर्सिंग असिस्टेंट आत्मविश्वास से नीची निगाहों से सीढ़ियां उतर रही थी। वह लड़की नर्सिंग ड्रैस में थी। उसने अपने लम्बे बालों का बहुत सलीके से जूड़ा बनाया हुआ था। उसका अपने आप में खामोशी से चलना और भाव प्रवण चेहरा अस्पलाल के लॉउंज में बैठे किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करने को काफी था। अस्पताल की बोलते चेहरे व शरारती आंखों वाली यह नर्सिंग असिस्टेंट अल्मोड़ा जिले के सल्ट ब्लॉक के सैंणामानुर गांव की रहने वाली ममता मनराल है। ममता के हर कदम के साथ उसके चेहरे के बदलते हाव भाव और शारीरिक भाषा सुदूर केरल की किसी समर्पित नर्स की याद दिलाती है जिनके लिए सेवा ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। ममता के व्यक्तित्व में 8 महीने में ही आई सौम्यता, गंभीरता और बदलाव को देखकर उसके प्रशिक्षक भी भौंचक्के रह गये।

यह हैरानी की बात है कि जिस लड़की ने अपने जीवन के 19 बसंत गांव की सीमा में निकाले हों और जिसे गांव के बाहर की दुनिया का कुछ पता न हो। जो बात बात पर डरती हो और झिझकती हो उसका इतना कायाकल्प कैसे हुआ? यह जानने के लिए ममता की कहानी गौर से सुननी होगी जिसकी आंखों में एक निर्दोष सच्चाई और गहराई छिपी है। ममता बहुत हाजिर जवाब, भोली भाली, आकर्षक मगर होशियार लड़की है। ममता के गांव में कक्षा 8 तक का स्कूल है। गांव से राजकीय इंटर कालेज क्वेरला 2 किमी. दूर है। उसने वहीं से 10 वीं 59% और 12 वीं विज्ञान

विषयों में 70% अंकों के साथ पास की है। ममता की यह उपलब्धियां सिर्फ पढ़ते लिखते हुए नहीं हैं। वह अपनी पढ़ाई करने के लिए रोज 2 किमी. पैदल आती जाती थी। घर के काम काज में मां का हाथ बंटाती, खेती बाड़ी करती और साथ ही पशुओं के देखभाल की जिम्मेदारी भी उठाती थी। सिर्फ 10 साल की उम्र में ही ममता के सिर से पिता का साया उठ गया था। खेती बाड़ी इतनी नहीं थी कि परिवार का राशन निकल सकता। परिवार में रोजगार का कोई साधन नहीं था। ऐसे में ममता की मां ने मेहनत मजदूरी कर बच्चों को पाला पोसा और पढ़ाया। ममता का परिवार एक भैंस भी पालता है और उसका दूध परिवार के रोजगार का एक साधन है। ऐसी कठिन परिस्थिति में एक विधवा औरत के लिए 4 बच्चों को पालना कोई आसान काम नहीं है। ममता के चार भाई और बहन हैं। ममता अपने भाई बहनों में दूसरे नंबर की है। मां ने बहुत मेहनत की और बच्चों को पाला पोसा। ममता ने बड़ी बहन होने का फर्ज निभाकर घर के कामों में मां का हाथ बंटाने के साथ साथ भाई बहनों की जिम्मेदारी भी छोटी उम्र से उठाई। ममता बताती है कि पिता तो नहीं थे पर मां ने हमें कभी किसी तरह से लाचारगी महसूस नहीं होने दी। वह अपना हाड़ मांस जलाती रही पर अपने आप मुंह से कभी कुछ नहीं कहा। ममता बहुत होशियार छात्रा है। वह बी.एस.सी. करना चाहती थी पर घर के हालतों में वह अपनी बात कह भी नहीं सकती थी। उसने अपने हालतों से समझौता किया और घर के काम काज में मां का हाथ बंटाती रही। इस बीच भाई एक प्राइवेट नौकरी करने दिल्ली चला गया।

जून 2014 की एक दोपहरी ममता के जीवन में एक नया मोड़ लेकर आई। ममता को अपने ही गांव की एक सहेली गायत्री से पता चला कि देहरादून में जी.एंड जी. नामक एक संस्था में 12वीं पास लड़कियों के लिए नर्सिंग प्रशिक्षण के फार्म निकले हैं। वहां पर एक माह का प्रशिक्षण करने के बाद बच्चों को नौकरी भी मिलेगी। यह प्रशिक्षण फ्री में होगा। ममता कभी घर से बाहर तो गई नहीं थी। देहरादून का तो सिर्फ नाम ही सुना था। कभी बसों में भी बैठने का मौका भी हाथ नहीं लगा था पर घर की हालतों ने उसे मां से बात करने की हिम्मत दी। मां ने ममता की सहेली के सहारे फार्म भरने को हां कर दी। दोनों सहेलियां चयनित भी हो गई और अगस्त 2014 में वह दोनों गांव के एक व्यक्ति के साथ देहरादून आ गईं। उनको उस व्यक्ति ने ही प्रशिक्षण वाली जगह पर छोड़ दिया था। ममता को वह व्यक्ति उस समय उसके अनजाने भय से लड़ने के लिए एक दैवीय सहारा सा लगा। ममता को साक्षात्कार के समय बताया गया था कि उनको इस प्रशिक्षण में चिकित्सा विज्ञान और बीमारों की सेवा आदि के बारे में बताया जाएगा।

ममता सांइस से पढ़ी थी इसलिए वह ब्लेंड प्रैशर चैक करना, खून के नमूने लेना, बुखार नापना जैसे काम आसानी से समझ गई। उसे मानव शरीर और उसमें काम करने वाले सभी तंत्रों की पहले से ही जानकारी थी इसलिए जब कोई लड़की परेशान होती तो वह उनको समझाती और पूरी कोशिश करती कि वह इन विषयों को समझ सके। ममता बड़े स्नेह और भोलेपन से कहती है कि दुनिया में

ऐसा कोई नहीं होता कि जिसके अंदर कुव्वत नहीं होती। सबके अंदर क्षमताएं होती हैं और सब सीख जाते हैं कोशिश करके। हमें विज्ञान के हर अंग्रेजी शब्द को हिंदी में बताया जाता। इससे बड़ी सहूलियत होती थी। बस इस तरह से हमारा प्रशिक्षण निपट गया। प्रशिक्षण खत्म होने के साथ घर से निकलने का जो डर था वह भी धीरे धीरे खत्म हो गया। अपने पर भरोसा हो गया था। ममता अपनी ट्रेनिंग पूरी करके इस उम्मीद में घर चली गई कि एक दिन उसको भी नौकरी करने का मौका मिलेगा।

अक्टूबर 2014 में ममता की खुशी का ठिकाना ना रहा जब जी.एंड जी. संस्थान ने उसे साक्षात्कार के लिए मैक्स अस्पताल देहरादून में बुलाया। ममता ने साक्षात्कार दिया और वह चयनित हो गई। ममता अपनी सहेली गायत्री के साथ आई थी। गायत्री को स्थानीय विंडलास फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रीज में नौकरी मिली और वह आज भी वहीं पर काम कर रही है। जब कभी मौका मिलता है तो यह दोनों आपस में मिलकर अपना सुख दुख बांट लेती हैं। एक भरोसा रहता है कि हां हमारा कोई अपना इस बड़े शहर में है। ममता ने नौकरी की खबर मां और बड़े भाई को फोन पर सुनाई। दोनों ने उसे ईमानदारी और मेहनत से नौकरी करने की नसीहत दी। ममता बताती है कि जब पहली बार मैक्स अस्पताल देहरादून में आई थी तो उसे समझ ही नहीं आया कि यह होटल है या मकान या अस्पताल। उसने तो अपने गांव से बाहर कहीं देखा ही नहीं था। वह अस्पताल देखकर भौंचक्की रह गई। चारों ओर गाड़ियां ही गाड़ियां और भीड़ ही भीड़ थी। पहली बार लिफ्ट को नीचे ऊपर आते देखना उसके लिए कौतहुल सा था कि आखिर यह क्या है? इस अनजान शहर में अनजान लोगों के बीच, अनजनाने माहौल में, सब कुछ बदला बदला सा नजर आ रहा था। वह सोच रही थी कि वह यहां कहां आ गई?

वह पहले दिन ना किसी को जानती थी, ना पहचानती थी। वह डर रही थी कि वह इस भूल भुलैया में कहीं खो ना जाये। ममता बताती है कि वह शुरू में हताश हो गई थी पर उसके दिमाग में एक ही बात थी कि मेरा मां ने हमें बहुत मुश्किल से पाला है। अब चाहे जो भी हो जाए मुझे ना तो हिम्मत हारनी है और ना डरना है। मुझे भगवान ने एक मौका दिया है कुछ करने का इसलिए अब मुझे अपनी मां का सहारा बनना ही है। ममता ने चुपचाप काम करना शुरू किया। उसने लोगों को देखा, सुना और काम की बारीकियां समझनी शुरू कीं। उसने मरीजों की देखभाल का काम शुरू किया। वह बताती है कि अस्पताल के लोग बहुत भले हैं और उन्होंने ही काम सिखाया। हमारे सुपरवाईजर बहुत नेक आदमी हैं। जब भी मुझसे कुछ गलती हो जाती थी और मरीज गुस्सा करने लगते तो वह मेरी तरफ से माफी मांगकर बीच बचाव करते। उन्होंने मुझे सारा काम भी सिखाया। अब मैं नर्सिंग असिस्टेंट का सारा काम जानती हूं और अकेले बिना किसी डर के सब कर लेती हूं। मैं ड्रैसिंग, ई. सी. जी., खून का सैम्पल, शूगर व ब्लैंड प्रैशर चैक करना आदि अच्छे से कर लेती हूं,। मैंने यहां बहुत कुछ सीखा है पर जो सबसे बड़ी बात मैंने सीखी है कि मेरे अंदर एक अनजाना सेवा भाव

मरीजों के प्रति आ गया है। मेरे सीनियर और मरीज मेरे व्यवहार और काम से खुश हैं। मेरे को शुरू में 5600 रू. तनख्वाह मिली और अब भी वह पैसा मिलता है। हां हमारा प्रोविडेंट फंड एवं इंश्योरेंस भी कटता है। मैं अस्पताल में ओवर टाईम भी करती हूं। सब करके मुझे लगभग 8000 रू. हाथ में मिल जाता है। ममता ने अस्पताल से ही कुछ किमी. की दूरी पर अपनी किसी सहेली के साथ मिलकर कमरा लिया है। एक साथ रहने से उनका खर्चा भी बंट जाता है। ममता बताती है कि वह अपनी सारी जरूरतें पूरी करने के बाद 2000 रू. प्रतिमाह बचा लेती है और हर महीने 1000 रू. मां के लिए भेजती है।

नौकरी पर आने के 8 माह बाद ममता के अंदर आये आत्मविश्वास को उसके काम करने व बात करने के अंदाज से महसूस किया जा सकता है। ममता बहुत बदल गई है पर एक चीज जो नहीं बदली है वह है ममता के चेहरे की सौम्यता! नर्सिंग सेवा क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के चेहरे पर जो आभा और लावण्य बहुत साल काम करने के बाद आता है वह आज ममता के चेहरे पर साफ साफ पढ़ा जा सकता है। ममता बताती है कि उसे पहले बस, टैम्पो और गाड़ियों का कुछ भी पता नहीं था पर अब तो वह कहीं भी चली जाती है। मैं 4-5 बार अपने गांव भी गई हूं। पहली बार तो जाते समय बहुत डर लग रहा था पर अब तो मैं सबको कहीं भी घुमा सकती हूं।

नौकरी के बाद ममता ने मां से पूछा था कि तेरे लिए क्या लाना है? एक गंभीर व्यक्तित्व वाली मां ने जिसने सारा जीवन मेहनत करके बच्चों को अपने पांवों पर खड़ा होना सिखाया उसने उतनी ही गंभीरता से कहा कि बस तू आ जा! पैसा फालतू खर्च नहीं करते हैं। हमें जैसी जरूरत होगी वैसा समय आने पर खरीद लेंगे। ममता ने भी मां की बात मानी और थोड़े फल ले जाकर अपने सिर के साथ मां की गोद में रख दिये। मां ममता की समझदारी और अपने पांवों पर खड़े होने की खुशी में रोती रही। यह आंसू खुशी के थे और उस बेटी के उन सपनों के लिए थे जो उसने ममता के लिए देखे थे। यह उसकी मूक अभिव्यक्ति थी...।

ममता बहुत मेधावी है। यदि उसे मौका मिलता तो वह बहुत आगे बढ़ती लेकिन ममता को किसी से कोई शिकायत नहीं है। वह इस बात से खुश है कि वह अपने पांवों पर खड़ी है और उसकी देखा देखी बहुत सी लड़कियां मौका मिलने पर बाहर निकल कर आयेंगी। ममता कहती है कि मेरी मां सबसे ज्यादा खुश है कि मेरी बेटी आगे बढ़ रही है। ममता के प्रशिक्षक उत्तम रावत बताते हैं कि ममता पहले से बहुत बदल चुकी है। वह बहुत हिचकती थी, डरती थी, बात करने से घबराती थी, हम पर विश्वास नहीं था उसे पर। अब वह बिलुकल बदल चुकी है। यह आज आत्मविश्वास से भरी नजर आती है। मैक्स जैसे बड़े अस्पताल में सिर्फ एक महीने के ट्रेनिंग के बाद काम करना और वहां पर अपनी जगह बनाना अपने आप में एक चुनौती है। ममता ने वह चुनौती ना केवल स्वीकारी बल्कि उसे बड़ी सुंदरता से निभाया भी है। ममता जिस तरह से आगे बढ़ी है उसे देखकर हमें उस पर गर्व है। जी.एंड जी. संस्थान से लगभग 85 बच्चों ने नर्सिंग एंड हास्पिटेलिटी में प्रशिक्षण लिया है।

वह बताते हैं कि सभी बच्चे दूर दराज के पहाड़ी इलाकों से आते हैं। वह एकदम आम पहाड़ी लोगों की तरह दुनिया की चकाचौंध से अनजान होते हैं। वह झिझक भरे होते हैं। अब ज्यादातर बच्चे अलग अलग संस्थानों में काम कर रहे हैं। उनके पूरे व्यक्तित्व में बड़ा बदलाव हमने महसूस किया है। वास्तव में हमारे पहाड़ के बच्चों में बहुत प्रतिभा है पर उस प्रतिभा को निखारना भी अपने आप में एक बड़ी तपस्या है। हम लोग कोशिश करते हैं कि इन बच्चों की असली प्रतिभा को बाहर निकाल सकें।

ममता नौकरी के साथ अपनी पढ़ाई पूरा करना चाहती है। उसे बहुत मलाल है कि वह बी.एस.सी. नहीं कर सकी। उसने फिर भी एक नया रास्ता निकाल लिया और एम.के.पी. कालेज में बी.कॉम में एडमीशन ले लिया। वह बी. काम करके एकांउटस के क्षेत्र में जाना चाहती है। वह चाहती है कि यदि संभव हुआ तो मैं ए.एन.एम. या जी.एन.एम. का कोर्स करूंगी। कोर्स के लिए ममता को नौकरी छोड़नी पड़ती और पैसे भी जुटाने पड़ते पर वह नौकरी नहीं छोड़ सकती थी इसलिए उसने कामर्स क्षेत्र में ही आगे बढ़ना तय किया। ममता बिना संकोच के कहती है कि पैसा हमारे लिए बहुत बड़ी जरूरत है। मैं जो कुछ निर्णय लूंगी उसके आगे पीछे अपने भाई, बहनों और मां को रखकर ही लूंगी। ममता बड़ी शालीनता से कहती है कि मुझे नहीं पता था कि मेरी दुनिया ही बदल जायेगी। जिसने भी हमें गांव से बाहर लाने और रोजगार दिलाने में मदद की उसे हमने देखा तो नहीं है पर उसकी सोच के प्रति मैं ही नहीं सारे बच्चे आभारी हैं। हम तो गांव में ही रहते थे और हमें कुछ पता ही नहीं था कि कहां क्या हो रहा है। दुनिया कहां से कहां पहुंच चुकी है मुझे इसका भी आभास नहीं था। यह सब इतना अचानक ही हुआ कि कुछ समझ ही नहीं आया। इसका श्रेय वह उन अनजान हाथों को देती है जो गांव वालों के लिए ऐसी सुंदर योजनाएं बनाते हैं। यह तो यहीं आकर पता चला कि दुनिया में क्या अच्छा और क्या बुरा है? सची में मुझे तो पता ही नहीं चला कि कब और कैसे अचानक मेरी जिंदगी बदल गई है।

हमारी एक ही कहानी लिखो!

सरस्वती मनराल 08954232830, गायत्री मनराल 09719874547
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

हम दोनों सहेलियां एक सा काम करती हैं, एक ही कमरे में रहती हैं, एक जैसा सोचती हैं, एक साथ हमने प्रशिक्षण लिया और अब एक साथ नौकरी कर रही हैं तो क्या हमारी एक ही कहानी नहीं हो सकती। ये शब्द है ग्राम बुंगा, ब्लॉक सल्ट, जिला अल्मोड़ा की सरस्वती मनराल के जो वर्तमान में देहरादून की कम्पनी विंडलास फार्मास्यूटिकल कम्पनी में काम करती हैं। सरस्वती के ये उद्‌गार अपनी पक्की सहेली गायत्री मनराल के बारे में हैं। बहुत कोशिश करने पर भी दोनों की एक ही जिद थी कि कुछ भी हो हमारी कहानी एक ही होनी चाहिए नहीं तो हम अपने बारे में बात नहीं करेंगे इसलिए सरस्वती और गायत्री दोनों की एक ही कहानी एक साथ लिखी जा रही है। सरस्वती अल्मोड़ा जिले के सल्ट ब्लॉक के मनीला क्षेत्र के बुंगा गांव की रहने वाली है। सरस्वती के गांव बुंगा तक पहुंचने में अल्मोड़ा से बस से लगभग 6 घंटे लगते हैं। 21 साल की सरस्वती छोटे कद काठी की कम बोलने वाली, शर्मीली और देखने में सुंदर किशोरी है। पहली ही नजर में सरस्वती आत्मविश्वास से भरी एक समझदार लड़की लगती है जिसे पारिवारिक परिस्थितियों ने वक्त से पहले ही समझदार और परिपक्व बना दिया है।

सरस्वती के परिवार में उसके माता पिता, दादी, दो बड़े भाई और एक बड़ी बहन है। परिवार पारंपरिक तौर पर खेती बाड़ी करता है। गांव की खेती बारिश पर निर्भर होने के कारण बहुत उत्पादक नहीं है। परिवार का रोजगार पिता की टेलरिंग व्यवसाय से चलता है। परिवार की खाद्य सुरक्षा कंट्रोल की दुकानों से ही है। सरस्वती की बड़ी बहन की शादी हो चुकी है। एक भाई दिल्ली में प्राईवेट नौकरी करता है। सरस्वती ने राजकीय इंटर कालेज मनीला से इंटर की परीक्षा पास की। हाईस्कूल और इंटर में उसकी द्वितीय श्रेणी थी। वह प्राईवेट बी.ए. भी कर रही है। सरस्वती का

सपना है कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करे पर घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उसे प्राईवेट ही पढ़ना पढ़ रहा है। वह अपनी पढ़ाई के साथ खेती बाड़ी, पशुओं की जिम्मेदारी और घर का हर काम खुशी खुशी करती है। सरस्वती को जुलाई 2014 में गांव के किसी रिश्तेदार से पता चला कि देहरादून का जी.एंड जी. संस्थान ILSP कार्यक्रम के साथ मिलकर नर्सिंग असिस्टेंट का प्रशिक्षण कराना चाहता है। इस प्रशिक्षण में 12वीं पास बच्चे दाखिला ले सकते हैं। यह प्रशिक्षण एक माह का होगा। इस प्रशिक्षण की जिस बात ने सरस्वती को आकर्षित किया वह थी कि फीस, खाने पीने व रहने का खर्चा भी संस्थान के लोग ही उठाएंगे। सरस्वती को यह बात पता थी कि उसके गांव की एक लड़की कविता नेगी ने भी इसी तरह का प्रशिक्षण पहले बैच में लिया था। कविता आजकल चंडीगढ़ के किसी अस्पताल में काम करती है इसलिए सरस्वती को अपने मां बाप को यह बात समझाने में बहुत मुश्किल नहीं हुई कि वह क्या करना चाहती है।

गांव की ही लड़की कविता के नौकरी करने के कारण मां बाप को भरोसा हो गया था। सरस्वती ने प्रशिक्षण के लिए फार्म भरा और वह चयनित हो गई। उसने देहरादून में एक माह का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के दिन उसके लिए कठिन थे। गांव से पहली बार वह बाहर आई थी। एक डर, हिचक और अनजाना माहौल उसकी शुरूआती चिंता का कारण थे पर बाद में प्रशिक्षण में अन्य लड़कियों के साथ वह सामान्य हो गई। सरस्वती बताती है कि प्रशिक्षण में उन्हें शरीर विज्ञान और रोगों के बारे में बताया गया। हमें यह भी बताया गया कि कैसे रोगियों की देखभाल की जाती है। हमें यह भी सिखाया गया कि बुखार कैसे नापते हैं? ब्लॅड प्रैशर देखना और छोटी मोटी दवाईयों के बारे में जानकारी दी गई। मुझे घबराहट होती थी और कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि ये अंग्रेजी में क्या बोल रहे हैं पर बाद में सब सामान्य होता गया। इस तरह हमारा प्रशिक्षण पूरा हो गया और हम घर आ गये।

सितम्बर माह में हमें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। मैंने इंटरव्यू दिया और मैं पास हो गई। सरस्वती बताती है कि माह सितम्बर 2014 से मुझे अपनी दो सहेलियों किरन बिष्ट और गायत्री मनराल के साथ देहरादून की विंडलास फार्मास्यूटिकल में काम मिल गया। तब से हम सब वहीं पर काम कर रहे हैं। सरस्वती को शुरू में 5800 रू. मिले पर आज वह ओवर टाईम मिलाकर कुल रू. 8800 कमा लेती है। उसका इंश्योरेंस व प्रोविडेंट फंड का पैसा भी कटता है। यहां पर सरस्वती के काम की जिम्मेदारी दवा की टैबलेटस की पैकिंग व चैकिंग आदि का काम करना है। अपने काम को सरस्वती बहुत अच्छे से कर रही है। वह कहती है कि हम लोग अपने काम में पूरी सावधानी बरतते हैं क्योंकि यहां पर आकर हमें यह समझ आ गया है कि जिन दवाओं को हम लोग अपने गांवों में खाते हैं वह ऐसे ही हमारे जैसी लड़कियां ही पैक करती हैं। यदि हमसे पैकिंग और चैकिंग में किसी तरह की छोटी सी भी गलती हुई तो किसी की जान को खतरा हो सकता है। हम कभी अपने नाखून नहीं बढ़ाते और ना ही नाखून पालिस लगाते हैं। हमें पैकिंग के समय अपनी ड्रैस बदलनी

होती है। यहां आकर एक जिम्मेदारी का भाव आया है और यह भी समझ आया है कि भले ही हमारी नौकरी छोटी है पर हमारा काम बहुत बड़ा है और यह दवा का क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। मेरी कोशिश रहती है कि मैं पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी से अपना काम समय पर करूं। अब इतने समय काम करके मेरा खुद पर भरोसा बढ़ गया है। मेरी कई तरह की जानकारियों का स्तर भी बढ़ा है और लोगों से जान पहचान भी हो गई है।

सरस्वती बताती है कि नौकरी पर आने के बाद मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। मेरे घर वालों की इससे मदद हो रही है। मैं हर दूसरे महीने एक महीने की तनख्वाह घर भेज रही हूं। मेरे पिता को इससे सहारा मिला है। मेरे मां पिता बहुत खुश हैं। गांव में भी हमारी स्थिति अब मजबूत हुई है। सब लोग हमको अब इज्जत से देखते हैं कि इनकी लड़की काम कर रही है। मैं अपने पांवों पर खड़े होकर खुश हूं पर लम्बे दौर तक यह काम नहीं करना चाहती क्योंकि देहरादून हमारे गांव से बहुत दूर है। यहां पर हमें बहुत समय देना होता है जिस कारण हम कुछ और काम नहीं सीख पा रहे हैं। मैं ब्यूटी पार्लर का कोर्स करना चाहती हूं। अभी कुछ समय बाद मैं वह कोर्स करूंगी। अभी मेरे हाथ में थोड़ा पैसा आ गया है। यह काम सीखने के बाद मैं अपने क्षेत्र में ही अपना ब्यूटी पार्लर चलाने की योजना बना रही हूं। अपने ही गांव में पार्लर खोलकर मैं कई गांवों में काम करने जा सकती हूं। मेरा यह व्यवसाय धीरे धीरे फैल जायेगा पर अभी मेरे हाथ में पैसा नहीं है। नौकरी करके थोड़ा पैसा आ जाने के बाद ही मैं कोर्स कर पाऊंगी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे फैक्टरी में जॉब मिलेगी। यह सब बहुत अचानक हुआ और मेरे अच्छे के लिए हुआ है। हमने कभी इतनी बड़ी फैक्टरी का अनुभव कैसे लेना था?

यह जॉब मिलने के बाद मेरे घर की आर्थिक स्थिति में बदलाव आया। मैंने सीखा कि नौकरी के मायने क्या होते हैं और नौकरी कैसे की जा सकती है? यह भी सीखा कि समाज में उठने बैठने का क्या सलीका होता है और काम कैसे किया जाता है? पहले मैं बहुत डरती थी, हिचकती थी पर अब मेरे अंदर का डर धीरे धीरे खत्म हो रहा है और मैं लोगों के साथ बिना संकोच के बात कर लेती हूं। अकेले गांव से आ जा सकती हूं। देहरादून जैसे शहर का भी मुझे अंदाजा हो गया है। कुल मिलाकर मैं अपने बदले हालतों से संतुष्ट हूं। मैं आगे बढ़ना चाहती हूं और उसके लिए कोशिश करती रहूंगी। यह बोलकर वह चुप हो गई कि अब मेरे ही साथ गायत्री की कहानी भी लिखो!

सरस्वती की सहेली गायत्री मनराल मनीला गांव की है। वह दोनों साथ साथ एक ही कमरे में रहते हैं और विंडलास फार्मास्यूटिकल में नौकरी करते हैं। वह कुछ ज्यादा बात करने के मूड में नहीं थी। उसने भी सरस्वती की ही तरह जी. एंड जी. संस्थान से नर्सिंग असिस्टेंट का कोर्स किया और सितम्बर माह से वह विंडलास फार्मास्यूटिकल कम्पनी देहरादून में काम कर रही है। उसके साथ उसकी सहेलियां किरन बिष्ट व सरस्वती काम करती हैं और वह तीनों एक ही कमरे में रहती हैं।

वह अपनी इस छोटी सी नौकरी से बहुत खुश है। उसे यह नौकरी पाकर अच्छा लगता है कि वह

अपने पांव पर खड़ी हो गई है। उसे भी सरस्वती के बराबर ही पैसा मिलता है। वह हर महीने 2-3 हजार रूपये गांव भेज देती है। वह भी बी.ए. पास है और नौकरी करते हुए एम.ए. करना उसका सपना है। नौकरी करते हुए वह सिलाई का कोर्स भी करना चाहती है। उसकी सोच है कि कपड़े पहनना इंसान की बुनियादी जरूरत है इसलिए इस काम को वह अपने घर से भी कर सकती है। यह अपने हाथ का काम है और इसके लिए मुझे कहीं और नहीं जाना पड़ेगा और ना ही किसी से काम मांगना पड़ेगा। मैं एक दिन अच्छे से सिलाई सीखकर अपनी दुकान खोलूंगी।

वह बताती है कि नौकरी करते हुए मुझे घर से बाहर रहने का मौका मिला। इस काम ने दो पैसे मेरे हाथ में रखे और मुझे अपने पर भरोसा करना सिखाया। अब बाहर रहने की तहजीब भी सीख रही हूं और इतनी बात समझ आ गई कि दुनिया में कैसे जिया जाता है। मैं इस लाइन में अपने आगे का कोई भविष्य नहीं देख रही हूं इसलिए मैं सिलाई का काम सीखकर अपनी दुकान चलाना ही उचित समझती हूं। मैं अपने ही गांव में रहना चाहती हूं। अपने घर और अपने लोगों के साथ से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं होता है। हां मैंने जीवन में कभी सोचा भी नहीं था कि मैं देहरादून में रहूंगी। यहां आकर अपने पर भरोसा हुआ है। थोड़ा दुनियादारी का अनुभव भी हो गया है।

हमने तय किया है कि थोड़ा पैसा और अनुभव होने के बाद हम दोनों सहेलियां अपना अपना काम अपने ही गांव में करेंगी। हमारी उम्मीद है कि ILSP परियोजना आने वाले समय में हमें एक महीने के बजाय थोड़ा ज्यादा दिन का प्रशिक्षण देगी जिससे हम जो भी सीखें वह ढंग से सीखें और हमें काम सीखकर अच्छा पैसा मिल सके। हां मेरे मन में एक विचार और आता है कि यदि मेरे पास कुछ पैसा किसी तरह आ जाए तो मैं ए.एन.एम. का कोर्स करना चाहती हूं। अपने पांव पर खड़े होना किसे अच्छा नहीं लगता है। अब मैं इतने छोटे से काम में इतनी छोटी सी नौकरी पर हूं फिर भी मेरे परिवार और गांव में मेरी इज्जत बढ़ गई है। यह कहकर वह चुप हो गई कि मेरी बाकी की कहानी तो सरस्वती ने बता ही दी है क्योंकि हम दोनों का सफर एक सा है। मेरी इच्छा है कि आप हमारी फोटो भी एक ही साथ खींचो!

मेरी बेटी समझदार हो गई है

शीला बिष्ट 7508351360
(हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम असिस्टेंट प्रशिक्षण)

हां! मेरी बेटी शीला बहुत समझदार हो गई है। वह बहुत बदल भी गई है। शीला को बोलते, ओढ़ते-पहनते, खाते पीते और काम करते एकटक देखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। वह अपनी मेहनत की कमाई से हम सबके लिए मिठाई खटाई लाई। मैं तो उसे पहचान भी नहीं सकी कि यह मेरी वही शीला है जो शर्म, डर और हिचक से किसी से आंख नहीं मिलाती थी। किसी से कुछ बोलना तो दूर वह किसी के सामने जाने से भी कतराती थी। अब यह कितनी बदल गई है, उसे बार बार देखकर भी मेरा मन नहीं भरता। शीला एक साल में इतनी सलीकेदार, समझदार और निडर हो जायेगी यह तो मैंने क्या पूरे गांव में किसी ने भी नहीं सोचा था। मेरी दुबली पतली शीला अब सुंदर भी लगने लगी है। उसका बदन भर गया है वह खुशी से मोटी हो गई है और अब उसको देखकर मेरी सारी चिंताए खत्म हो गई हैं और मैं भी उसकी खुशी में खुश होकर एक रोटी और खाकर मोटी हो जाऊंगी।

भला हो उस संस्था का जिसने मेरी बेटी की किस्मत बदल दी। मेरे मन में एक बात है कि जिसने मेरी शीला की नई तस्वीर बनाई वह क्या हमारे गांव की और शीलाओं की तकदीर नहीं लिख सकता। हमारे पास आगे बढ़ने के मौके नहीं है और ना ही इतने पैसे कि अपने बच्चों को लायक बना सकें। ऐसे बच्चों को जिनका कोई मददगार नहीं हैं उनको भी पढ़ा लिखाकर कोई रोजगार दे सके तो बहुत अच्छी बात होगी! ये दिल को छूने वाले शब्द एक ऐसी मां के हैं । जिसने कभी अल्मोड़ा के मनीला क्षेत्र से बाहर की दुनिया नहीं देखी है। उस मां ने दुनिया में आये बदलावों को अपनी बेटी शीला के द्वारा महसूस किया। ऐसे क्या बदलाव शीला में आये कि एक मां यह सब बुदबुदाने को मजबूर हो गई और कौन है यह शीला बिष्ट ?

एक साल पहले तक शीला जिला अल्मोड़ा के मनीला गांव की सीधी साधी, सकुचाई, डरी सहमी, एकदम चुपचाप रहने वाली एक आम पहाड़ी लड़की थी। वह गांव में सहेलियों के साथ स्कूल जाती, खेती बाड़ी में मां का हाथ बंटाती, जंगल से घास लकड़ी लाती, जानवरों की देख रेख करती और परिवार के काम काज निपटाया करती थी। शीला के पिता देवेन्द्र बिष्ट खेती बाड़ी से गुजारा ना हो पाने के कारण आजीविका की तलाश में किसी प्राईवेट नौकरी में बद्दी, हिमांचल प्रदेश चले गये। खेती बाड़ी से मुश्किल से तीन चार महीने का राशन निकलता। अपनी जरूरतों के लिए परिवार को 10 किमी. दूर स्थित कस्बे से जरूरत की चीजें लानी पड़ती हैं। घर में मां, बूढ़ी दादी और एक छोटा भाई है। शीला की उम्र 19 साल की है। उसके गांव से अस्पताल 20 किमी. की दूरी पर है। गांव में जब भी कोई बीमार होता तो उसके कष्ट देखकर शीला सोचती कि काश वह उनकी कुछ मदद कर पाती पर कहती किससे और करती कैसे ? शीला ने ऐसी कठिन हालतों में अपने गांव से 5 किमी. दूर इंटर कालेज से इंटर पास किया। उसका भाई 10वीं कक्षा में पढ़ रहा है। शीला का छोटा सा पक्का घर है। यह इस अति साधारण परिवार की कहानी है।

शीला कभी गांव से बाहर नहीं गई थी। मार्च 2014 में उसकी सहेली हेमा ने बताया कि कोई G&G संस्था 12 वीं पास लड़कियों को देहरादून में नर्सिंग की ट्रेनिंग फ्री में कराएगी। उसके बाद नौकरी भी मिलेगी। शीला ने सोचा कि यह तो बड़ा अच्छा मौका है पर वह वहां कैसे जायेगी ? क्या उसके मां बाप उसे इतनी दूर देहरादून अकेले भेजेंगे भी या नहीं ? फिर यह कौन लोग हैं जो फ्री में प्रशिक्षण करवा रहे हैं और क्यों करवा रहे हैं ?उसके मन में सिर्फ सवाल ही सवाल चल रहे थे और उनका जवाब देने वाला कोई नहीं था। शीला बताती है कि बस ऐसे समय में एक बात मेरे मन में आई कि मैं अपने परिवार की स्थिति सुधारना चाहती हूं तो उसके लिए मुझे कुछ तो सीखना ही होगा। मैंने मां बाप को मनाया और इसके लिए फार्म भर दिया। शीला का चयन भी हो गया। उसके बावजूद सबने फिर मना किया कि रहने दे। इतनी दूर अकेले कैसे जाऐगी ? किसी का क्या भरोसा ? पर धुन की पक्की शीला गांव की और लड़कियों के साथ अप्रैल में डरते डरते देहरादून आ ही गई।

शीला बताती है कि यहां पहले तो बहुत बुरा लगा। डर भी बहुत लगता था पर धीरे धीरे जब विश्वास होने लगा कि यह ठीक ठाक लोग हैं तो फिर मैं शांत हो गई। यहां आकर मैंने दुनिया का दूसरा ही रूप देखा। बाहर आकर पता चलता है कि हम किस दुनिया में रह रहे हैं। थोड़ा बहुत रहने का सलीका भी सीखा और ब्लॅड प्रैशर, बुखार नापना, शरीर के बारे में जानकारी, इंजैक्शन भरना जैसे बहुत सी बातें समझी पर डर के मारे अपने पर विश्वास ही नहीं होता था। हमारा एक माह का प्रशिक्षण पूरा हुआ और हमें चंडीगढ़ के बालाजी मेडीकेयर सेंटर में नौकरी मिली। नौकरी की खबर जितनी सुख देने वाली थी उससे कहीं ज्यादा इस बात का डर था कि हमने कभी चंडीगढ़ देखा ही नहीं था। वहां ना कोई जान ना पहचान थी। हमें तो यह भी पता नहीं कि बस में कैसे बैठते हैं ? फिर हम किसके भरोसे वहां जाएंगे और क्या घर वाले हमें भेज ही देंगे। हमको बताया था कि

हमें 6500 रू. तनख्वाह मिलेगी। यह सुनकर खुशी तो हुई क्योंकि कभी एक पैसा तो कमाया नहीं था पर वहां जाएंगे कैसे और रहेंगे कैसे? हम 40 बच्चों ने प्रशिक्षण लिया था और सबको नौकरी मिली पर सिर्फ 4 बच्चे ही चंडीगढ़ जाने को तैयार हुए। सबने यही कहा कि हम उत्तराखंड में ही काम करना चाहते हैं क्योंकि हमारे माता पिता हमें दूर नहीं भेजेंगे।

शीला बताती है कि मैं, भावना, कविता और हेमा एक साथ डरते डरते जून 2014 में चंडीगढ़ आये। हमें बस स्टैंड में पायल मैडम लेने आई थी। उन्होंने ही हमें रोज अंग्रेजी बोलना, लोगों से बात करना, कपड़े सलीके से पहनना, बिना हिचके अपनी बात रखना और इधर-उधर आना जाना सिखाया। वह हमें मिलने हमारे हॉस्टल में आती थी। हमेशा हमसे फोन पर बात करती रहीं। उनके भरोसे ही हम एक अनजान जगह पर नौकरी कर रहे थे। पहले हम डाक्टर जी से बात करने में भी घबराते थे कि कहीं गलत ना बोल जाएं पर अब तो सब बदल गया है। हमारे अंदर अब एक अजीब सी ताकत आ गई है। हम कहां तो हिन्दी नहीं समझते थे पर अब तो डाक्टर जी की अंग्रेजी और लोगों की पंजाबी भाषा भी समझते हैं। अब हम तीनों सहेलियां किसी भी विषय पर आत्मविश्वास के साथ बात कर लेती हैं। शीला शर्माते हुए कहती है कि गांव की सीधी साधी शीला अब स्मार्ट हो गई है। मेरी मां और गांव वाले ऐसा ही कहते हैं। सब कहते हैं शीला तू बहुत बदल गई है। समझदार हो गई है। मुझे भी लगता है कि मैं बहुत बदल गई हूं। मुझे जब पहली तनख्वाह मिली तो मैं पहले मंदिर गई। मुझे मकान, गैस, बिजली और पानी का 2500 रू. काटकर हाथ में 4000 रू. मिले थे। अपनी मेहनत की कमाई का कितना बड़ा सुख होता है यह मैं कैसे किसी को बता सकती हूं। मेहनत की कमाई से जो विश्वास और आत्मसम्मान आता है उसकी तो कोई कीमत ही नहीं होती है। मैं तो एक साल में खुशी से मोटी हो गई हूं। मैं थोड़ी बहुत बचत कर लेती हूं।

मैं पहली बार पूछते पाछते गांव गई। सारे परिवार के लिए कपड़े खरीदे। मिठाई भी ले गई थी। बहुत लोग तो नहीं मिले क्योंकि हमारा घर थोड़ा गांव से दूर है। हमारे गांव से ज्यादातर लोग काम की तलाश में बाहर चले गये हैं। एक और बड़ी दिक्कत है कि गांव में स्कूल और अस्पताल नहीं है जिस वजह से लोग गांव में नहीं टिक रहे हैं। यह बहुत बड़ी समस्या है। यदि गांवों में यह सुविधाएं हों और छोटा मोटा रोजगार मिल जाये तो सच में कोई भी अपना गांव कभी नहीं छोड़े। मैं चंडीगढ़ एक अनजान लड़की की तरह गई थी पर अब तो सब जाना पहचाना है। मैं पंचकुला और चंडीगढ़ को तो सारा पहचान गई हूं। वहां सिटी बस का पूरा ज्ञान हो गया है। सब सैक्टरों में अकेले आ जा सकती हूं।

अस्पताल में भी मेरे काम व व्यवहार में बहुत अंतर आया है। पहले डाक्टर जी किसी भी काम के लिए मेरे साथ किसी और को मदद हेतु भेजते पर अब तो सब काम अकेले ही कर लेती हूं। पहले मैं उनकी बात भी नहीं समझती थी पर अब तो सर के इशारे से समझ लेती हूं कि वह क्या बोलना चाहते हैं और क्या मांग रहे हैं?अस्पताल में मैंने बहुत काम सीख लिया है। सामान्य जच्चा बच्चा व

अबॉर्शन प्रक्रिया, टी.एन.सी., सर्जरी के वक्त कैसे कैसे मदद डाक्टर की करनी होती है, मरीजों की देखभाल बहुत कुछ सीखा है। मैं अब ओ.पी.डी. का काम सीख गई हूं। मैं छोटी सर्जरी की पूरी प्रक्रियाएं भी जान चुकी हूं। अब बिलकुल डर नहीं लगता है। मैं अपने काम को इन्जाय कर रही हूं। मैं अगर अपने गांव में होती तो वहीं घास काटती होती और मेरी शादी हो गई होती। पहले घर वाले शादी के लिए जोर करते थे पर अब कोई कुछ नहीं कहता।

शीला बताती है कि यह एक साल मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा। मेरा प्रशिक्षण में आना ही मेरे जिंदगी का टर्निंग प्वांइट है क्योंकि इसी के कारण मुझे नौकरी मिली और मैं आत्मविश्वास से भर गई हूं। मैं अपने पांवों पर भी खड़ी हूं। मैंने ज्यादातर चीजें प्रशिक्षण के बाद काम करते हुए ही सीखीं। शीला की प्रशिक्षक पायल बताती है कि इन लड़कियों को देखकर खुशी होती है कि चलो मुझसे कुछ तो अच्छा काम जिंदगी में हुआ। ये तीन लड़कियां एक ही अस्पताल में काम करती हैं। सच बताऊं तो इनकी एक तरह से गाड़ी के इंजन की तरह ओवर हॉलिंग हुई है । जो पहले आंख उठाकर बात नहीं करती थी और इनकी बात ही समझ नहीं आती थी कि ये क्या बोल रही हैं। वह आज बालाजी मेडीकेयर सेंटर की जरूरत बन गई हैं।

शीला ने अपना भविष्य का रास्ता भी तय कर लिया है। वह ए.एन.एम. कोर्स करना चाहती है। वह कहती है कि UGVS ने हमको एक सुंदर मौका दिया है। क्या हमारे गांव की और लडकियों को भी आगे बढ़ने का मौका मिलेगा ? मैं एक बात कहना चाहती हूं कि लड़कियों की छोटी उम्र में शादी नहीं करनी चाहिए। वह पूरी गंभीरता से कहती है कि क्या कोई ऐसा तरीका नहीं निकल सकता कि सब लड़कियों को आगे बढ़ने का मौका मिले ? यह नौकरी पाकर मेरे परिवार में अतिरिक्त पैसा आया जिससे परिवार को सहारा मिला। मैं आत्मनिर्भर बन चुकी हूं और जरूरत पड़ने पर घर की मदद कर सकती हूं। नौकरी से समाज में मेरी व मेरे परिवार की इज्जत बढ़ी है। परिवार में मेरे को निर्णय लेते समय पूछा जाने लगा है यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। मैं अपने दम पर एक अनजान शहर में रह रही हूं यह मेरे जीवन में बड़ा बदलाव है। मैंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था। मैं अपने भाई को पढ़ाना चाहती हूं और जनरल नर्सिंग और मिड वाईफ में आगे पढ़ाई कर सरकारी नौकरी करना चाहती हूं। हां मैं अंग्रेजी बोलने का कोर्स भी करना चाहती हूं। यह मेरा छोटा सा सपना है जो एक दिन जरूर पूरा होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं प्रबन्धन सीखूंगा!

सुंदर सिंह मनराल 09410918925
(रिटेल सेल्स ट्रेड में प्रशिक्षित)

अल्मोड़ा जिले के स्यालदेह गांव का सुन्दर सिंह मनराल 24 साल का नौजवान है। सुंदर के पिता श्री किशन सिंह एक साधारण किसान थे। परिवार के पास बहुत ज्यादा खेती बाड़ी नहीं है पर सुंदर के माता पिता खेती बाड़ी व मेहनत मजदूरी करके किसी तरह परिवार का पालन पोषण कर रहे थे। अचानक पिता की सन् 2010 में मौत हो गई। पिता की मौत ने सुंदर के परिवार को हिला दिया। पिता के जाने के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो गई। घर में कोई कमाने वाला व्यक्ति ना रहने के कारण सुंदर की जिंदगी बहुत कठिन हो गयी थी। सुंदर के परिवार में उसकी मां और एक छोटा भाई है। पिता की मौत के बाद विधवा मां ने किसी तरह मेहनत मजदूरी और खेती बाड़ी करके दोनों बच्चों को पाला और पढ़ाया। मां ने ही सुंदर को किसी तरह इंटर करवाया।

पिता की मौत के बाद अस्त व्यस्त परिवार में सुंदर एक अभिभावक की तरह हो गया। वह अपनी विधवा मां का सहारा था, अपने छोटे भाई के लिए बड़ा भाई था और अपने स्वयं के भविष्य हेतु सहारे के लिए भटकता एक बेसहारा नवयुवक, जिसे पता ही नहीं था कि आगे क्या करना है? सुंदर बताता है कि परिवार की परेशानियों और पिता की मौत के कारण सारा परिवार बिखर सा गया था। मैं भी अपनी पढ़ाई में बहुत ज्यादा मेहनत नहीं कर पाया। इसी वजह से मेरे बहुत अच्छे नंबर नहीं आ सके। आम पहाड़ी लड़कों की तरह सुंदर की किशोरावस्था उसके गांव में गुजरी। सुंदर ने अपनी 12वीं कक्षा का इम्तहान राजकीय इंटर कालेज स्यालदे से पास किया। जब तक वह अपनी पढ़ाई लिखाई कर रहा था तब तक वह कभी अपने गांव से बाहर नहीं गया था।

इंटर करने के बाद उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे और कैसे अपना आगे का रास्ता निकाले? सुंदर अपने पांवों पर खड़ा होकर अपने परिवार की मदद करने के लिए कुछ काम करना चाहता था? पर सुंदर को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? सुंदर से यह पूछने पर कि फिर वह कैसे गांव से हरिद्वार पहुंच गया? सुंदर बताता है कि उन्हीं दिनों सुंदर को अचानक गांव में अपने

दोस्तों से ILSP के द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु चलाये जाने वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण के बारे में पता चला। यह प्रशिक्षण दिव्य प्रेम सेवा मिशन हरिद्वार द्वारा करवाया जा रहा है। सुंदर को उसके दोस्त ने यह भी बताया कि युवाओं के लिए यह प्रशिक्षण पूरी तरह निशुल्क है और रिटेल व्यवसायिक प्रशिक्षण का कोर्स पूरा करने के बाद प्रशिक्षित युवाओं को नौकरी दिलाने का भरोसा भी दिलाया गया है। वह इस प्रशिक्षण के बारे में पूरी जानकारी लेने ब्लॉक में गया और संतुष्ट होने के बाद उसने फार्म भर दिया। जुलाई 2014 में प्रशिक्षण के लिए सुंदर का साक्षात्कार हुआ और वह पास भी हो गया। प्रशिक्षण के दिनों में सुंदर चुप चुप रहता था। उसे गांव के खुले माहौल से एकदम यहां के बदले बदले माहौल में बहुत अजीब सा लग रहा था। धीरे धीरे सुंदर की अपने साथ प्रशिक्षण लेने वाले अन्य लड़कों से दोस्ती हो गई। अब उसका भय, संकोच और शर्म सब खत्म हो गया था। प्रशिक्षण के दौरान अपने पाठ्यक्रम से सीखी जानकारियों ने उसके आत्मविश्वास को बढ़ा दिया था। पहले चुप चुप रहने वाले सुंदर को अब उसके साथी एक चौकन्ने युवक के तौर पर देखने लगे। उसकी छवि एक सुलझे और समझदार लड़के की बन गई थी। सुंदर के व्यवहार और कार्यशैली में भी प्रशिक्षण के बाद काफी अंतर आया।

सुंदर का प्रशिक्षण अक्टूबर 2014 में पूरा हुआ। सुंदर ने मैकडोनाल्ड कंपनी हरिद्वार में साक्षात्कार दिया और वह सफल हुआ। सुंदर के प्रशिक्षक समूह के अनुसार वह जनवरी 2015 से मैकडोनाल्ड हरिद्वार में काम कर रहा है। आज सुंदर प्रतिमाह 4500 रू. कमा रहा है। उसके प्रशिक्षकों के अनुसार उसने अपने मेहनत एवं जिम्मेदारी पूर्वक काम करने की वजह से प्रतिष्ठान में अपनी जगह बना ली है। वह अपने मृदु व्यवहार एवं सक्रियता से काम करने की आदत के कारण अपने साथियों के बीच चर्चित है। वह अपने दोस्तों में काम के प्रति उत्साह भरने के लिए मशहूर है।

सुंदर से बात करते हुए नहीं लगता है कि इसने जीवन में इतनी कठिनाईयों का सामना किया है। उसकी बोलचाल में आत्मविश्वास झलकता है। वह बहुत ही संजीदगी व स्पष्टता से बात करना पंसद करता है। उसे देखकर कहा नहीं जा सकता कि यह लड़का गांव से पहली बार बाहर निकला है। सुंदर अपने वर्तमान काम से बहुत खुश नहीं है पर इस बात से संतुष्ट है कि उसे एक बार गांव से बाहर निकलने का मौका मिला। दुनिया को देखने व जानने पहचानने का मौका मिला। सुंदर बताता है कि शुरू शुरू में काम करना बहुत कठिन था क्योंकि यह मेरे लिए एक नया परिवेश था। मैंने चुपचाप कुछ दिन सबको काम करते देखा और धीरे धीरे काम पकड़ लिया। कुछ महीनों में ही मैं यह तो समझ गया हूं कि किसी भी यूनिट को चलाने के लिए प्रबन्धन की कला कितनी महत्वपूर्ण होती है। मैंने यहां काम करके यही तय किया है कि मैं अपनी पढ़ाई किसी तरह पूरा करूंगा और भविष्य में एक अच्छा प्रबन्धक बनने की कोशिश करूंगा!

– केस स्टडी दिव्य सेवा मिशन द्वारा संकलित

मेरे हिस्से की खुशी!

तुलसी टम्टा
(रिटेल सेल्स ट्रेड में प्रशिक्षित)

जिला अल्मोड़ा के गांव खुदीधार, ब्लॉक सल्ट में सुरेश चंद्र टम्टा का परिवार बहुत साधारण परिवारों में है। तुलसी का गांव अल्मोड़ा से मनीला क्षेत्र में आता है। उसके पिता साधारण किसान हैं। पिता की औसतन प्रतिमाह आमदनी मुश्किल से 2500 रू. प्रतिमाह तक होती है। जिसमें परिवार का गुजारा बहुत मुश्किल से होता है। परिवार खेती बाड़ी करके अपनी गुजर बसर करता है। यह परिवार गरीबी रेखा से नीचे निवास करता है। परिवार के पास इतनी खेती नहीं है कि उससे उसका गुजारा ठीक से चल सके इसलिए परिवार के लोग जब भी कहीं मजदूरी मिलती है तो वहां से मेहनत मजदूरी करके आजीविका कमाते हैं। तुलसी की मां घर के कामों में परिवार का हाथ बटाती है। पहाड़ की खेती वैसे भी बहुत ज्यादा उत्पादक नहीं है इसलिए आजीविका के लिए संघर्ष करना ज्यादातर परिवारों के लिए आम बात है। तुलसी का परिवार भी उसी श्रेणी में आता है। परिवार किसी तरह अपना गुजारा करता है।

इन्हीं कारणों से तुलसी का बचपन बहुत ही आर्थिक कठिनाईयों में बीता। परिवार के इन कठिन हालतों में तुलसी की आंखें अपनी गरीबी के कारण कभी कोई सपना नहीं देख सकीं। वह जब भी अपने परिवार की हालत और अपनी गरीबी के बारे में सोचती तो एक सूनापन उसकी आंखों में छा जाता। कई बार ऐसा होता कि पैसों के अभाव में परिवार को कई दिनों तक पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता। तुलसी का भाई कभी-कभार मजदूरी कर परिवार की मदद करने कोशिश करता है पर यह मजदूरी भी नियमित नहीं मिल पाती है। तुलसी के परिवार की गाड़ी इसी तरह से चल रही थी और परिवार को भी किसी तरह से अपना गुजारा करना ही था। इसी कशोमकश में तुलसी ने इंटरमीडिएट पास कर लिया पर 12वीं करने के बाद उसे अपने भविष्य का कोई रास्ता नहीं दीख रहा था।

तुलसी को एक दिन अचानक पता चला कि गांव के टाऊन स्कूल में कोई प्रशिक्षण चल रहा है। तुलसी ने उत्सुकतावश जानने की कोशिश की कि यहां क्या हो रहा है और किस मकसद से यह

सेंटर चल रहा है? तुलसी को पूछने पर सेंटर द्वारा जानकारी दी गई कि यहां पर मनीला क्षेत्र के 12वीं पास बच्चों के लिए रिटेल मैंनेजमेंट पर एक माह का एक प्रशिक्षण चल रहा है। इस प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षित युवाओं को प्रशिक्षण संस्थान आजीविका कार्यक्रम व दिव्य सेवा संस्थान हरिद्वार द्वारा नौकरी भी दिलवाई जाऐगी। यह प्रशिक्षण पूरी तरह निशुल्क है। यह जानकर तुलसी को आश्चर्य हुआ कि क्या ऐसी भी कोई संस्था है जो हमें ट्रेनिंग करवाकर नौकरी दिलवाएगी।

तुलसी ने परिवार की सहमति से एक माह का प्रशिक्षण लिया और नौकरी की उम्मीद में साक्षात्कार दिया। अंत 23 साल की तुलसी को हरिद्वार में एक बी.पी.ओ. में टेलीकॉलर की नौकरी मिल गई। उसकी तनख्वाह रू. 6000 नियत हुई। तुलसी के प्रशिक्षकों के अनुसार नौकरी करने के बाद उसे अपने परिवार की मदद करके बहुत खुशी हुई। तुलसी मन से आजीविका कार्यक्रम के प्रति यह प्रशिक्षण व नौकरी दिलाने के लिए बहुत आभारी है। तुलसी बताती है कि वास्तव में बेरोजगारी किसी भी मनुष्य के आत्मसम्मान व आत्म विश्वास को चकनाचूर कर देती है लेकिन आजीविका कार्यक्रम ने मेरे जीवन की डूबती नैया को बचाने में एक पतवार की तरह भूमिका अदाकर मेरे और मेरे परिवार के जीवन में खुशियों के रंग भरे हैं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि कभी ऐसा होगा। इस प्रशिक्षण ने मेरी उस प्रतिभा का भी उपयोग किया है जो आज तक मेरी परिस्थितियों के कारण सामने नहीं आ सकी थी। उसके पिता और उसका परिवार टाउन स्कूल का बहुत आभारी है जिनके कारण उनकी बेटी को इस प्रशिक्षण के बारे में पता चला। तुलसी के पिता कहते हैं कि उन्हें लगता है कि ईश्वर की मेहरबानी से अब उनके बुरे दिनों के खत्म होने की शुरूआत है क्योंकि यह प्रशिक्षण मेरी बेटी की जिंदगी में एक देवदूत की तरह खुशियां लेकर आया है।

– केस स्टडी दिव्य सेवा मिशन द्वारा संकलित

बबली की कहानी उसी की जुबानी

बबली रावत
(डाटा इंट्री आपरेटर ट्रेड में प्रशिक्षित)

मेरा नाम बबली रावत है। मेरी उम्र 20 साल की है। मैं उत्तराखंड के दूरस्थ जिले टिहरी के चम्बा ब्लॉक के दिखोलगांव की रहने वाली हूं। ऋषिकेश से चम्बा लगभग 70 किमी. की दूरी पर है। चम्बा एक छोटा सा कस्बा है और चम्बा पहुंचने से पहले ही बांये हाथ पर नीचे पहाडियों की तरफ उतरते हुए मेरा छोटा सा गांव है। यह गांव चम्बा के नजदीक होने के कारण गांव के लोग अपनी रोजमर्रा की सभी जरूरतों, स्कूल और अस्पताल आदि हेतु चम्बा पर ही निर्भर करते हैं। हमारे गांव में खेती बाड़ी बहुत ज्यादा नहीं है। मेरे पिता हिकमत सिंह एक किसान हैं और अपनी आजीविका हेतु मेहनत मजदूरी भी करते हैं। हमारा परिवार आर्थिक रोजगार का कोई स्थायी साधन ना होने के कारण आर्थिक दिक्कतों से जूझता रहा है। मैंने स्थानीय कालेज से किसी तरह इंटर की परीक्षा पास की लेकिन परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण आगे नहीं पढ़ पाई। बबली बताती है कि उसने बचपन से ही कठिनाईयों का सामना किया पर रास्ते की कठिनाईयां भी उसे भविष्य के प्रति सुंदर सपने देखने से नहीं रोक सकीं। बबली का सुंदर सपना था कि वह पढ़ लिख कर अपने पांवों पर खड़ी हो सके और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने में परिवार की मदद कर सके। वह 12वीं करने के बाद कहीं नौकरी करना चाहती थी पर उसे ना तो यह जानकारी थी कि वह नौकरी पाने के लिए क्या करे और ना ही घर में कोई यह बताने वाला था कि उसे नौकरी पाने के लिए क्या करना चाहिए और कहां जाना चाहिए?

बबली इसी उधेड़बुन में परेशान रहती थी कि उसे अचानक किसी सहेली के द्वारा उत्तराखंड ग्राम्य विकास समिति के तत्वाधान में चलने वाले एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के बारे में पता चला। उसे यह भी पता चला कि एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना 12वीं पास युवाओं के कौशल वृद्धि हेतु आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड कम्पनी के माध्यम से कोई कम्प्यूटर कोर्स करवाने वाली है। सबसे बड़ी बात यह थी कि यह प्रशिक्षण निशुल्क होने वाले थे। प्रशिक्षण के लिए कहीं दूर भी नहीं जाना था क्योंकि यह चम्बा में ही होने हैं। यह जानकर तो बबली को मानो मन

की मुराद मिल गई थी। बबली ने एकीकृत आजीविका के स्थानीय कार्यालय में जाकर सभी जानकारियों लीं। उसका चयन प्रशिक्षण हेतु हुआ। बबली ने अपने घर में माता पिता की सहमति से आई.ए.सी.एम. लर्निंग सेंटर चम्बा में जाकर आई.टी.डाटा इंट्री आपरेटर कोर्स में दाखिला लिया।

अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद बबली को आई.एस.ओ.एन.–बी.पी.ओ. प्राईवेट लिमिटेड में कस्टमर केयर एक्जक्यूटिव के तौर पर काम करने का मौका मिला। बबली को अपनी पहली तनख्वाह के तौर पर रू. 7000 मिले। धीरे धीरे काम सीखने पर बबली प्रतिमाह रू. 12000 कमाने लगी। अपने पांवों पर खड़े होकर बबली बहुत खुश है। वह अब अपने परिवार की मदद करने की स्थिति में आ गई है। बबली की जिंदगी में यह नौकरी और कम्प्यूटर की तकनीकी शिक्षा पाकर उम्मीद की एक नई रोशनी आई है। वह अपने पहले कदम पर ही नहीं रूकना चाहती बल्कि बहुत आगे बढ़ना चाहती है। बबली अपने जीवन में आए इस बदलाव व आत्मविश्वास के लिए अपने प्रशिक्षण संस्थान आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड और आजीविका कार्यक्रम के प्रति उसको रास्ता दिखाने व सहयोग करने हेतु मन से आभारी है। वह चाहती है कि उसकी ही तरह के अन्य युवाओं को भी तकनीकी शिक्षा मिले जिससे वह भी अपने पांवों पर खड़े हो सकें।

– केस स्टडी आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड द्वारा संकलित

मेरा पहला कदम!

सुधीर बिष्ट 09716799152
(ई.आर.पी. साल्यूशन ट्रेड में प्रशिक्षित)

मेरा नाम सुधीर बिष्ट है। मेरी आयु 24 साल है। हम उत्तरकाशी जिले के ग्राम बासुग, ब्लॉक भटवाड़ी के रहने वाले हैं। मेरी मां मंजू देवी और पिता दिनेश बिष्ट गांव में खेती बाड़ी का काम करते हैं। हमारी खेती बाड़ी आज के समय में बहुत उत्पादक नहीं रह गई है। हमारे परिवार की औसतन आय साल में 12 से 15 हजार के बीच है। हमार परिवार बहुत ही साधारण परिवार है जिसके पास अपनी आजीविका का कोई नियमित स्त्रोत नहीं है। हमारा परिवार किसी तरह से सरकार से मिलने वाली पेंशन पर ही अपना गुजारा करने को मजबूर है। मैंने जबसे होश संभाला हमेशा परिवार को आर्थिक तंगी के बीच ही जूझता देखा है। सुधीर बताता है कि मैंने उसी आर्थिक डांवाडोल स्थिति के बीच किसी तरह से इंटर की परीक्षा पास की। सुधीर इंटर पास करने के बाद आगे पढ़ना चाहता था पर परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते उसकी यह ख्वाहिश पूरी नहीं हो सकी।

सुधीर के मन में एक बात हमेशा आती थी कि वह किसी तरह से कहीं रोजगार पा सके जिससे वह अपने परिवार को भी खुश रख सके और परिवार की रोजमर्रा की जरूरतों का बोझ उठा सके। उसने कई जगह काम पाने की कोशिश की पर वह जानकारियों के अभाव, कौशल और उचित मार्गदर्शन ना मिलने के कारण रोजगार ना पा सका। वह काम के लिए इधर से उधर भटकता रहा पर कोई हल नहीं निकला। सुधीर को अपने किसी मित्र के माध्यम से अप्रैल 2014 में अचानक एकीकृत आजीविका कार्यक्रम द्वारा चलाए जाने वाले आई.टी. टैली कम्प्यूटर कोर्स के बारे में पता चला। उसे पता चला कि एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना द्वारा यह कोर्स आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड के द्वारा स्थानीय स्तर पर अपने लर्निंग सेंटर उत्तरकाशी में आयोजित करवाये जा रहे हैं। सुधीर को यह जानकर और भी खुशी हुई कि इस कोर्स का सारा खर्च एकीकृत आजीविका कार्यक्रम स्वयं उठा रहा है। सुधीर ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और चुपचाप जाकर आई.टी. टैली कोर्स में दाखिला ले लिया। अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद सुधीर ने ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ

एडवांसड स्टडीज उत्तरकाशी में कम्प्यूटर फैकल्टी के रूप में काम करना शुरू किया। सुधीर ने जून 2014 में वहां काम करना शुरू किया। सुधीर को अपनी पहली तनख्वाह के रूप में 4500 रू. मिले। मानदेय के अलावा उसे कार्यालय से अन्य सुविधाएं भी मिलीं।

अपनी इस छोटी सी शुरूआत से सुधीर बहुत खुश है। वह भले ही कुछ ज्यादा नहीं कर पाया है फिर भी अपने परिवार की थोड़ी बहुत मदद करके उसमें आत्मविश्वास आ गया है। वह सोचता है कि काम की शुरूआत करने के बाद वह अपने व अपने परिवार के जीवन में बदलाव ला सकेगा। अपने पांवों पर खड़े होकर उसमें नई आशा का संचार हुआ है। वह इसी क्षेत्र में और आगे पढ़कर और अनुभव पाकर आगे बढ़ना चाहता है। सुधीर जीवन की दिशा बदलने हेतु एकीकृत आजीविका कार्यक्रम एवं आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड का आभारी है जिसने उसके जीवन में सही समय पर कदम रखकर उसको भविष्य का रास्ता सुझाया और आगे बढ़ने का हौसला दिया।

–केस स्टडी आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड के द्वारा संकलित

व्यवसायिक प्रशिक्षण में संलग्न कौशल प्रदाता एजेंसियां

ILSP के पायलट व्यवसायिक प्रशिक्षण में UGVS ने जनवरी 2014 से 2015 तक SUDA-State Urban Development Authority के अन्तर्गत सूचीबद्ध 16 एजेंसियों में से 5 कौशलप्रदाता प्रशिक्षण एजेंसियों व 28 ट्रेडों में से 8 ट्रेड आतिथ्य सत्कार प्रशिक्षण, कम्प्यूटर आधारित लेखा प्रशिक्षण और ई.आर.पी.साल्यूशन, डाटा इन्ट्री आपरेटर, कम्प्यूटर हार्डवेयर मैकेनिक, हास्पिटल एवं नर्सिंग होम अस्टिटेंट, मोबाइल रिपेयरिंग, सौंदर्य एवं स्वास्थ्य प्रबंधन और रिटेलिंग चिन्हित किये गये। इसके अतिरिक्त ऐसेट् इन्फोटेक लिमिटेड देहरादून को सीधे चयनित कर उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी देहरादून के अन्तर्गत चलने वाले 3 पाठ्यक्रमों डिप्लोमा इन इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी, कार्यालय प्रबन्धन और कम्पयूटर एप्लीकेशन में सार्टिफिकेट कोर्स कराने की जिम्मेदारी दी गई। प्रशिक्षण हेतु 5 जनपदों के 17 ब्लॉकों में 760 युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया। इन 6 एजेंसियों के माध्यम से कुल 692 युवाओं का नामांकन हुआ जिसमें से 688 युवाओं ने अपने कोर्स पूरे किये हैं। व्यवसायिक प्रशिक्षण हेतु चयनित एजेंसियों का विवरण निम्नानुसार है।

1. आई.एल.एफ.एस. इंस्टीटयूट ऑफ स्किलस

ILFS द्वारा आतिथ्य सत्कार ट्रेड में चमोली एवं अल्मोड़ा के थराली, चौखुटिया, स्यालदे, भिकियासैंण, हवालबाग, सल्ट ब्लॉकों के 81 युवाओं को चार बैच में कुल 252 घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। इनमें से 38 पुरूष एवं 43 महिलाएं हैं। इन प्रशिक्षित युवाओं में से सामान्य श्रेणी के 62, अन्य पिछड़ी जाति के 2, अनु.जाति के 17 हैं। इनमें से 57 ए.पी.एल. और 24 बी.पी.एल. श्रेणी के हैं। कुल प्रशिक्षित युवाओं में से 68 को जॉब प्लेसमेंट ऑफर दी गई जिनमें से 56 युवा पीजा हट, कैफे कॉफी डे, गुड कम्पनी कैफे, उडिपी रैस्टोरेंट, बारबीक्यू नेशन, वीमार्ट रूद्रपुर, बैरिस्टा, आइडिया सैल्युलर, होटल सुलभ में काम कर रहे हैं। यह रूद्रपुर, देहरादून, ऋषिकेश, नोएडा, मसूरी, पंजाब, बैंगलोर आदि में कार्यरत हैं। इनका प्रतिमाह वेतन रू. 6000 से 12000 तक है।

ILFS प्रतिनिधि- श्री रमेश पेटवाल
आई.एल.एफ.एस. इंस्टीटयूट ऑफ स्किलस
24 चंद्रलोक कालोनी, राजपुर रोड़ देहरादून
सम्पर्क नम्बर- 09411364416, ईमेल ramesh.petwal@ilfsindia.org

2. आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड

IACM द्वारा ILSP के जनपद टिहरी और उत्तरकाशी के चम्बा, प्रतापनगर, भटवाड़ी और डुंडा ब्लॉकों के कुल 185 युवाओं को कम्प्यूटर आधारित एकांउटिंग, ई आर पी साल्यूशन, डाटा इन्ट्री आपरेटर और कम्प्यूटर हार्डवेयर मैकेनिक कोर्स करवाया गया। इन युवाओं को 7 बैच में 300 घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षित युवाओं में से 48 पुरूष एवं 137 महिलाएं हैं। इन युवाओं में

से 136 सामान्य श्रेणी, 48 अन्य पिछड़ी जाति व 01 अनुसूचित जाति से हैं। इनमें से 83 युवा बी.पी.एल. और 102 ए.पी.एल. श्रेणी के हैं। प्रशिक्षित युवाओं में से 89 को जॉब प्लेसमेंट ऑफर की गई जिनमें से 60 युवा अलग संस्थानों में कार्यरत हैं।

ICAM प्रतिनिधि- श्री संदीप गुप्ता

आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड

75- 76, थर्ड फ्लोर, अमृत नागर, नई दिल्ली

सम्पर्क नम्बर- 09312433552, ईमेल- sandeep@iacm-india.com

3. दिव्य प्रेम सेवा मिशन

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा ILSP के साथ 5 बैच में नामांकित 102 युवाओं में 100 युवाओं को रिटेल मैनेजमैंट ट्रेड में 390 घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। यह युवा जनपद चमोली एवं अल्मोड़ा के थराली, स्यालदेह, चौखुटिया और सल्ट ब्लॉक के हैं। प्रशिक्षित युवाओं में से 78 को प्लेसमेंट ऑफर दी गई जिनमें से 76 युवा विभिन्न संस्थानों में कार्यरत हैं। नामांकित युवाओं में से 36 पुरूष और 66 महिलाएं हैं। इन युवाओं में से 76 सामान्य श्रेणी, 06 अन्य पिछड़ी जाति, 19 अनुसूचित जाति और 01 अनुसूचित जनजाति से संबंध रखते हैं। इनमें से 52 बी.पी.एल. और 50 ए.पी.एल. श्रेणी से आते हैं।

सम्पर्क व्यक्ति- श्री अलंकार शर्मा

दिव्य प्रेमा सेवा मिशन

सेवा कुंज नियर चंडीब्रिज, चंडीघाट हरिद्वार

सम्पर्क नम्बर- 09917166672, ईमेल- alankarsharma78@gmail.com

4. ग्रास एजूकेशनल एवं ट्रेनिंग सर्विस प्राइवेट लिमिटेड

इस संस्थान द्वारा 5 बैच में नामांकित 114 युवाओं में से 112 युवाओं को मोबाईल रिपेयरिंग ट्रेड में 210 घंटों एवं सौंदर्य स्वास्थ्य प्रबन्धन ट्रेड में 150 घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षित सभी 112 युवाओं को जॉब प्लेसमेंट ऑफर दी गई। इनमें से 22 युवाओं ने यह ऑफर स्वीकार की। प्रशिक्षित युवाओं में बागेश्वर और टिहरी जिले के गरूड़, बागेश्वर और चम्बा ब्लॉक के युवा शामिल हैं। कुल 114 प्रशिक्षित युवाओं में से 38 पुरूष और 76 महिलाएं हैं। प्रशिक्षित युवाओं में 81 सामान्य श्रेणी, 11 अन्य पिछड़ी जाति व 22 अनुसूचित जाति के हैं। इन युवाओं में से 43 बी.पी.एल. और 71 ए.पी.एल. श्रेणी में आते हैं।

सर्म्पक व्यक्ति- श्री दीपक मल्होत्रा

ग्रास एजूकेशनल एवं ट्रेनिंग सर्विस प्राइवेट लिमिटेड

सी-56 ए/28, चौथी मंजिल, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सेक्टर 62, नोएडा

सर्म्पक नम्बर -07428744458, ईमेल- dmalhotra@grasacademy.in

5. जी. एंड जी. एजूकेशनल सोसाइटी

जी एंड जी एजूकेशनल सोसाइटी द्वारा ILSP के 85 युवाओं को चार चरणों में कुल 210 घंटों का प्रशिक्षण दिया गया। इनमें से 6 पुरूष एवं 79 महिलाएं हैं। सभी 85 प्रशिणार्थियों को जॉब आफर दी गई जिनमें से सिर्फ 42 ने ही काम करना शुरू किया। यह युवा बालाजी मेडी सेंटर पंचकुला चंडीगढ़, मैक्स हास्पिटल देहरादून, विंडलास फार्मास्यूटिकल लिमिटेड देहरादून में कार्यरत हैं। इनमें से 68 बच्चे सामान्य श्रेणी, 5 अन्य पिछड़ी जाति, 11 अनुसूचित जाति, 01 अनुसूचित जनजाति से हैं। इन युवाओं में से 35 बी.पी.एल. एवं 50 ए.पी.एल. श्रेणी से हैं। यह प्रशिक्षण में अल्मोड़ा जिले के भिकियासैंण, सल्ट, स्यालदे और चौखुटिया ब्लॉक के युवाओं को दिया गया।

सम्पर्क व्यक्ति- श्री अक्षय अग्रवाल
जी.एंड जी. एजूकेशनल सोसाइटी
मेन बाजार रायपुर रानी पंचकुला, हरियाणा
सम्पर्क नम्बर- 09646552288, ई मेल- akshay@gngindia.org

6. एसेट् इन्फोटेक लिमिटेड

इस संस्थान द्वारा ILSP के 5 जिलों टिहरी, बागेश्वर, उत्तरकाशी, चमोली व अल्मोड़ा के 17 ब्लॉकों के 125 युवाओं को 5 बैच में उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी देहरादून के अर्न्तगत चलने वाले 3 पाठ्यक्रमों डिप्लोमा इन इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी और कार्यालय प्रबन्धन व कम्पयूटर एप्लीकेशन में सार्टिफिकेट कोर्स में क्रमश: एक साल एवं छ:-छ: माह का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षित युवाओं में से 78 पुरूष एवं 47 महिलाएं हैं। इन युवाओं में से 81 सामान्य श्रेणी, 16 अन्य पिछड़ी जाति, 25 अनुसूचित जाति व 03 अनुसूचित जनजाति के हैं। इन युवाओं में 62 बी.पी.एल. और 63 ए.पी.एल. श्रेणी से संबंध रखते हैं। प्रशिक्षित युवाओं में से 81 को जॉब प्लेसमेंट ऑफर दी गई जिनमें 56 युवा अलग-अलग संस्थानों में कार्य कर रहे हैं।

सम्पर्क व्यक्ति- श्री पीयूष मित्तल
एसेट्स इन्फोटेक लिमिटेड
एफ.एफ. 93, सुभाष रोड, नियर हैरिटेज स्कूल, देहरादून
सम्पर्क नम्बर- 09412052104, ईमेल piyush@asset.net.in

नोट: ILSP द्वारा जनवरी 2014 से मार्च 2015 तक उक्त एजेंसियों के माध्यम से कराये गये पायलट व्यवसायिक प्रशिक्षणों की प्रक्रिया, उपलब्धियों एवं आंकड़ों को जनपदवार, एजेंसीवार तथा ट्रेडवार अगले पृष्ठों में दर्शाया गया है।

व्यवसायिक प्रशिक्षण के विभिन्न चरण

व्यवसायिक प्रशिक्षण जनवरी 2014 से मार्च 2015 तक

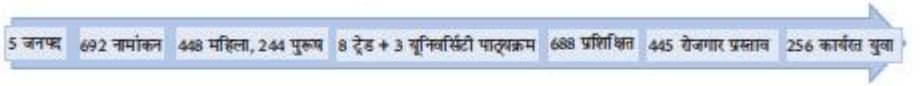

व्यवसायिक प्रशिक्षण 2014–15 एक नजर में

- प्रशिक्षण अवधि 01 जनवरी 2014 से मार्च 2015
- 6 एजेंन्सियों द्वारा 11 ट्रेडों में पायलट व्यवसायिक प्रशिक्षण सम्पादित
- कुल परियोजना लक्ष्य: 760 युवा, कुल नामांकन- 692 युवा (91%), महिला- 448 (65 %)
- जनपदवार नामांकन: अल्मोड़ा-243, बागेश्वर- 96, चमोली- 75, टिहरी- 128, उत्तरकाशी- 150
- कुल रोजगार प्रस्ताव 445 प्रस्ताव, कुल कार्यरत युवा- 256 (68 प्रतिशत महिलाएं)

क्र.सं.	संस्था का नाम	ट्रेडस	कोर्स अवधि घंटे	बैच की संख्या	ट्रेडों की संख्या	प्रशिणार्थी नामांकन	प्रशिणार्थी प्रशिक्षित	जॉब आफर	कार्यरत युवा
1	आई.एल.एफ.एस.इंस्टीट्यूट ऑफ स्किलस	आतिथ्य सत्कार	252	4	1	81	81	81	56
2	जी.एंड जी. एजूकेशनल सोसाइटी	हास्पिटल और नर्सिंग होम असिस्टेन्ट	210	4	1	85	85	85	42
3	आई.ए.सी.एम. स्मार्टलर्न लिमिटेड	कम्प्यूटर आधारित एकाउंटिंग और ई.आर.पी. सोल्यूशन	300	7	3	185	185	89	60
		डाटा इन्ट्री आपरेटर	300						
		कम्प्यूटर हार्डवेयर मैकेनिक	300						
4	दिव्य प्रेम सेवा मिशन	रिटेलिंग	390	5	1	102	100	78	76
5	ग्रास एजूकेशन एवं ट्रेनिंग सर्विस प्राइवेट लिमिटेड	मेकाइल रिपेरिंग	210	5	2	114	112	112	22
		सौन्दर्य स्वास्थ्य प्रबंधन	150						
6	एसेट् इनफोटेक लिमिटेड	डिप्लोमा- इनफोरमेशन टैक्नोलोजी	एक साल	5	3	125	125	-	-
		सर्टिफिकेट कोर्स इनऑफिस मैनेजमैंट	छः माह						
		सर्टिफिकेट कोर्स इन कम्प्यूटर एप्लिकेशन	छः माह						
	कुल			30	11	692	688	445	256

व्यवसायिक प्रशिक्षण 2014-15 एक नजर में

जनपदवार प्रशिक्षण विवरण एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना

क्रं.सं.	जनपद	विकासखण्ड	कुल प्रशिक्षार्थियों की संख्या								
			कुल प्रशिक्षार्थी			सामाजिक वर्गीकरण				आर्थिक वर्गीकरण	
			कुल	पुरूष	महिला	सामान्य	ओ0बी0सी0	अनु0जाति	अनु0जनजाति	ए0पी0एल0	बी0पी0एल0
1	टिहरी	चम्बा	122	34	88	111	4	6	1	46	76
		देवप्रयाग	3	3	–	3	–	–	–	1	2
		जौनपुर	2	2	–	–	2	–	–	–	2
		प्रतापनगर	1	–	1	1	–	–	–	–	1
2	अल्मोड़ा	भिकियासैंण	28	5	23	24	1	2	1	13	15
		सल्ट	63	7	56	59	1	3	–	42	21
		स्यालदे	69	22	47	50	7	11	1	31	38
		चौखुटिया	45	11	34	25	3	17	–	26	19
		ताकुला	13	4	9	12	–	1	–	9	4
		द्वाराहाट	10	7	3	10	–	–	–	6	4
		भैंसियाछना	1	1	–	1	–	–	–	–	1
		लमगड़ा	1	1	–	1	–	–	–	–	1
		हवालबाग	13	3	10	4	–	9	–	10	3
3	बागेश्वर	बागेश्वर	21	14	7	11	1	9	–	9	12
		गरूड़	70	19	51	44	7	19	–	36	34
		कपकोट	5	2	3	5	–	–	–	3	2
4	चमोली	थराली	51	32	19	45	1	5	–	35	16
		घाट	6	1	5	4	–	1	1	3	3
		कर्णप्रयाग	16	15	1	11	1	4	–	7	9
		दशोली	1	1	–	–	1	–	–	–	1
		नारायणबगड़	1	–	1	1	–	–	–	1	–
5	उत्तरकाशी	भटवाड़ी	124	40	84	77	46	1	–	101	23
		डुण्डा	2	–	2	–	2	–	–	1	1
		नौगांव	2	2	–	–	1	1	–	1	1
		पुरोला	19	16	3	4	9	5	1	12	7
		मोरी	3	2	1	1	1	1	–	–	3
कुल	5	26	692	244	448	504	88	95	5	393	299

व्यवसायिक प्रशिक्षण एक नजर में
प्रशिक्षणार्थी नामांकन विवरण

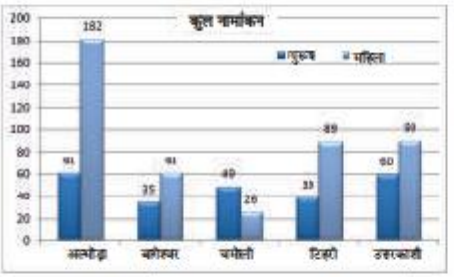

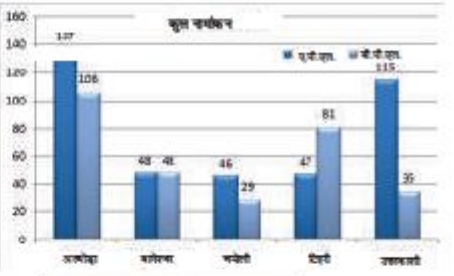

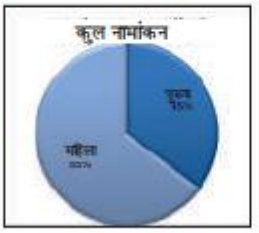

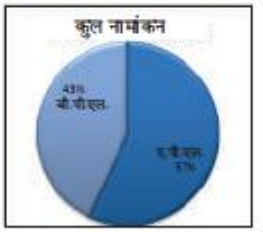

व्यवसायिक प्रशिक्षण एक नजर में
रोजगार प्राप्त प्रशिक्षणार्थी विवरण

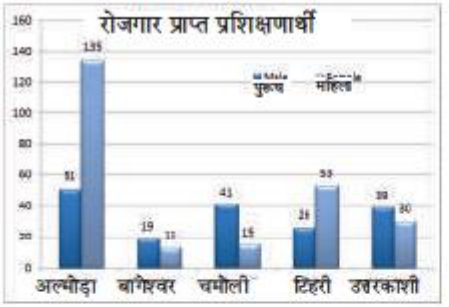

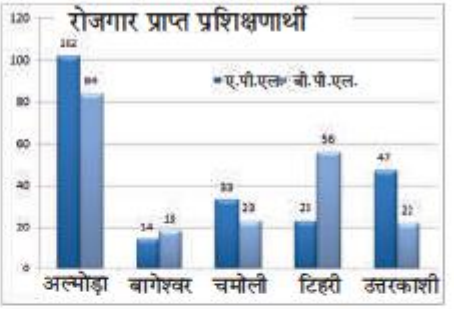

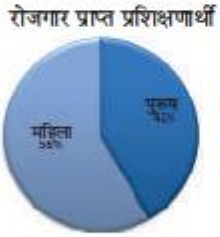

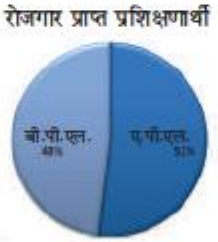

व्यवसायिक प्रशिक्षण एक नजर में
ट्रेडवार रोजगार विवरण

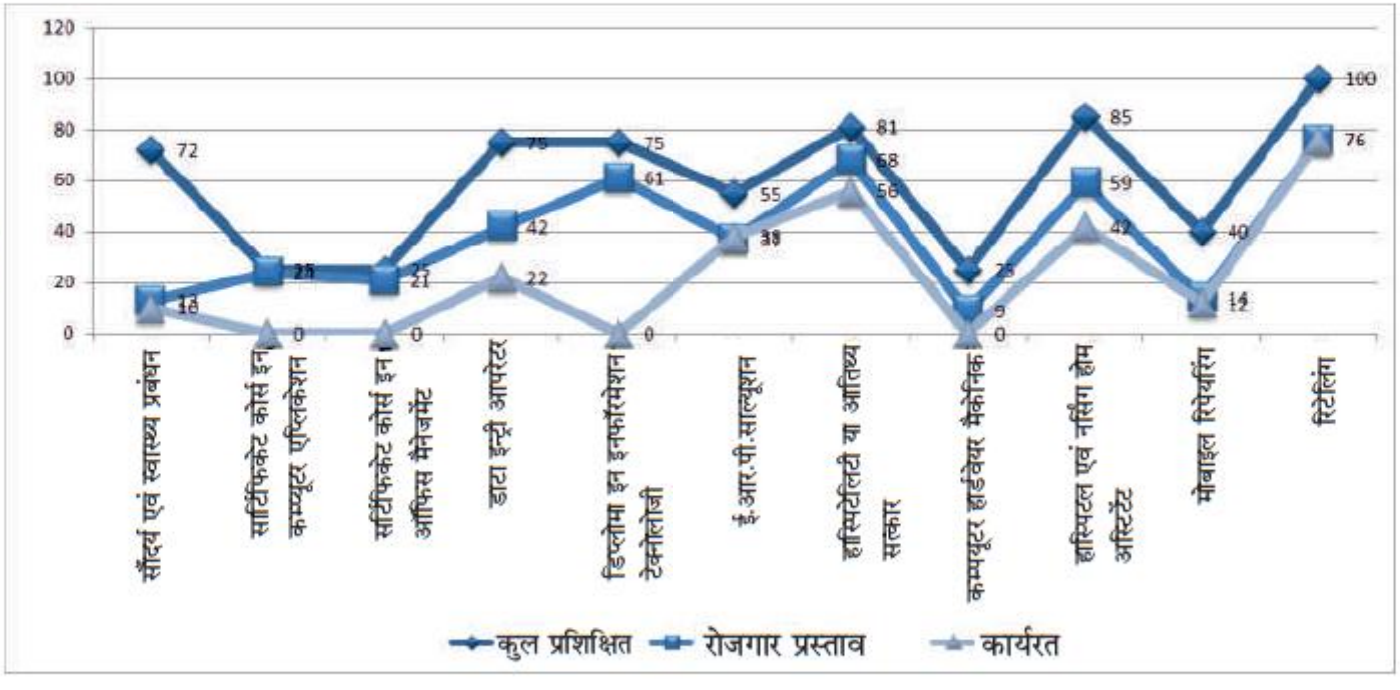

उड़ान

Integrated Livelihood Support Project - ILSP

एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना

(उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास समिति)

216, फेस–II, पंडितवाड़ी, देहरादून, फोन : 0135–2773800

वेबसाइट : www.ugvs.org, www.ilsp.in ई–मेल : info@ugvs.org